॥ श्रीः ॥

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जयकृष्णदास आयुर्वेद ग्रन्थमाला

१८

0
2'13

लोलिम्बराजकृतं

वैद्यजीवनम्

'विद्योतिनी'-हिन्दीटीकासहितम्

व्याख्याकार

डॉ० इन्द्रदेव त्रिपाठी

बी. आई. एम. एस, डी. एस. सी (आ.)

चिकित्साधिकारी, ग्रामीण स्वास्थ्य, उत्तर प्रदेश

चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्राच्यविद्या तथा दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक एवं विक्रेता

वाराणसी दिल्ली

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

॥ श्रीः ॥

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जयकृष्णदास आयुर्वेद ग्रन्थमाला

१८

पाणिनि-कन्या-महाविद्यालय
तिथि
पुस्तक 4719/3
पुस्तकालय

लोलिम्बराजकृतं

वैद्यजीवनम्

'विद्योतिनी'-हिन्दीटीकासहितम्

व्याख्याकार

डॉ० इन्द्रदेव त्रिपाठी

बी. आई. एम. एस, डी. एस. सी (आ.)

चिकित्साधिकारी, ग्रामीण स्वास्थ्य, उत्तर प्रदेश

स्वाध्यायान्मा प्रमदः
CHAUKHAMBHA ORIENTALIA, VARANASI

चौखम्भा ओरियन्टालिया

प्राच्यविद्या तथा दुर्लभ ग्रन्थों के प्रकाशक एवं विक्रेता

वाराणसी दिल्ली

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्रकाशक

चौखम्भा ओरियन्टालिया
पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० ३२
गोकुल भवन, के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी–२२१००१ (भारत)
टेलीफोन : ६३०२२ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव
शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर
दिल्ली–११०००७

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

© चौखम्भा ओरियन्टालिया
प्रथम संस्करण १९७८
मूल्य रु० ३–००

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्भा विश्वभारती
चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)
वाराणसी
फोन : ६५४४४

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

JAIKRISHNADAS AYURVEDA GRANTHAMALA
Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
NO. 18

4117

VAIDYAJĪVANAṀ

BY

LOLIAMBARĀJA

With Vidyotinī-Hindi Commentary

Commentator

Dr. INDRADEVA TRIPATHI
B. I. M. S., D. Sc. (A.)
Health Officer, Rural Health Services, U. P.

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA
A House of Oriental and Antiquarian Books
VARANASI — DELHI
CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Publishers
Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
CHAUKHAMBHA ORIENTALIA
P. O. Chaukhambha, Post Box No. 32
Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane
VARANASI–221001 (India)
Telephone : 63022 Telegram : Gokulotsav
Branch—Bungalow Road, 9 U. B. Jawahar Nagar
DELHI–110007

© *Chaukhambha Orientalia*
First Edition 1978
Price Rs. 3–00

Printers—Vidya Vilas Press, Varanasi.
CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रस्तावना

लोलिम्बराज का समय विवादग्रस्त होने पर भी १५३९ ई० से १६०८ ई० निश्चित किया गया है। इनके पिता का नाम दिवाकर था और उनका जन्म नासिक के समीप जन्नग्राम में हुआ था। ये शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखाध्यायी ब्राह्मण थे और राजा हरिहर के सभापण्डित थे। इनको सप्तशृङ्गीदेवी की कृपा से अपूर्व कवित्वशक्ति प्राप्त हुई थी। इनका व्याकरण, साहित्य, वेदान्त, मन्त्रशास्त्र, सङ्गीतशास्त्र तथा आयुर्वेदशास्त्र के ऊपर पूर्ण अधिकार था। इनको ज्योतिषशास्त्र का भी विशिष्ट ज्ञान था। ज्योतिष-वृत्ति ही उनकी जीविका का सहारा था। इनका विवाह सुलतान की मुरासा नामक कन्या से हुआ था। मुरासा शब्द मेहरूव्निशा का अपभ्रंश ज्ञात होता है। मेहरूव्निशा का अर्थ है स्त्रियों में सूर्य के समान। सम्भवतः वह इतनी सुन्दर थी जिसका नख-शिख वर्णन वैद्यजीवन तथा चमत्कार-चिन्तामणि में मिलता है। विवाह के बाद उन्होंने मुरासा का नाम रत्नकला रख लिया था जैसा कि महाराष्ट्र की परम्परा है। इनकी अनेक रचनाओं में हरिविलास काव्य, वैद्यजीवन, चमत्कार चिन्तामणि, वैद्यावतंस (संस्कृत) तथा वैद्यकशास्त्र और रत्नकलाचरितम् (मराठी में) प्रमुख है एवं उपलब्ध है।

वैद्य लोलिम्बराज आयुर्वेदीय चिकित्सा-ग्रन्थों में अपना विशेष स्थान रखते थे। बृहत्त्रयी (चरक-सुश्रुत, वाग्भट्ट) के अतिरिक्त अनेक चिकित्सा-ग्रन्थ हजारों योगों से भरपूर थे किन्तु लेखक ने उनमें से अधिक उपादेय, सरल, सर्वत्र प्राप्य, सर्वोत्कृष्ट योगों का विवेचन कर लघुकाय, सर्वाङ्ग ललित साहित्य कला कलित वैद्यजीवन नामक ग्रन्थ का निर्माण किया।

---

१. नानागुणैरवनिमण्डलमण्डनस्य श्रीसूर्यसून्नुहरिभूमिभुजा नियोगात्।
काव्यं कृतं हरिविलास इति प्रसिद्धं लोलिम्बराजकविना कविनाम केन॥
(हरिविलासकाव्य)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस ग्रन्थ में साहित्य एवं आयुर्वेद का सर्वोत्कृष्ट संमिश्रण है जो अन्यत्र दुर्लभ है। ग्रन्थकार की यह प्रतिज्ञा थी कि अष्टाङ्गसंग्रह, चक्रदत्त, योगरत्नाकर, शार्ङ्गधरसंहिता, भावप्रकाश आदि के आशुकारी, प्रकृत्या उपलब्ध एवं अनुभुत योगों का ही संकलन किया जायगा। इसमें स्वकपोल कल्पित कुछ भी नहीं होगा।

कविराज लोलिम्बराज के अप्रतिम बुद्धिविलास एवं सर्वतोन्मुखी प्रतिभा का परिचय वैद्यजीवन तथा चमत्कारचिन्तामणि इन दोनों ग्रन्थों में मिलता है। इन दोनों में ही सम्वादात्मकता तथा आदर्शचिकित्सा का दृष्टिकोण समान है। वैद्यजीवन में त्रिविध औषधचिकित्सा (युक्तिव्यपाश्रय, दैवव्यपाश्रय, सत्वावजय) के युक्तिव्यपाश्रयचिकित्सा का विस्तृत वर्णन मिलता है। दैवव्यपाश्रय तथा सत्वावजयचिकित्सा का संकेतमात्र लक्षित होता है। यह ग्रन्थ चिकित्साविषयक होते हुए भी साहित्यिक गुणों से पूर्ण अभिमण्डित है। फलतः शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कार, लक्षणा, व्यञ्जना, गुण, रीति तथा वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों का समावेश किया गया है। यत्र कुत्र कर्तृलुप्त, क्रियालुप्त, अन्तर्लापिका, वहिर्लापिका तथा सम्वादात्मक वाक्यविन्यास का अनुपम सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार वैद्यजीवन लघुकाव्य के अन्तर्गत अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ पांच विलासों (प्रकरणों) में विभक्त है। प्रथम विलास में विस्तारपूर्वक ज्वर चिकित्सा का वर्णन है। द्वितीय विलास में ज्वरातिसार, अतिसार एवं ग्रहणी चिकित्सा का विवेचन है। तृतीय विलास में कास-श्वास, आमवात, नेत्ररोग, कामला, योनिशूल, स्तन्यदुष्टि, प्रदरादिरोग, गर्भिणी एवं सूतिकारोगचिकित्सा और बालकों के अतिसार की चिकित्सा का वर्णन किया गया है। चतुर्थ विलास में क्षयरोग, व्रणरोग,

---

१. औषधं मूढवैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपिडिताः।
परस्त्रीसंसर्गसंसिक्तं कलत्रमिव साधवः॥ (वैद्यजीवनम्)
न ग्राह्यं मूर्खभिषजो भेषजं प्राज्ञरोगिभिः।
गृहीतं यदि कञ्जाक्षि ! जनयेत्तद् गदान्तरम्॥ (चमत्कारचिन्तामणिः)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
मेदोरोग, मुखपाक, अम्लपित्त, प्रमेह, वातरक्त, विसूचिका, निदाघ, पामा, विपादिका, अर्शरोग, गण्डमाला, अग्निमान्द्य, अश्मरी, विद्रधि, हृदरोग, दन्तरोग, रक्तपित्त, हिक्का, भ्रमरोग, शोकजन्यरोग, उरुस्तम्भ मूलकृच्छ्र, व्यङ्ग, युवानपिड़िका, अरूंषिका, शोथ, शिरोरोग, कर्णशूल, वातरोग, पित्तरोग तथा कफरोग की चिकित्सा का वर्णन है।

पांचवें विलास में क्लैव्यचिकित्सा, वाजीकरण, वीर्यवर्द्धकवटी, चूर्ण एवं रसायनों का वर्णन और उदररोग तथा वातरोगनाशक चूर्ण एवं तैल आदि का निरूपण किया गया है।

वैद्यजीवन चिकित्साग्रन्थ होने पर भी इसके लालित्यमय पद्य साहित्य-प्रेमियों के मुख से अनायास ही फूट पड़ते हैं। अनेक पद्यों में तो साहित्यिक वर्णन के भावावेश में चिकित्सा सामग्री की उपलब्धि के लिये शब्दों के तोड़-मोड़ की आवश्यकता पड़ती है। कहीं-कहीं पर एक ही श्लेष से अनेक योगों का दिग्दर्शन होता है। एक एक द्रव्यों से एक एक रोग की चिकित्सा शैली इनकी अनुपम प्रतिभा की देन है।

वैद्यजीवन के प्राचीन संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद का मुद्रण एवं प्रकाशन बहुत दिन पहले हो चुका है जो अब अनुपलब्ध है। उसकी भाषा एवं शैली भी पुरानी है। प्रस्तुत ग्रन्थ की अधिक लोकप्रियता को देखते हुए मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि इसका हिन्दी अनुवाद आधुनिक शैली के आधार पर प्रस्तुत किया जाय जिससे हिन्दी प्रेमियों के लिये सरल एवं सुबोध हो।

---

१. नारायणं भजत रे! जठरेण युक्ता,
नारायणं भजत रे! पवनेन युक्ता।
नारायणं भजत रे! भवभीतियुक्ता,
नारायणात् परतरं नहि किञ्चदस्ति॥ (वै० जी०)

२. धनपर्पटकं ज्वरे, ग्रहण्यां मथितं हेमगरे वमिषु लाजाः।
कुटजोऽतिसृतौ, वृषोऽस्रपित्ते गुदकीलेष्वनलः कृमौ कृमिघ्नः॥
(वै० जी०)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकाशन सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण औदासिन्य भाव के आने पर भी चौखम्भा ओरियन्टालिया के संचालक बन्धुओं का प्रोत्साहन अनुवाद कार्य में उत्प्रेरक सिद्ध हुआ जो पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

इसकी साहित्यमयभाषा की व्यक्तता के साथ चिकित्सा का विशद निरूपण कठिन कार्य था फिर भी भगवान् विश्वनाथ की कृपा से यह कार्य सम्पन्न हो गया। इस कार्य में समय-समय पर मेरे परम मित्र श्री सोमनाथ द्विवेदी एवं श्री भूलन पाण्डेय बी० आई० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य का पथ प्रदर्शन मिलता रहा है अतः उनके लिये साधुवाद का समर्पण स्वभाविक है। इस कार्य के सम्पादन में श्री कपिलदेव गिरिजी प्रधान सम्पादक का महान् योगदान रहा है अतः वे धन्यवादार्ह हैं।

अन्त में पुनः चौखम्भा ओरियन्टालिया के अध्यक्षपरिवार का विशेष रूप से आभार प्रकट करना स्वभाविक है जिन्होंने अनेक कार्यव्यस्तता होने पर भी यथासम्भव शीघ्र से शीघ्र मुद्रित एवं प्रकाशित कर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

पुनः विज्ञ पाठकों से सानुनय निवेदन है कि प्रमादवश या यान्त्रिक त्रुटियाँ जो हो गई हों उनको सूचित करेंगे ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके।

मकरसंक्रान्ति
सं० २०३४

विनीत—
इन्द्रदेव त्रिपाठी

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी..............
पु०सं०..............
भारती पुस्तकालय

विषय-सूची

प्रथमो विलासः

नमस्कारात्मकमंगलाचरण	१
अपनी इष्टदेवी पार्वती के नमस्कारात्मक दूसरा मंगलाचरण	”
ग्रन्थ के नाम का उल्लेख	२
ग्रन्थ की निन्दा करने वालों की उपेक्षा	”
ग्रन्थ के शास्त्र संमत होने का कथन	”
ग्रन्थ के अनधिकारी का वर्णन	३
चिकित्सा के अधिकारियों का वर्णन	”
वैद्यों का कर्तव्य	”
ज्वर रोग में हितकर पथ्य का उपदेश	४
रोगी के लिए पथ्य सेवन की विशेषता	”
ग्रन्थकार का विनय प्रदर्शन	”
ग्रन्थ की उपयोगिता का प्रदर्शन	५
ज्वर दूर करने के लिये ग्रन्थकार की प्रतीज्ञा	”
ज्वर में लङ्घन की प्रधानता तथा सुरपादपादिपाचनक्काथ	”
क्रमशः वात-पित्त-कफ ज्वरों में तीन क्काथ का निर्देश	६
वातज्वर में पीयूषादि क्काथ	७
उशीरादिक्काथ	”
वात-पित्तज्वर में पञ्चभद्रक्काथ	”
पित्तज्वर में रैणवक्काथ	८
चन्दन आदि के साथ पित्तपापड़े का क्काथ	”
मूर्च्छा आदि उपद्रव से युक्त पित्तज्वर में द्राक्षादि तथा दुःस्पर्शादि दो कषाय	”
गुडूच्यादिक्काथ	९
पित्त-कफजन्यज्वर में लोहितचन्दनादिक्काथ	”
दाहयुक्तज्वरादि में जलादि क्काथ	९
दाह में सहस्रधौतघृत का प्रयोग	”
पित्तज्वर में उत्पन्न प्यास, दाह आदि दूर करने के उपाय	१०
सभी प्रकार के दाह नाश करने के उपाय	”
दाह नष्ट करने वाले उपाय	”
प्यास, दाह तथा मूर्च्छा में निम्बपत्र के फेन का लेप	११
दाह में शीतल द्रव्यों के लेप का विधान	”
ताप नाशक अन्य उपाय	”
पैतिक ज्वर में अधरपान का निर्देश	”
आभ्यन्तरिकदाह में धान्यहिम का प्रयोग	१२
वातपित्तजन्य ज्वर में पञ्चमूल्यादि क्काथ	”
श्वास-कास सहित कफज्वर में श्टङ्ग्यादिअवलेह	”
श्वासयुक्तज्वर में भार्ङ्ग्यादिक्काथ	१३
ज्वर रोग में मुख की कडुआहट को दूर करने के उपाय	”
कफ ज्वर में कास-आदि नाशक-कट्फलादि क्काथ	”
भोजन में अरुचिनाश करने के उपाय	१४
सन्निपात ज्वर में ग्रन्थ्यादि क्काथ	”
अर्कादि क्काथ	१५
सभी प्रकार के सन्निपातनाशक तिक्तादि क्काथ	”
सन्निपात रोग पर विजय पानेवाले वैद्य की प्रशंसा	१६
सन्निपातज्वर में कर्णमूलशोथ का प्रतिकार	”

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिरःशूल, पार्श्व शूल आदि की निवृत्ति के उपाय १७
कफजन्य जीर्ण ज्वर में गुडूची का क्वाथ "
कफजन्यजीर्णज्वर में पञ्चमूलीकषाय १८
जीर्णविषमज्वर तथा सन्निपातज्वर शान्त करने के उपाय "
ऐकाहिक ज्वर में जलाञ्जलि का प्रयोग १९
तृतीयकज्वर की चिकित्सा "
चातुर्थिकज्वरचिकित्सा में नस्य का प्रयोग "
चातुर्थिकज्वर में दूसरा नस्य २०
सुरदार्वादिक्काथ "
शीतज्वरनाशक औषध "
शीतज्वर में इन्द्रजवादि क्वाथ २१
विषम ज्वर का औषध "
प्रकारान्तर से पूर्वोक्त औषध का निर्देश २२
विषमज्वर में रसोनकल्क का प्रयोग "
विषम ज्वर नाशक चार योग "
विषम ज्वर में पटोलादि क्वाथ २३
विषम ज्वर में कुलकादि क्वाथ "
विषमज्वर में पिप्पली का प्रयोग "
विषम ज्वर में चौराई की जड़ धारण करना २४
विषमज्वर में मदिरादि क्वाथ "
विषमज्वर में अमृतादि क्वाथ "
ज्वरहरधूप २५
एक दिन में दो बार आने वाले ज्वर का औषध "
विषमज्वर क्षय आदि रोगों में घृत "
कर्मजन्यज्वर के उपाय "
ज्वर पीड़ित एवं ज्वर मुक्त के लिए हितकर उपदेश २६

द्वितीय विलासः

ज्वरातिसार की चिकित्सा में अमृतादि क्वाथ २६
ज्वरातिसार में पञ्चमूल्यादि क्वाथ २७
लघुपञ्चमूल तथा बृहत्पञ्चमूल को दोषानुसार ग्रहण करने का निर्देश "
शोकातिसार की चिकित्सा २८
अतिसार में बालकादि क्वाथ "
धान्यचतुष्कक्काथ २९
इन्द्रजवादि चूर्ण का प्रयोग "
शुण्ठ्यादिचूर्ण का प्रयोग "
श्यामा का प्रयोग "
कुटजादिक्काथ ३०
बृहद् गङ्गाधर चूर्ण "
रक्तातिसार में अनार तथा कुटज के छाल का क्वाथ ३१
घिसे हुए चन्दन का प्रयोग "
गुड़ तथा कच्चे बेल का प्रयोग "
असाध्य-अतिसार के रोगी के लिये कर्तव्य कर्म "

ग्रहणीरोगचिकित्सा—

पुनर्नवादिक्काथ ३२
शुण्ठ्यादि क्वाथ तथा घृत ३३
पाठादिचूर्ण "
चन्द्रकलाचूर्ण "
क्षारछन्दादि चूर्ण ३४
द्विक्षारादिचूर्ण "
चित्रकादिचूर्ण "
रूप्यकादिचूर्ण "
पयोधरादिघृत ३५

तृतीयो विलासः

श्वासकासादीनां चिकित्सा—

श्वास-कास चिकित्सा में पञ्चमूली-क्वाथ ३५

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घनादिगुटिका ३६
विभीतकावलेह ”
आर्द्रकपाक (आर्द्रपाक) ”
चिन्तामणिचूर्ण ३७
वासादिक्काथ ”
लवङ्गादिगुटिका ”
नागरक्काथ ”
भटकटैया का क्काथ ३८
पिप्पल्यादि चूर्ण ”
सरसों के तैल से मिश्रित गुड़ का प्रयोग ”
मुख में विभीतक धारण करने का फल ३९
शुण्ठीभार्ङ्गीक्काथ ”
त्रिकटुचूर्ण का प्रयोग ”
अदरख के रस का प्रयोग ”
अडूसा का क्काथ ४०
फलत्रयादिचूर्ण ”

आमवातचिकित्सा—

आमवात की चिकित्सा में दशमूल का क्काथ या सोंठ का क्काथ ”
एरण्डतैलयुक्तरास्नादिक्काथ ”

नेत्ररोगचिकित्सा—

नेत्र रोग की चिकित्सा में कुलत्था-अञ्जन ४१
सहिजन का अञ्जन ”
अर्जुनरोग को नष्ट करनेवाला अञ्जन ४२
मधु तथा घृत के साथ त्रिफला का प्रयोग ”
रतौंधी को दूर करने का उपाय ”
शुक्ररोग (फूली) को दूर करने का उपाय ४३
कामलारोग दूर करने का उपाय ”
कामलारोग नाशक नस्य ”
कामलानाशक अञ्जन ४४
कामलारोग में सोंठ मिश्रित गोमूत्र का प्रयोग ४४
योनिशूलनाशक उपाय ”
योनिशूलनाशकलेप ”
दूध के विकार को नाश करने का उपाय ”
प्रदररोग दूर करने का उपाय ४५
प्रदर में तण्डलीयादिचूर्ण का प्रयोग ”
स्त्रियों के रजोऽवरोध तथा गर्भपात का उपाय ”
गर्भिणी के सुख प्रसव तथा वमन के उपाय ”
गर्भिणी के सूतिका रोग में धान्यादि क्काथ तथा बालकों के वमन आदि नाशक दो योग ४६
बालकों के अतिसार दूर करने के उपाय ”

चतुर्थो विलासः

क्षयरोगचिकित्सा—

क्षयादिरोगों की चिकित्सा सुनने के लिये रत्नकला का प्रस्ताव ४७
क्षयरोग में अडूसा का प्रयोग ”
क्षयरोग में मधु, मिश्री तथा मक्खन का प्रयोग ”
व्रण रोग का उपाय ”
मेद को कम करने का उपाय ४८
क्रिमिरोग का उपाय ”
मुखपाक को दूर करने का उपाय ”
अम्लपित्त की चिकित्सा ”
प्रमेह की चिकित्सा ४९
सभी प्रकार के प्रमेहों को नाश करनेवाला मधुयुक्त गुडूची-स्वरस का प्रयोग ”
वातरक्त का औषध ”
वात रक्त में पिण्ड तैल तथा एरण्डादि क्काथ ”

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषूचिका की चिकित्सा ५०
विषूचिका में प्यास तथा वमन की चिकित्सा „
उष्णता जन्य स्वेद का उपचार „
खुजली का उपचार ५१
विपादिका (बेवाई) की चिकित्सा „
अर्श आदि रोगों की चिकित्सा „
गण्डमाला की चिकित्सा ५२
कण्ठ रोग की चिकित्सा „
मन्दाग्नि की चिकित्सा „
पथरी आदि रोगों की चिकित्सा ५३
अग्निमान्द्य चिकित्सा में हिंग्वष्टक तथा वृक्षाम्लादिचूर्ण „
लोलिम्बराजनामकचूर्ण ५४
व्रण की चिकित्सा „
हृदयरोग की चिकित्सा ५५
दन्त रोग की चिकित्सा „
रक्तपित्त की चिकित्सा „
रक्तपित्त में अडूसा के क्काथ का प्रयोग ५६
हिक्का की चिकित्सा „
श्रम चिकित्सा „
शोकजन्य उपद्रव का उपाय ५७
उरुस्तम्भ की चिकित्सा „
मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा „
मूत्रकृच्छ्रादिनाशक दो क्काथ ५८
व्यङ्ग रोग की चिकित्सा „
मुखकान्तिप्रद तथा पिटकादि नाशक लेप „
शोथ की चिकित्सा ५९
शिरःशूल तथा कर्णशूल की चिकित्सा „
वातरोगों की चिकित्सा ६०
वात नाश के लिये विलासिनी के साथ आलिङ्गन का उपदेश ६०
पित्त की चिकित्सा „
कफ का औषध ६१

पञ्चमो विलास

वाजीकरण—

वाजीकरण में कामोद्दीपक द्रव्य का निर्देश ६१
वाजीकरण मधु-घृत के साथ मुलेठी का प्रयोग „
अमृतादिचूर्ण ६२
उच्चटादिक्षीरपाक „
शतावरी चूर्ण का प्रयोग „
विदारीस्वरस से भावित उसके चूर्ण का प्रयोग „
विदारीकन्द के चूर्ण का प्रयोग ६३
शक्कर तथा घी के साथ दूध का प्रयोग „
रसप्रयोग का क्रम „
विश्वतापहरणरस ६४
शीतारिनामकरस „
कनक सुन्दर रस ६५
पञ्चामृत पर्पटी रस „
शूल आदि रोगों का औषध ६६
विलासिनी वल्लभ रस „
कुछ रोगों में अनुपान का निरूपण ६७
उदर रोग वातरोग तथा भवभय रूपी रोग की औषध „
ग्रन्थकार का परिचय ७०

परिशिष्ट—१

वैद्यजीवन का योगसंग्रह ७१–९३

परिशिष्ट—२

मान-परिभाषा ९४–१००

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लोलिम्बराजकृतं

वैद्यजीवनम्

'विद्योतिनी'-हिन्दीटीकासहितम्

प्रथमो विलासः

मङ्गलाचरणम्—

प्रकृतिसुभगगात्रं प्रीतिपात्रं रमाया-
दिशतु किमपि धाम श्यामलं मङ्गलं वः।
अरुणकमललीलां यस्य पादौ दधाते
प्रणतहरजटालीगाङ्गरिङ्गत्तरंगे ॥ १ ॥

नमस्कारात्मकमंगलाचरण—जिसके दोनों चरण प्रणाम करते हुए शंकर जी की जटा के बीच में स्थित गंगा के क्रीड़ा करते हुए तरङ्ग में लाल कमल की शोभा प्राप्त करते हैं, उस स्वभाव से ही सुन्दर लक्ष्मी के प्रेम का आश्रय कोई (अकथनीय) श्यामवर्ण रामस्वरूप या कृष्णस्वरूप तेज तुम्हें मंगल प्रदान करें॥ १ ॥

स्वेष्टदेवताया पार्वत्या नमस्कारात्मकं मङ्गलान्तरम्—

रत्नं वामदृशां दृशां सुखकरं श्रीसप्तशृंगास्पदं
स्पष्टाष्टादशबाहु तद् भगवतो भर्गस्य भाग्यं भजे।
यद्भक्तेन मया घटस्तनि ! घटीमध्ये समुत्पाद्यते
पद्यानां शतमङ्गनाऽधरसुधास्पर्द्धाविधानोद्धुरम् ॥ २ ॥

अपनी इष्टदेवी पार्वती के नमस्कारात्मक दूसरा मंगलाचरण—हे कलश के सदृश कठोर स्तन वाली, उन मनोहर स्त्रियों में श्रेष्ठ, नेत्रों को सुख देनेवाली, शोभा से युक्त, सात शिखरों वाले हिमालय पर्वत पर निवास करनेवाली एवं

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अट्ठारह भुजा धारण करने वाली, श्री शंकर जी की भाग्यस्वरूपा भगवती पार्वती जी का मैं भजन करता हूँ। जिसका भक्त होकर मैं एक ही घण्टा में सुन्दरियों के अधर सुधा की माधुरिमा से स्पर्धा करने में सामर्थ्य रखने वाले एक सौ श्लोकों को बनाता हूँ॥ २॥

ग्रन्थनामोल्लेखः—

दिवाकरप्रसादेन रोग्यारोग्यसमीहया।
समासेन वयं कुर्मः काव्यं सद्वैद्यजीवनम्॥ ३॥

ग्रन्थ के नाम का उल्लेख—दिवाकर (सूर्य भगवान् या ग्रन्थकार के पिता दिवाकर) की कृपा से रोगियों के आरोग्य की इच्छा से हम संक्षेप में इस वैद्य जीवन नामक सुन्दर काव्य को (या सद्वैद्यों के जीवन स्वरूप इस काव्य को) बनाते हैं॥ ३॥

ग्रन्थनिन्दाकर्तॄणामुपेक्षणम्—

तथाऽपि क्रियते ग्रन्थः सन्ति यद्यपि दुर्जनाः।
न हि दस्युभयाल्लोको दैन्यवानिह वर्त्तते॥ ४॥

ग्रन्थ की निन्दा करने वालों की उपेक्षा—यद्यपि इस संसार में दुर्जन बहुत हैं तथापि मैं वैद्य जीवन नामक ग्रन्थ बनाता हूँ। क्योंकि डाकुओं के डर से लोग दीन बनकर ही नहीं रहते हैं। अर्थात् डाकुओं के डर से कोई भी व्यक्ति धन संचय करना नहीं छोड़ता, वल्कि धन का संचय करता ही है, इसी प्रकार मैं भी निन्दकों की परवाह न करते हुए ग्रन्थ की रचना कर रहा हूँ॥ ४॥

ग्रन्थस्य स्वकपोलकल्पितत्वपरिहारः—

गदगञ्जनाय चतुरैश्चरकाद्यै-
र्मुनिभिर्नृणां करुणया कथितं यत्।
अखिलं लिखामि खलु तस्य रहस्यं-
स्वकपोलकल्पितमिहास्ति न किञ्चित्॥ ५॥

ग्रन्थ के शास्त्रसंमत होने का कथन—चिकित्सा विशेषज्ञ चरक-सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि मुनियों ने मनुष्यों के ऊपर कृपाकर रोग नाश के लिये जो कहा है उसी के सम्पूर्ण रहस्य को मैं यहाँ पर लिखता हूँ। इस ग्रन्थ में मेरा कपोलकल्पित (मनगढ़न्त) कुछ भी नहीं है॥ ५॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रन्थानधिकारिवर्णनम्—

येषां न चेतो ललनासु लग्नं मग्नं न साहित्यसुधासमुद्रे।
ज्ञास्यन्ति ते किं मम ! हा प्रयासानन्धा यथा वारवधूविलासान् ॥ ६ ॥

ग्रन्थ के अनधिकारी का वर्णन—जिन पुरुषों का चित्त कभी सुन्दरियों में न लगे और न कभी साहित्यरूपी अमृत के समुद्र में ही डूबा हो वे मेरे इस परिश्रम को क्या समझेगें। जैसे अन्धे पुरुष वेश्याओं के हावभावादि को नहीं जान सकते हैं। अर्थात् जिनका चित्त सुन्दरियों में लगा रहता है और साहित्य सुधा का पान करता है वे ही मेरे परिश्रम को समझ सकेगें। अन्य व्यक्ति इसको समझने में असमर्थ रहेगें। जैसे अन्धे व्यक्ति वेश्याओं के हावभाव को नहीं समझ पाते ॥ ६ ॥

चिकित्साधिकारिवर्णनम्—

गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यः पीयूषपाणिः कुशलः क्रियासु।
गतस्पृहो धैर्यधरः कृपालुः शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृशः स्यात् ॥ ७ ॥

चिकित्सा के अधिकारियों का वर्णन—जिसने गुरु से सम्पूर्ण वैद्यविद्या (अष्टाङ्ग-आयुर्वेद-शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगद-तन्त्र, रसायनतन्त्र तथा वाजीकरण) अष्टाङ्ग-आयुर्वेद को अच्छी तरह पढ़ा है, और जो पीयूषपाणि हो अर्थात् जिसका हाथ रोगियों के रोग को दूर करने में सफल हो, चिकित्सा-सम्बन्धी सभी कर्म करने में प्रवीण हो, चिकित्सा के द्वारा धन प्राप्ति की इच्छा न हो, धैर्यवान् हो, और रोगियों को धैर्य दिलाने वाला, दयालु एवं पवित्र हृदय वाला हों ऐसा वैद्य इस ग्रन्थ को पढ़ने का अधिकारी है ॥ ७ ॥

वैद्यकृत्यम्—

आदौ निदानविधिना विदध्याद् व्याधिनिश्चयम्।
ततः साध्यं परीक्षेत पश्चाद्भिषगुपाचरेत् ॥ ८ ॥

वैद्यों का कर्तव्य—पहले निदान की विधि[1] (दर्शन, स्पर्शन एवं प्रश्न)

---

१. निदानं पूर्वरूपाणि रूपाण्युपशयस्तथा।
सम्प्राप्तिश्चेति विज्ञानं रोगाणां पञ्चधा मतम् ॥ (माधवनिदानम्)
दर्शनस्पर्शनप्रश्नैः परीक्षा त्रिविधा मता।
रोगाक्रान्तशरीरस्थ स्थानान्यष्टौ परीक्षयेत्।
नाडीं मूत्रं मलं जिह्वां शब्दस्पर्शदृगाकृतिम्।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
से रोग का निर्णय करे। उसके बाद रोग के साध्यासाध्य की परीक्षा करे। इसके बाद साध्य का निर्णय हो जाने पर बुद्धिमान् वैद्य चिकित्सा प्रारम्भ करे। अर्थात् रोग निदान के बाद साध्य का निश्चय होने पर चिकित्सा करनी चाहिए ॥ ८ ॥

ज्वरिणे हितोपदेशः—

औषधं मूढवैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीडिताः।
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः ॥ ९ ॥

ज्वर रोग में हितकर पथ्य का उपदेश—ज्वर से पीडित रोगी जन मूर्ख वैद्यों के औषध को छोड़ दे। जैसे कि सज्जन पुरुष दूसरे के संसर्ग में रहनेवाली स्त्री को छोड़ देते हैं ॥ ९ ॥

रोगिणः पथ्यसेवनवैशिष्ट्यम्—

पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः ?।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥ १० ॥

रोगी के लिए पथ्य सेवन की विशेषता—रोग पीड़ित व्यक्ति को पथ्यपूर्वक रहने पर औषध सेवन करने का क्या प्रयोजन ? अर्थात् पथ्यसेवी रोगी पथ्य से ही रोग को निर्मूल कर देता है उसको औषध सेवन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसी प्रकार पथ्यपूर्वक न रहने पर औषध सेवन करने से क्या प्रयोजन ? तात्पर्य यह है कि यदि रोगी अच्छी से अच्छी दवा का सेवन करे किन्तु पथ्य का ध्यान न रक्खें तो दवा सेवन से रोग निर्मूल नहीं होता। अतः पथ्य का महत्व औषध से अधिक है ॥ १० ॥

ग्रन्थकर्तुः स्वविनयप्रदर्शनम्—

महीन्द्रमहिलात्रपाप्रदपदारविन्दे ! तथा
पयोनिधिपयस्तती जलधरैरुपात्ता यथा।
मम प्रकृतिनीरसा नृपभिषग्भिरङ्गीकृता
भविष्यति सरस्वती रसवती सुरासापतेः ॥ ११ ॥

ग्रन्थकार का विनय प्रदर्शन—अयि ! राजाओं की पत्नियों को लज्जित करने वाले चरणकमलोंवाली प्रिये ! सुरासा (ग्रन्थकार के पत्नी का नाम) के पति के ग्रन्थ में मेरी कही हुई नीरस भी वाणी राजवैद्यों (या राजा एवं वैद्यों) द्वारा ग्रहण

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करने पर उसी प्रकार मधुर हो जायगी जैसे मेघों द्वारा स्वभाव से ही खारे समुद्र का ग्रहण किया हुआ जल मधुर हो जाता है ॥ ११ ॥

ग्रन्थस्योपादेयताप्रदर्शनम्—

इह गमिष्यति वैद्यमतिः श्रमं प्रथममेव पुनस्तु महासुखम् ।
प्रियतमस्य मृगाक्षि ! समागमे नवकरग्रहणा गृहिणो यथा ॥ १२ ॥

ग्रन्थ की उपयोगिता का प्रदर्शन—हे मृगनयनी ! इस ग्रन्थ को समझने में पहले तो परिश्रम लगेगा किन्तु बाद में अच्छी तरह समझ लेने पर महान् सुख मिलेगा । जैसा कि नवीन विवाहिता स्त्री को प्रियतम के प्रथम समागम में कष्ट तो होता है किन्तु बाद में सन्तान एवं रति आदि का महान् आनन्द प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

ज्वरप्रतिकारार्थं ग्रन्थकारप्रतीज्ञा—

यतः सर्वेषु रोगेषु प्रायशो बलवाञ्ज्वरः ।
अतस्तस्य प्रतीकारं प्रथमं ब्रूमहे वयम् ॥ १३ ॥

ज्वर दूर करने के लिये ग्रन्थकार की प्रतीज्ञा—सभी रोगों में ज्वर बलवान् होता है अतः सर्वप्रथम[1] ज्वर[2] दूर करने का उपाय कहेंगें ॥ १३ ॥

ज्वरे लङ्घनस्य प्राधान्यं सुरपादपादिपाचनक्वाथश्च—

अधुना शृणु तन्वि ! लंघन ज्वरितानां प्रथमं प्रशस्यते ।
सुरपादपधान्यधावनीयुगविश्वौषधपाचनं ततः ॥ १४ ॥

ज्वर में लङ्घन की प्रधानता तथा सुरपादपादिपाचनक्वाथ—हे पतले शरीर

---

१. रोगराट् सर्वभूतानामंतकृद्दारुणो ज्वरः ।
तस्मात्तस्य विशेषेण यतेत प्रथमं भिषक् ॥ (चरकः)
ज्वरमादौ प्रवक्ष्यामि यतो वै रोगराट् स्मृतः । (सुश्रुतः)
ज्वरो रोगपतिः पाप्मा मृत्युरोजोऽशनोऽन्तकः ।
क्रोधोदक्षाध्वरध्वंशी रुद्रोर्ध्वनयनोद्भवः ॥ (वाग्भट)
२. मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः ।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यु रसानुगाः ॥
ज्वरस्य विप्रकृष्टकारणपूर्विकासम्प्राप्तिः ॥ (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
वाली प्रिये! इस समय मेरे बचनों को सुनो। ज्वर[1] से पीड़ित व्यक्तियों को सर्व प्रथम लंघन कराना उत्तम होता है। इसके बाद[2] सुरपादपादिक्काथ—देवदारु, धनियां, छोटी कटेरी, वनभंटा (धावनी युग-दोनों भटकटैया) तथा सोंठ समभाग इन सबों का पाचनकषाय[3] पान कराना चाहिए। (ओषधि को अठगुने जल में पकाकर चतुर्थावशिष्ट क्वाथ ग्रहण करना चाहिए। औषधि की अधम मात्रा दो तोला, मध्यम मात्रा तीन तोला तथा उत्तम मात्रा चार तोले की होती हैं। पूर्वोक्त नियम के अनुसार क्वाथ द्रव्य जल एवं अवशिष्ट भाग लेना चाहिए) ॥१४॥

क्रमेण वातपित्तकफज्वरेषु क्वाथत्रयनिर्देशः—

छिन्नौषधाम्भोधरधन्वयासैः किराततिक्ताम्बुदरेणुयासैः।
विश्वावृषाम्भोधरधन्वयासैः क्वाथा मरुत्पित्तकफज्वरेषु ॥ १५ ॥

क्रमशः वात-पित्त-कफ ज्वरों में तीन क्वाथ का निर्देश—वातज्वर[4] में गिलोय, सोंठ, मोथा तथा यवासा का क्वाथ, पित्तज्वर[5] में चिरायता, कुटकी, मोथा,

---

१. ज्वर का सामान्य लक्षण—
स्वेदावरोधः संतापः सर्वाङ्गग्रहणं तथा।
युगपद् यत्र रोगेषु सज्वरो व्यपदिश्यते।
श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः।
इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु॥
जृम्भाङ्गमर्दोगुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः।
अप्रहर्षश्च शीतं च भवत्युत्पत्स्यति ज्वरे॥ (माधवनिदानम्)

२. आसप्तरात्रात्तरुणं ज्वरमाहुर्मनीषिणः।
मध्यं चतुर्दशाहान्तं पुराणस्तत उच्यते॥
त्रिसप्ताहे व्यतीते तु जीर्णसंज्ञां लभेत सः॥

३. कर्षादौ तु पलं यावत् दद्यात्षोडशकं जलम्।
तज्जलं पाययेत् धीमान् कोष्णं मृद्वग्निसाधितम्॥ (शार्ङ्गधरः)

४. वेपथुर्विषमोवेगः कण्ठास्यपरिशोषणम्।
निद्रानाशः क्षवस्तम्भो गात्राणां रौक्ष्यमेव च॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं बद्धविट्कता।
शूलाध्मानं जृम्भणं च भवत्यनिलजे ज्वरे॥

५. वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः।
कंठौष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
पित्तपापड़ा तथा यवासा का क्वाथ और कफ ज्वर में सोंठ, अडूसा, मोथा तथा यवासा का क्वाथ देना चाहिए ॥ १५ ॥

वातज्वरचिकित्सायां पीयूषादिक्वाथः—

पीयूषलोकपाञ्चालीचरणानां कषायकः।
पीयमानः प्रिये! हन्ति हनुमज्जनकज्वरम् ॥ १६ ॥

वात ज्वर में पीयूषादि क्वाथ—हे प्रिये! गुडूची, लोक (सोंठ), पाञ्चाली-चरण (पीपर) समभाग इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ वातज्वर को नष्ट करता है ॥ १६ ॥

उशीरादिक्वाथः—

उशीरकलशीमहौषधकिरातकाम्भोधर-
स्थिराबृहतिकाद्वयामृतलतात्रिकण्टैः कृतम्।
कषायकममुं पिबेत् पवनजे ज्वरव्याकुलः
पुमान्दशशतच्छदच्छदमदग्रसल्लोचने! ॥ १७ ॥

उशीरादिक्वाथ—हे कमल के पत्तों की सुन्दरता को निगलने वाले नेत्रवाली! वातज्वर से व्याकुल पुरुष खस, पृश्निपर्णी, सोंठ, चिरायता, मोथा, शालपर्णी, भटकटैया, वनभंटा, गुडूची तथा गोखरु समभाग इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ पान करे ॥ १७ ॥

वात-पित्त-ज्वरचिकित्सायां पञ्चभद्रक्वाथः—

छिन्नोद्भवापर्पटवारिवाहभूनिम्बशुण्ठीजनितः कषायः।
समीरपित्तज्वरजर्जराणां करोति भद्रं खलु पञ्चभद्रः ॥ १८ ॥

वात-पित्तज्वर में पञ्चभद्रक्वाथ गुडूची, पित्तपापड़ा, मोथा, चिरायता तथा सोंठ समभाग इन सबों का बनाया हुआ यह पञ्चभद्र नामक क्वाथ वात-पित्त

प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्च्छा दाहो मदस्तृषा।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वं पैत्तिके भ्रम एव च॥
१. स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वं स्तम्भस्तृप्तिरथापि वा॥
गौरवं शीतमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता।
प्रतिश्यायोऽरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
ज्वर से पीड़ित व्यक्तियों का कल्याण करता है। अर्थात् यह पञ्चभद्रकाथ[1] वात-पित्तज्वर को दूर करता है ॥ १८ ॥

पित्तज्वर चिकित्सायां रैणवः क्वाथः—

मृगमदविलसल्ललाटमध्ये ! मृगमदहारिणि ! लोचनद्वयेन ।
मृगनृपतितनूदरश्रि ! पित्तज्वरमहह द्यति रैणवः कषायः ॥१९॥

पित्तज्वर में रैणवक्काथ—हे अपने ललाटस्थल के मध्य में कस्तूरी के तिलक को धारण करनेवाली तथा दोनों नेत्रों से मृगमद (नेत्रचाञ्चल्य) मृग को तिरस्कृत करनेवाली, एवं सिंह की तरह पतले उदरवाली प्रिये ! केवल पित्तपापड़े का कषाय पित्तज्वर को नाश करता है, यह आश्चर्य की बात है ॥१९॥

सचन्दनादिपर्पटकक्काथः—

एक एव खलु पैत्तिजज्वरं हन्ति पर्पटकृतः कषायकः ।
चन्दनोदकमहौषधान्वितश्चेत्तदा किमु पुनर्विचारणा ॥ २० ॥

चन्दन आदि के साथ पित्तपापड़े का क्काथ—एक ही पित्तपापड़े का कषाय पित्तज्वर को नष्ट करता है। यदि उसमें रक्तचन्दन, नेत्रवाला तथा सोंठ भी मिला हो तो फिर क्या विचार करना है। अर्थात् इन चारों द्रव्यों का कषाय तो पित्तज्वर को अवश्य ही नष्ट करता है ॥ २० ॥

मूर्च्छाऽऽदि युक्ते पित्तज्वरे द्राक्षाऽऽदिदुस्पर्शादिक्काथौ—

द्राक्षापर्पटराजवृक्षकटुकामुस्ताभयानां जलं
मूर्च्छाशोषनिदाघतृट्प्रलपनभ्रान्त्याढ्यपित्तज्वरे ।
दुस्पर्शप्रमदाकिरातकटुकासिंहास्यरेणूद्भवः-
क्काथः शर्करयाऽन्वितो हरति तृड्दाहास्रपित्तज्वरान् ॥२१॥

मूर्च्छा आदि उपद्रव से युक्त पित्तज्वर में द्राक्षादि तथा दुःस्पर्शादि दो कषाय—मुनक्का, पित्तपापड़ा, अमलतास, कुटकी, मोथा तथा हरीतकी का कषाय मूर्च्छा, राजयक्ष्मा, पसीना आना, प्यास, प्रलाप तथा भ्रान्ति (चक्कर) से युक्त पित्तज्वर में लाभदायक है, और यवासा, मेंहदी, चिरायता, कुटकी, अडूसा तथा

---

१. तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशः शिरोरुजा ।
कण्ठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ॥
पर्वभेदश्च जृम्भा च वातपित्तज्वराकृतिः । (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पित्तपापड़ा का बनाया हुआ मिश्री से युक्त क्वाथ प्यास, जलन, रक्तपित्त तथा ज्वर (पित्तज्वर) को दूर करता है ॥ २१ ॥

छिन्नाऽऽदिक्वाथः—

अहो किमर्थं बहुभिः कषायैः पराशराद्यैर्मुनिभिः प्रदिष्टैः।
छिन्नाशिवापर्पटतोयपानात् पित्तज्वरः किं न सरीसरीति ? ॥ २२ ॥

गुडूच्यादिक्वाथ—अरे ! पराशर-आदिक अनेक मुनियों द्वारा बताये हुए क्वाथों से क्या प्रयोजन ? केवल गुडूची, आंवला तथा पित्तपापड़े के क्वाथ के पीने से पित्तज्वर क्या दूर नहीं हो जाता है ? अर्थात् गुडूच्यादि क्वाथ के पानमात्र से ही पित्तज्वर नष्ट हो जाता है। अन्य की आवश्यकता नहीं होती ॥ २२ ॥

पित्त-कफज्वरचिकित्सायां लोहितचन्दनादिक्वाथः—

लोहितचन्दनपद्मकधान्यच्छिन्नरुहापिचुमन्दकषायः।
पित्तकफज्वरदाहपिपासा-वान्तिहुताशविनाशहरः स्यात् ॥ २३ ॥

पित्त-कफजन्यज्वर में लोहितचन्दनादिक्वाथ—रक्तचन्दन, पद्मकाठ, धनियां, गुडूची तथा नीम का क्वाथ पित्त-कफ[1]जन्यज्वर, दाह, प्यास, वमन तथा मन्दाग्नि को दूर करने वाला होता है ॥ २३ ॥

सदाहज्वरादौ जलादिक्वाथः—

जलजलजपयोदरेणुविश्वौषधशिशिरैः शिशिरं जलं शृतं स्यात्।
सपदि सुखकरं सदा सदाहज्वरतृषि योज्यमिदं नवज्वरेऽपि ॥ २४ ॥

दाहयुक्तज्वरादि में जलादि क्वाथ—नेलवाला, खस, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठ तथा लाल चन्दन इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ ठण्डा करके पिलाने से जलन युक्त पित्तज्वर और प्यास में हमेशा शीघ्र ही लाभ होता है और नये ज्वर में भी इसे देना चाहिए ॥ २४ ॥

दाहे सहस्रधौतघृतप्रयोगः—

सहस्रधौतेन घृतेन कर्त्तुरभ्यङ्गमोषः कृशतां बिभर्ति।
अन्याङ्गनासङ्गमसादरस्य स्वीयेषु दारेषु यथाऽभिलाषः ॥ २५ ॥

दाह में सहस्रधौतघृत का प्रयोग—हजार बार धोये हुए घृत (पुराना घृत

---

१. लिप्ततिक्तास्यता तन्द्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा।
मुहुर्दाहो मुहुः शीतं पित्तश्लेष्मज्वराकृतिः॥ (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
उत्तम होता है) की मालिश करने वाले व्यक्ति का दाह नष्ट हो जाता है। जैसे दूसरी स्त्री में आसक्त पुरुष की अभिलाषा अपनी स्त्री में नहीं रह जाती ॥ २५ ॥

पित्तज्वरोद्भवतृड्दाहादिप्रतीकारोपायाः—

अमलैः कमलैरथानिलैरलसैः पुष्परसैः समन्वितैः ।
जलकेलिकथाकुतूहलैरपि पित्तज्वरजा रुजो जयेत् ॥ २६ ॥

पित्तज्वर में उत्पन्न प्यास दाह आदि दूर करने के उपाय—स्वच्छ कमल तथा कमल के पुष्परस-मकरन्द आदि युक्त मन्द हवा से और जलक्रीडा, उसकी कल्पना तथा उसके कुतूहल आदि से पित्त ज्वर में उत्पन्न दाह एवं प्यास आदिक कष्ट को दूर करें ॥ २६ ॥

सर्वदाहनाशकोपायः—

श्रीखण्डमण्डितकलेवरवल्लरीणां-
मुक्ताफलाकुलविशालकुचस्थलीनाम् ।
वैदग्ध्यमुग्धवचसां सुविलासिनीना-
मालिङ्गनं सकलदाहमपाकरोति ॥ २७ ॥

सभी प्रकार के दाह नाश करने का उपाय—जिनकी शरीर रूपी लतायें चन्दन से चर्चित हों, मुक्ताफलों (मोती) से जिनके विशाल स्तन अलंकृत हों तथा जिनकी चतुरतायुक्त सुन्दर हाव-भाव एवं मधुर वाणी हो ऐसी सुन्दर स्त्रियों का आलिङ्गन सभी प्रकार के दाह को शान्त करता है ॥ २७ ॥

दाहनाशका उपायाः—

शय्या पल्लवपद्मपत्ररचिता वासो वयस्यैः समं
कान्तारे कुसुमस्फुरत्तरुवरे गानन्तु वीणान्वितम् ।
आलापाश्च शुकालिकोकिलकृताः कान्ताश्च कान्ताः कथा-
वाताश्चामलतालकव्यजनजा दाघं निराकुर्वते ॥ २८ ॥

दाह नष्ट करने वाले उपाय—नये पल्लव तथा कमल के पत्तों से निर्मित्त शय्या पर शयन, मित्रों के साथ पुष्पों से सुशोभित वृक्ष वाले वन में रहना, वीणा के साथ गाना सुनना, शुक, भ्रमर तथा कोयल के शब्दों को सुनना, सुन्दर स्त्रियों का वार्तालाप तथा सुन्दर कहानियाँ सुनना और स्वच्छ ताड़ के पंखे की हल्की हवा का सेवन करना ये सब उपचार दाह को दूर करते हैं ॥ ॥ २८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृड्दाहमोहेषु निम्बपत्रोत्थफेनलेपप्रयोग—

तृड्दाहमोहाः प्रशमं प्रयान्ति निम्बप्रवालोत्थितफेनलेपात् ।
यथा नराणां धनिनां धनानि समागमाद्वारविलासिनीनाम् ॥२९॥

प्यास, दाह तथा मूर्च्छा में निम्बपत्र के फेन का लेप—नीम के पत्तों को पीस कर मथने से निकले हुए फेन का लेप करने से प्यास, दाह तथा मूर्च्छा शान्त हो जाती है। जैसे वेश्या के सम्पर्क से धनी व्यक्तियों का धन नष्ट हो जाता है॥ २९ ॥

दाहे हिमादिलेपः—

अयि नितम्बिनि ! गानगलालसे ! मधुरचारिणि ! काममदालसे !
हरति दाहमधर्मकरानने ! हिमहिमांशुजलैरनुलेपनम् ॥३०॥

दाह में शीतल द्रव्यों के लेप का विधान—अयि विशाल नितम्ब वाली, गान में अभिलाषा रखने वाली, मन्द-मन्द चलने वाली, काम के मद से काम में आलस्य करने वाली तथा चन्द्रमा के समान मुख वाली ! सफेद चन्दन, कर्पूर तथा नेत्रवाला इन तीनों का अनुलेपन दाह को शान्त करता है॥ ३० ॥

तापनाशकोपायान्तरम्—

शुभ्राभ्रविभ्रमधरे शशाङ्ककरसुन्दरे ।
चन्दनैश्चर्चिते हर्म्ये स्वापस्तापमपोहति ॥ ३१ ॥

ताप नाशक अन्य उपाय—अत्यन्त उच्च होने के कारण सफेद मेघ का भ्रम धारण करने वाला, चन्द्रमा की किरणों से सुन्दर तथा सफेद चन्दन से लिप्त भवन में सोना दाह को शान्त करता है॥ ३१ ॥

पित्त-ज्वरेऽधरामृतपाननिर्देशः—

पित्तज्वरे किं रसफाण्टलेपः किं वा कषायैरमृतेन किं वा ?
पेयं प्रियाया मुखमेकमेव लोलिम्बराजेन सदाऽनुभूतम् ॥ ३२ ॥

पैतिक ज्वर में अधरपान का निर्देश—पैत्तिक ज्वर में स्वरस[1] फाण्ट[2] तथा

---

१. सद्यः क्षुण्णाद्रद्रव्यस्य वस्त्रयन्त्रादिपीडनात् ।
यो रसस्त्वभिनिर्याति स्वरसः स प्रकीर्तितः ॥

२. क्षुण्णे द्रव्यपले सम्यग् जलमुष्णं विनिक्षिपेत् ।
पात्रे चतुःपलमितं ततस्तु स्त्रावयेज्जलम् ।
सोऽयं पूतोद्भवः फाण्टो भिषग्भिरभिधीयते ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेप की क्या आवश्यकता या क्वाथ[1] एवं शीतल जल की ही क्या आवश्यकता है? इसमें केवल प्रिया के मुख की अधरसुधा का पान करे। यह लोलिम्बराज (ग्रन्थकर्ता) का अनुभव किया हुआ उपाय है ॥ ३२ ॥

अन्तर्दाहे पर्युषितधान्यहिमप्रयोगः—

यदि पर्युषितं धान्यसलिलं सितया समम्।
प्रभातसमये पीतमन्तर्दाहं नियच्छति ॥ ३३ ॥

आभ्यन्तरिकदाह में धान्यहिम का प्रयोग—यदि वासी धनियां का पानी मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पान किया जाय तो वह अन्तर्दाह (शरीर के आभ्यन्तरिक दाह) को दूर करता है। (किसी द्रव्य को रात भर पानी में भिंगोकर प्रातःकाल छानकर जो जल लिया जाता है उसे पर्युषितजल कहते हैं) ॥ ३२ ॥

वात-पित्तज्वरे पञ्चमूल्यादि (नवाङ्गपाचन) क्वाथः—

पञ्चमूल्यमृतामुस्ताविश्वभूनिम्बसाधितः।
कषायः शमयत्याशु वायुमायुभवं ज्वरम् ॥ ३४ ॥

वातपित्त जन्य ज्वर में पञ्चमूल्यादि क्वाथ—लघुपञ्चमूल[2] (सखिवन पिठवन, भटकटैया, वनभंटा, गोखरु) गुडूची, मोथा, सोंठ तथा चिरायता का बनाया हुआ क्वाथ वात-पित्त (वायु-पित्त) जन्य ज्वर को शीघ्र ही शान्त करता है ॥ ३४ ॥

सश्वासकासे कफज्वरे शृङ्ग्याद्यवलेहः—

शृङ्गीकणाकट्फलपुष्कराणां क्षौद्रान्वितानां विहितोऽवलेहः।
श्वासेन कासेन युतं बलासं ज्वरं जयेदत्र न काऽपि शङ्का ॥ ३५ ॥

श्वास-कास सहित कफज्वर में शृङ्ग्यादि-अवलेह—काकड़ासिङ्गी, पीपर, कायफर तथा पुष्करमूल समभाग इन सबों के चूर्ण को शहद के साथ बनाया हुआ अवलेह श्वास-कास से युक्त कफज्वर को नाश करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ३५ ॥

---

१. द्रव्यादापोथितात्तोये वह्निना परिपाचितात्।
निःसृतो यो रसः पूतः स शृतः समुदाहृतः ॥
क्वाथः कषायो निर्यूहः पर्यायस्तस्य कीर्तितः ॥ (परिभाषा-प्रदीपः)

२. शालपर्णी पृश्निपर्णी बृहतीद्वयगोक्षुरम्।
कनीयः पञ्चमूलं स्याद् ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सश्वासज्वरे भार्ङ्ग्यादि क्वाथः—

भार्ङ्गीगुडूचीघनदारुसिंही-शुण्ठीकणापुष्करजः कषायः।
ज्वरं निहन्ति श्वसनं क्षिणोति क्षुधां करोति प्ररुचिं तनोति ॥ ३६ ॥

श्वासयुक्तज्वर में भार्ङ्ग्यादिक्वाथ—भार्ङ्गी (बभनेटी), गुडूची, मोथा, देवदारु, भटकटैया, सोंठ, पीपर तथा पोहकरमूल समभाग इन सबों का क्वाथ ज्वर को नाश करता है, श्वास को दूर करता है, भूख को बढ़ाता है तथा खाने में अधिक रुचि उत्पन्न करता है ॥ ३६ ॥

ज्वरे मुखतिक्ततानाशकोपायः—

मम द्वयं विस्मयमातनोति तिक्ताकषायो मुखतिक्तताघ्नः।
निर्पीडितोरोजसरोजकोषा योषा प्रमोदं प्रचुरं प्रयाति ॥ ३७ ॥

ज्वर रोग में मुख की कडुआहट को दूर करने के उपाय—मुझे ये दोनों बातें आश्चर्य उत्पन्न करती हैं कि कटुकी का क्वाथ मुख के तीतापन या कडुआपन को नाश करता है और दूसरा कमल की कलियों के समान शोभायमान कुच के अग्रभाग को पीडन करना या मर्दन करना स्त्रियों को अधिक आनन्दित करता है ॥ ३७ ॥

कफज्वरे कासादिघ्नः कट्फलादि क्वाथः—

क्वाथः कट्फलकत्तृणाब्दधनिकाशृङ्ग्युग्रगन्धाभया-
भार्ङ्गीपर्पटविश्वदेवतरुजो बाह्लीकमध्वन्वितः।
कासश्वासमुखामयज्वरबलश्लेष्मप्रकोपं हरेत्
तद्वत् कोमलकण्ठि ! कण्ठजनितां पीडां च जेह्रीयते ॥ ३८ ॥

कफ ज्वर में कास-आदि नाशककट्फलादि क्वाथ—हे कोमलकण्ठ वाली प्रिये ! कायकर, कत्तृण (रोहित तृण-अगिया खर) मोथा, धनियां, काकड़ासिंङ्गी, वच, हर्रे, बभनेटी, पित्तपापड़ा, सोंठ तथा देवदारु का क्वाथ (समभाग इन द्रव्यों का क्वाथ शीतल होने पर) शु० हिंगु तीन ग्राम तथा शहद २१ ग्राम मिला कर देने से खांसी श्वास, मुख रोग ज्वर का वेग तथा कफ का प्रकोप दूर होता है, और उसी प्रकार कण्ठ की पीड़ा को अच्छी तरह नष्ट करता है ॥ ३८ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अरुचिनाशकोपायः—

अरुचिं द्यति लुङ्गकेसरं सघृतं सैन्धवचूर्णमिश्रितम् ।
रुचिमम्बुरुहस्य तन्वि ! ते नयनं खञ्जनगञ्जनं यथा ३९ ॥

भोजन में अरुचिनाश करने के उपाय—हे पतले शरीर वाली! लुंग (बिजौरा नींबू) का केशर (कोई) घी तथा सेन्धा नमक का चूर्ण (उचित मात्रा में जिससे स्वादिष्ट बन जाय) मिलाकर सेवन करने से अरुचि को इस प्रकार नष्ट करता है जैसे खञ्जन के नेत्रों को मात करने वाले तुम्हारे नेत्र कमल की शोभा को खण्डित कर देते हैं। (अर्थात् जैसे तुम्हारे नेत्र कमल की शोभा को तिरस्कृत कर देते हैं वैसे ही इस नींबू का केशर अरुचि को तिरस्कृत कर भोजन करने में रुचि को बढ़ा देता है) ॥ ३९ ॥

सन्निपातज्वरचिकित्सायां ग्रन्थ्यादिक्वाथः—

ग्रन्थीन्द्रजाऽमरपुरक्रिमिशत्रुभार्ङ्गीभृङ्गत्रिकट्वनलकट्फलपौष्कराणाम् ।
रास्नाऽभयबृहतिकाद्वयदीप्यभूतकेशीकिराततकवचाचविकात्रुकीणाम् ॥
क्वाथो हन्यात्सन्निपातान्समस्तान् बुद्धिभ्रंशस्वेदशैत्यप्रलापान् ।
शूलाध्मानं विद्रधिश्लेष्मवातान् वातव्याधिं सूतिकानां च तद्वत् ॥४१॥

सन्निपात ज्वर में ग्रन्थ्यादि क्वाथ—पिपरामूल, इन्द्रजव, देवदारु, गुग्गुलु, वायविडंग, बभनेटी, भृङ्गराज, त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच), कायफर पुष्कर-मूल, रासना, हर्रे, भटकटैया, वनभंटा, अजवायन, जटामांसी, चिरायता, वच, चव्य तथा पाठा (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ सभी प्रकार के सन्निपातों[1] से

---

१. सन्निपातस्य सामान्यलक्षणम्—

क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसन्धिशिरोरुजा ।
सस्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने ॥
सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कण्ठः शूकैरिवावृतः ।
तन्द्रा मोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः ॥
परिदग्धा खरस्पर्शा जिह्वा स्रस्ताङ्गतापरम् ।
ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥
शिरसो लोठनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा ।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ॥
कृशत्वं नाति गात्राणां सततं कण्ठकूजनम् ।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चित्त की व्याकुलता, पसीना, ठंढक, प्रलाप (अकबक बोलना), शूल, आध्मान (पेट में वायु का भर जाना), विद्रधि, कफ-वात जन्य रोग, वात रोग तथा प्रसूतिज्वर आदि रोगों को नाश करता है ॥ ४०–४१ ॥

अर्कादिक्काथः—

अर्कानन्ताकिराताामरतरुरस्नासिन्दुवारोग्रगन्धा-
तर्कारीशिग्रुपञ्चोषणघुणदयितामार्कवाणां कषायः ।
सद्यस्तीव्रांस्त्रिदोषानपहरति जनुर्मारुतं दन्तबन्धं-
शैत्यं गात्रे च गाढं श्वसनकसनकं सूतिकावातरोगान् ॥४२॥

अर्कादि क्काथ—मदार की जड़, रक्तयवासा, चिरायता, देवदारु, रास्ना, मेउड़ी, वच, अरणी, सहिजन, पञ्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) अतीस तथा भृङ्गराज (सम भाग) इन सबों का क्काथ शीघ्र ही भयंकर त्रिदोष, धनुर्वात, दांतों का जकड़न, शरीर का असह्यशीत, भयंकर श्वासवृद्धि तथा कास आदि रोग एवं सभी प्रकार के वात रोगों को दूर करता है ॥ ४२ ॥

सर्वसन्निपातघ्नतिक्तादिक्काथः—

तिक्तातिक्तकपर्पटामृतसटीरास्नाकणापौष्करं-
त्रायन्तीबृहतीसुरौषधशिवादुस्पर्शभार्ङ्गीकृतः ।
क्काथो नाशयति त्रिदोषनिकरं स्वापं दिवा जागरं-
नक्तं तृण्मुखशोषदाहकसनं श्वासानशेषानपि ॥ ४३ ॥

सभी प्रकार के सन्निपातनाशक तिक्तादि क्काथ—तिक्ता (कुटकी), तिलक (चिरायता), पित्तपापड़ा, गुडूची, कपूरकचरी, रास्ना, पीपर, पुष्करमूल, त्राय-माणा, भटकटैया, देवदारु, सोंठ, हरें, यवासा तथा भार्ङ्गी (बभनेटी (समभाग) इन सबों का क्काथ सभी प्रकार के सन्निपात[1] के समूह को नाश करता है और

कोठानां श्यावरक्तानां मंडलानाञ्च दर्शनम् ॥
मूकत्वं स्रोतसां पाकोगुरुत्वमुदरस्य च ।
चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ॥
सन्निपातज्वरस्यावधिः—
सप्तमे दिवसे······कश्चिदेव प्रमुच्यते
असाध्यसन्निपातज्वरलक्षणम्—
दोषे विबुद्धे नष्टेऽग्नौ······स्ततोऽन्यथा ॥ (माधवनिदानम्)
१. शीघ्रगस्तान्त्रिकः·········मृत्युतुल्यमभिन्यासं सन्निपातञ्च लक्षयेत् ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिन में सोना, रात्रि में जागना, मुखशोष, शरीर संताप, खांसी तथा सभी प्रकार के श्वास के रोगों को नष्ट करता है ॥ ४३ ॥

सन्निपातजयकर्तुः वैद्यस्य प्रशंसा—

सन्निपातस्य कालस्य कश्चिद् भेदो न विद्यते ।
चिकित्सको जयेद्यस्तं तस्मात् कोऽस्ति प्रतापवान् ॥ ४४ ॥

सन्निपात रोग पर विजय पानेवाले वैद्य की प्रशंसा—सन्निपातरोग तथा काल (मृत्यु) दोनों में कोई भेद नहीं है। अर्थात् सन्निपात रोग मृत्यु के समान है। इसको जो वैद्य जीत लेता है उससे बढ़ कर दूसरा कौन प्रतापी है, अर्थात् उससे बढ़ कर उत्तम वैद्य और कोई नहीं है ॥ ४४ ॥

अन्यच्च—

त्रिदोषाजगरग्रस्तं मोचयेद्यस्तु वैद्यराट् ।
आत्माऽपि तस्मै दातव्यः किं पुनः कनकादयः ॥ ४५ ॥

जो त्रिदोषरूपी अजगर (साँप) से ग्रसित रोगी को जो मुक्त कर देता है वह वैद्यों का राजा उत्तम वैद्य है। उसके लिये अपनी आत्मा को ही समर्पण कर देना चाहिए। सुवर्ण आदि की तो बात ही क्या है। अर्थात् उस वैद्य को उत्तम से उत्तम वस्तु देने में नहीं हिचकना चाहिए ॥ ४५ ॥

सन्निपाते कर्णमूलशोथोपायः—

यः शोफः श्रुतिमूलजः सुकठिनः शान्ते त्रिदोषज्वरे
रक्तं तत्र जलौकया परिहरेत्सर्पिः पिबेच्चातुरः ।
रास्नानागरलुङ्गमूलहुतभुग्दार्व्यग्निमन्थैः समै-
र्लेपः स्यादरविन्दवन्द्यनयने ! शोथव्यथाध्वंसनः ॥ ४६ ॥

सन्निपात ज्वर में कर्णमूल शोथ का प्रतिकार—सन्निपात ज्वर के शान्त होने पर कान[1] के मूल में जो कठिन शोथ होता है उसमें से जोंक के द्वारा खून निकाले और बुद्धिमान् रोगी घृत पान करे। इसके अतिरिक्त रास्ना, सोंठ, बिजौरा नींबू की जड़, चित्रक, दारुहल्दी तथा अरणी इन द्रव्यों को समान

१. ज्वरादितो वा ज्वरमध्यतो वा ज्वरान्ततो वा श्रुतिमूलशोफः ।
क्रमादसाध्यः खलु कष्टसाध्यः सुखेन साध्यः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ (सुश्रुतः)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाग लेकर तथा पीस कर लेप तैयार करें। हे कमल के द्वारा भी वन्दनीय मुख वाली प्रिये! यह लेप लगाने से कर्णमूलशोथ की पीड़ा नष्ट होती है ॥ ४६ ॥

शिरःपार्श्वस्थितशूलकासश्वासजीर्णज्वराणां निवृत्युपायाः—

शूलात्पार्श्वशिरःस्थितात्कसनतः श्वासाच्च जीर्णज्वरान्-
मुक्तः स्यात्पुरुषः पयः परिपिबन् पञ्चाङ्घ्रिणा पाचितम्।
पक्वाऽसौ गुडपिप्पली विजयते जीर्णज्वराजीर्णरुक्-
क्षुन्मान्द्यारुचिपाण्डुजन्तुकसनश्वासान्किमन्यौषधैः ॥ ४७ ॥

शिरःशूल पार्श्व शूल आदि की निवृति के उपाय—पञ्चांघ्रि (लघुपञ्चमूल—शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, वनभंटा तथा गोखरु) के द्वारा पकाया हुआ जल पीने से मनुष्य के कनपटियों के शूल, खांसी, श्वासरोग तथा जीर्ण ज्वर[1] नष्ट करता है। केवल गुड़ तथा पीपर का चूर्ण मिला कर खाय तो जीर्ण ज्वर, अजीर्णरोग, अरुचि, पाण्डु रोग, पेट की कृमि, खांसी तथा श्वास वृद्धि को जीत लेता है। पुनः अन्य औषधियों की क्या आवश्यकता है? अर्थात् यह औषधि उपरोक्त रोगों को दूर करने में समर्थ है ॥ ४७ ॥

कफजे जीर्णज्वरे छिन्नोद्भवाक्वाथः—

जीर्णज्वरं कफकृतं कणया समेत-
श्छिन्नोद्भवोद्भवकषायक एष हन्ति।
रामो दशास्यमिव राम इव प्रलम्बं-
रामो यथा समरमूर्द्धनि कार्त्तवीर्य्यम् ॥ ४८ ॥

कफजन्य जीर्ण ज्वर में गुडूची का क्वाथ—केवल गुडूची का क्वाथ पीपर का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से कफजन्य जीर्ण ज्वर को नष्ट करता है, जैसे युद्ध में राम ने रावण को, बलराम ने प्रलम्बासुर को तथा परशुराम ने कार्त्तवीर्य को नष्ट किया था। (यहाँ राम शब्द से दाशरथि राम, रोहिणी पुत्र बलराम तथा परशुराम को कहा गया है) ॥ ४८ ॥

---

१. त्रिसप्ताहे व्यतीते तु ज्वरो यस्तनुतां गतः।
प्लीहाग्निमान्द्यं कुरुते स जीर्णज्वर उच्यते ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तत्रैव पञ्चमूलीकषायः—

पञ्चमूलीकषायस्य सकृष्णस्य निषेवणात् ।
जीर्णज्वरः कफकृतो विदधाति पलायनम् ॥ ४९ ॥

कफजन्यजीर्णज्वर ˝ पञ्चमूलीकषाय—पञ्चमूल (सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा तथा गोखरु) का क्वाथ पीपर का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से कफजन्य जीर्णज्वर छोड़कर भाग जाता है। अर्थात् इसके सेवन से कफजन्यजीर्णज्वर नष्ट हो जाता है ॥ ४९ ॥

जीर्णविषमज्वरसन्निपातज्वराणां शान्त्युपायमाह—

शटी शुण्ठी रेणुः सुरतरुरनन्ता च बृहती
घनस्तिक्ता तिक्तं खलु नवभिरेभिर्विरचितः ।
कषायः पीतोऽयं मधुकृणविमिश्रः शमयति
त्रिदोषं निःशेषं विषममपि जीर्णज्वरमपि ॥ ५० ॥

जीर्णविषमज्वर तथा सन्निपातज्वर शान्त करने के उपाय—कचूर, सोंठ, पित्तपापड़ा, देवदारु, यवासा, भटकटैया, मोथा, कुटकी तथा चिरायता (समभाग) इन सबों का क्वाथ पीपर चूर्ण तथा मधु मिलाकर पीने से सभी प्रकार के त्रिदोष तथा जीर्णविषम[1] ज्वर को भी शान्त करता है ॥ ५० ॥

ऐकाहिकज्वरस्यौषधमाह —

वासापटोलत्रिफलाद्राक्षासम्पाकनिम्बजः ।
समधुः ससितः क्वाथो हन्यादैकाहिकं ज्वरम् ॥ ५१ ॥

---

१. विषमज्वरस्य सामान्यलक्षणम् यथा—
यः स्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यां तथैव च ।
वेगतश्चापि विषमो ज्वरश्च विषमो मतः ॥
सन्ततः सततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ । (इति विषमज्वरभेदाः)
सप्ताहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा ।
सन्तत्या यो विसर्गी स्यात् सन्ततः स निगद्यते ॥ (इति सन्ततज्वरलक्षणम्)
अहोरात्रे सततको द्वौ कालावनुवर्तते । (इति सततकज्वर लक्षणम्)
अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं प्रवर्तते । (इत्यन्येद्युष्कज्वरलक्षणम्)
तृतीयकस्तृतीयेऽह्नि चतुर्थेऽह्नि चतुर्थकाः । (इति तृतीयकचतुर्थकयोः लक्षणम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐकाहिक (दिन में एक बार आने वाला) ज्वर का औषध—अडूसा, परवल का पत्ता, त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), मुनक्का, अमलतास तथा नीम की छाल इन सबों का क्वाथ मधु तथा मिश्री मिलाकर सेवन करने से ऐकाहिक ज्वर (दिन में एक बार आने वाला ज्वर) को नाश करता है ॥ ५१ ॥

ऐकाहिकज्वरे जलाञ्जलियोगः—

तन्वङ्गि ! गङ्गोत्तरतीरभूमौ ममार हा ! कोप्यसुतस्तपस्वी ।
जलाञ्जलिं तस्य कृते ददातु सैकाहिकः स्याद्यदि तेऽनुजन्मा ॥ ५२ ॥

ऐकाहिक ज्वर में जलाञ्जलि का प्रयोग—हे कृशाङ्गी! गंगाजी के तट पर उत्तर तरफ कोई पुत्रहीन तपस्वी मरा था, उस तपस्वी को वह ऐकाहिक ज्वर वाला जलाञ्जलि दे[१] । अर्थात् उसको तर्पण करे । यदि तुम्हारा छोटा भाई ऐकाहिकज्वर-ग्रस्त हो तो उसके लिए तुम तापस का तर्पण करो या तुझे ही ऐकाहिक ज्वर हो तो तुम्हारा छोटा भाई तर्पण करे ॥ ५२ ॥

तृतीयकज्वरचिकित्सामाह —

सशिशिरः सघनः समहौषधः सनलदः सकणः सपयोधरः ।
समधु-शर्कर एव कषायको जयति बालमृगाक्षि ! तृतीयकम् ॥ ५३ ॥

तृतीयक ज्वर की चिकित्सा—हे बालमृगों के समान नेत्रों वाली ! लाल-चन्दन, धनियां, सोंठ, खस, पीपर तथा मोथा इन सबों का क्वाथ, शहद तथा मिश्री के साथ मिलाकर देने से तृतीयक ज्वर को जीत लेता है ॥ ५३ ॥

चातुर्थिकज्वरचिकित्सा तत्र नस्यम्—

चातुर्थिको नश्यति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य नस्यात् ।
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकादिव साधुभावः ॥ ५४ ॥

चातुर्थिकज्वरचिकित्सा में नस्य का प्रयोग—हिंगु को घृत के साथ पकाकर नस्य लेने से वैसे ही चातुर्थिक ज्वर (चौथइया ज्वर) नष्ट हो जाता

---

१. गङ्गोत्तरभूमौ योऽपुत्रस्तापसोमृतः । स तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधानमः—इतिमन्त्रेणाश्वत्थपत्रं हस्ते गृहीत्वा तर्पयेत् । अन्ते-इदं-पठनीयम्—

अङ्गवङ्गकलिङ्गेषु सौराष्ट्रमगधेषु च ।
वाराणस्यां च यद्वृत्तं तदैकाहिक ! संस्मर ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है जैसे विलास में चतुर नवयुवतियों के मुखारविन्द के दर्शनमात्र से ही सज्जन पुरुषों के सद्विचार नष्ट हो जाते हैं ॥ ५४ ॥

चातुर्थिके नस्यान्तरम्—

अखण्डितशरत्काल-कलानिधिसमानने !।
चातुर्थिकहरं नस्यं मुनिद्रुमदलाम्बुना ॥ ५५ ॥

चातुर्थिकज्वर में दूसरा नस्य—हे शरत्काल के पूर्ण चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाली ! अगस्त्य के पत्तों के रस का नस्य लेना चातुर्थिकज्वर को दूर करता है ॥ ५५ ॥

सुरदार्वादि क्वाथः—

सुरदारुशिवाशिवास्थिरा-वृषविश्वैः कथितः कषायकः।
मधुना सितया समन्वितः परिपीतः शमयेच्चतुर्थकम् ॥ ५६ ॥

सुरदार्वादिक्वाथ—देवदारु, हर्रे, आंवला, शालपर्णी, अडूसा तथा सोंठ इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ मधु तथा मिश्री के साथ मिलाकर पीने से चातुर्थिक ज्वर को शान्त करता है ॥ ५६ ॥

शीतज्वरभेषजमाह—

तक्रं त्र्यूषणचूर्णयुक्तमथवा मद्यं हसन्तीं सतीं-
तद्वत्कम्बलरल्लकानथ कुथां शीतातुरः शीलयेत् ।
आलिङ्गेदथवा मुहुर्दृढतरं तारुण्यमद्यालसाः
काश्मीरागुरुलिप्तपीवरकुचाः कामं कुरङ्गीदृशः ॥ ५७ ॥

शीतज्वरनाशक औषध—शीतज्वर से पीड़ित मनुष्य मट्ठा,[1] सोंठ, मरिच तथा पीपर का चूर्ण मिला कर पान करें, अथवा मद्य[2] का सेवन करे, या अंगेठी

---

१. तक्रं रुचिकरं प्रोक्तं वह्निदीपनपाचनम् ॥
उदरे हि गदास्तेषां नाशनं तृप्तिकारकम् ॥ (द्रव्यगुणम्)

२. मद्यं सर्वं भवेदुष्णं पित्तकृद्वातनाशनम् ।
भेदनं शीघ्रपाकं च रूक्षं कफहरं परम् ॥
अम्लं च दीपनं रुच्यं पाचनं वासकारि च ।
तीक्ष्णं सूक्ष्मं च विशदं व्यवायि च विकासि च ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में आग रखकर तापे या भेड़, पहाड़ी बकरी आदि के बाल से बने कम्बल या कन्था (कथरी) आदि को ओढ़े। अथवा जवानीरूपी मद से अलस, केशर तथा अगर से लिप्त कठोर कुचवाली मृगनयनियों को बार-बार अच्छी तरह दृढ़तर अपनी इच्छा के अनुसार आलिङ्गन करे ॥ ५७ ॥

शीतज्वरे शक्राह्वादिकाथः—

शक्राह्वदद्रुघ्नवृषामृतानां निर्गुण्डिकाभृङ्गमहौषधानाम् ।
क्षुद्रायवानीसहितः कषायः शीतज्वरारण्यहिरण्यरेताः ॥ ५८ ॥

शीतज्वर में इन्द्रजवादि क्वाथ—इन्द्रजव, चकवड़ के बीज, अडूसा, गुडूची, मेउड़ी, भृङ्गराज, सोंठ, भटकटैया तथा अजवायन (समभाग) इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ शीतरूपी वन के लिये अग्नि के सदृश है। अर्थात् यह क्वाथ शीत-ज्वर को नाश करता है ॥ ५८ ॥

विषमज्वरभेषजम्—

वाङ्माधुर्यजितामृतेऽमृतलता लक्ष्मीशिवाभे ! शिवा
विश्वं विश्ववरे ! घनो घनकुचे ! सिंही च सिंहोदरि !
एभिः पञ्चभिरौषधैर्मधुकणामिश्रः कषायः कृतः—
पीतश्चेद्विषमज्वरः किमु तदा तन्वङ्गि ! न क्षीयते ॥ ५९ ॥

विषम ज्वर का औषध—हे वाणी की मधुरिमा से अमृत को जीतनेवाली ! हे लक्ष्मी तथा पार्वती के समान शोभावाली ? हे सभी स्त्रियों में श्रेष्ठ ! हे आपस में मिले कठोर स्तनों वाली ! तथा सिंह के समान उदरवाली कृशाङ्गी ! गुडुची, आँवला, सोंठ, नागरमोथा तथा भटकटैया (समभाग) इन पाँच ओषधियों से बनाया हुआ क्वाथ मधु तथा पीपर का चूर्ण मिला कर यदि पान किया जाय तो क्या विषमज्वर[1] नहीं अच्छा होता ? अर्थात् विषम ज्वर अवश्य शान्त होता है ॥ ५९ ॥

---

१. ज्वराश्च विषमास्सर्वे सन्निपातसमुद्भवाः ।
क्षयोल्वणस्य दोषस्य तेषु कार्यं चिकित्सितम् ॥
विषमेष्वथ कर्तव्यमूर्ध्वं वाऽधश्च शोधनम् ।
स्निग्धोष्णैरन्नपानैश्च शमयेद् विषमज्वरान् ॥
(इति विषमज्वर-चिकित्सा-प्रकारः)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भङ्ग्यन्तरेण पूर्वोक्तौषधनिर्देशः—

सनागरायाः सपयोधरायाः सर्सिहिकायाः सगुडूचिकायाः ।
धात्र्याः कषायो मधुना विमिश्रः कणाविमिश्रो विषमज्वरघ्नः ॥ ६० ॥

प्रकारान्तर से पूर्वोक्त औषध का निर्देश—सोंठ, नागरमोथा, भटकटैया, तथा गुडूची के सहित आँवले का क्वाथ; मधु तथा पीपर के चूर्ण के साथ मिलाकर सेवन करने से विषमज्वर को नाश करता है ॥ ६० ॥

विषमज्वरे रसोनकल्कप्रयोगः—

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि परन्तु कान्ते ! न रसोनकल्कात् ।
तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो महासमीरे विषमज्वरेऽपि ॥६१॥

विषमज्वर में रसोनकल्क का प्रयोग—हे सर्वाङ्गसुन्दरि ! तैलयुक्त रसोनकल्क से बढ़कर अर्दित रोग (महान् वात व्याधि) तथा विषम ज्वर में क्या अन्य उत्तम औषध नहीं है । अर्थात् इससे बढ़कर दोनों रोगों को दूर करने के लिये उत्तम प्रयोग नहीं है ॥ ६१ ॥

विषमज्वरघ्नं योगचतुष्टयम्—

भवति विषमहन्त्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता
भवति विषमहन्त्री पिप्पली वर्द्धमाना ।
विषमरुजमजाजी हन्ति युक्ता गुडेन
प्रशमयति तथोग्रा सेव्यमाना गुडेन ॥ ६२ ॥

विषम ज्वर नाशक चार योग—केवल हर्रे का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से विषमज्वर को नाश करने वाला होता है । इसी प्रकार वर्द्धमान[1]-पिप्पली (नियमानुसार क्रमशः बढ़ाकर एवं उसी क्रम से घटा कर दी हुई पिप्पली) का प्रयोग भी विषमज्वर को नाश करता है । गुड़ के साथ सफेद जीरा के चूर्ण का भी प्रयोग विषमज्वर को नाश करता है तथा गुड़ के साथ प्रयोग की हुई अजवायन भी विषमज्वर को शान्त करती है ॥ ६२ ॥

---

१. त्रिवृद्धया पञ्चवृद्धया वा सप्तवृद्ध्याथवा कणा ।
पिबेद्दशादशदिनं तथा चैवापकर्षयेत् ।
षट्त्रिंशद्भिर्दिनैः सिद्धं पिप्पलीवर्द्धमानकम् ॥
(केचिदष्टाविंशतिदिनमेव वाञ्छन्ति)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषमज्वरे पटोलादिक्काथः—

स्वकान्तिजितरोचने ! चपललोचने ! मालती-
प्रसूननिकरस्फुरत्कबरि ! पञ्चवक्त्रोदरि !
पटोलकटुरोहिणीमधुकचेतकीमुस्तक-
प्रकल्पितकषायको विषममाशु जेजीयते ॥ ६३ ॥

विषम ज्वर में पटोलादि क्काथ—हे अपनी शोभा से लालकमल या गोरोचन को जीतनेवाली ! चञ्चल नेत्रों वाली ! मालती के पुष्पों से सुशोभित केशगुच्छ वाली तथा सिंह के समान उदर वाली ! परवल के पत्ते, कुटकी, मुलेठी, हर्रे तथा मोथा का बनाया हुआ क्काथ शीघ्र ही विषमज्वर को नष्ट करता है ॥ ६३ ॥

विषमज्वरे कुलकादि क्काथः—

किमु भ्रमयसि प्रिये ! कुवलयं कराभ्यामिदं-
मदीयवचनं सुधारससमं समाकर्णय ।
पुराणविषमज्वरे कुलकनिम्बसिंहीन्द्रजा-
मृताघनकषायको मधुयुतो वरीवर्त्तते ॥ ६४ ॥

विषम ज्वर में कुलकादि क्काथ—हे प्रिये ! अपने दोनों हाथों से इस कमल को क्या घुमा रही हो । मेरे अमृत के समान वचन को सावधान होकर सुनो । पुराने विषम ज्वर में परवल के पत्ते, नीम की छाल, भटकटैया, इन्द्रजब, गुडूची तथा नागरमोथा का क्काथ शहद मिलाकर सेवन करना उत्तम है । अर्थात् यह योग पुराने विषमज्वर को नाश करता है ॥ ६४ ॥

विषमज्वरे पिप्पलीप्रयोगः—

यो भजेत्समधुश्यामां हे हेमकलशस्तनि !
विषमेषु व्यथास्तस्य न भवन्ति कदाचन ॥ ६५ ॥

विषमज्वर में पिप्पली का प्रयोग—हे सोने के घड़े के समानस्तनवाली ! जो व्यक्ति विषमज्वर में पीपर या निशोथ का चूर्ण मधु के साथ सेवन करता है उसे विषम ज्वर की व्यथा नहीं होती । अथवा जो काम द्वारा विषमावस्था को प्राप्त पुरुष मद्य पानकर श्यामा (षोडश वर्षीया बाला) को सेवन करता है उसको कामदेवजन्यव्यथा कभी नहीं होती है ॥ ६५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषमज्वरे मेघनादमूलधारणम्—

क्षणमपि चलतां जहीहि मुग्धे ! शृणु वचनं मम तन्वि ! सावधाना ।
वसति शिरसि मेघनादमूले व्रजतितरां विषमो विलासदृष्टे ! ॥ ६६ ॥

विषम ज्वर में चौराई की जड़ धारण करना—हे मुग्धे ! (यौवनावस्था को प्राप्त होने वाली !) थोड़ी देर चञ्चलता को छोड़ो। हे कृशाङ्गी ! सावधान होकर मेरे वचन को सुनो। हे विलासिनेत्रवाली ! चौराई की जड़ को शिर में बांधने से विषमज्वर अच्छी तरह दूर हो जाता है ॥ ६६ ॥

विषमज्वरे मदिरादिक्काथः—

विषममपि हरत्यसौ कषायो मधुमधुरो मदिरामृताशिवानाम् ।
अहमिव सततं तव प्रकोपं चरणसरोरुहयोर्लुठन् हठेन ॥६७॥

विषमज्वर में मदिरादि क्वाथ—यह धवका फूल, गुडुची तथा आंवला का क्वाथ शहद से मीठा कर देने से विषम ज्वर को ऐसे ही हरता है, जैसे मैं तुम्हारे चरणकमलों में हठ से गिरता हुआ तुम्हारे क्रोध को हरता हूँ ॥ ६७ ॥

विषमज्वरेऽमृतादिक्काथः—

अबले ! कमलातनुरक्तकले ! चलदृक्कमले ! धृतकामकले !
अमृताऽब्दशिवं मधुमद्विषमे ! विषमे विषमेषु विलासरते ! ॥ ६८ ॥

विषम ज्वर में अमृतादि क्वाथ—हे अबले ! (स्वल्प बलवाली !) लक्ष्मी के शरीर की तरह कुछ लाल वर्ण वाली ! कमल की तरह चञ्चलनेत्र वाली ! और काम की कला में अनुराग रखनेवाली ! एवं काम से मधुर शब्द को धारण करनेवाली ! अनुपम सुन्दरी ! गुडूची, मोथा तथा आंवला का शहद मिला हुआ क्वाथ विषमज्वर में लाभ दायक है। अर्थात् विषमज्वर को नष्ट करता है ॥ ६८ ॥

ज्वरहरं धूपनम्—

अयि ! कुशाग्रसमानमते ! मते ! मतिमतामतिमन्मथमन्थरे !
ज्वरहरं रुगरिष्टशिवावचायवहविर्जतुसर्षपधूपनम् ॥ ६९ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्वरहरधूप—हे बुद्धिमानों से सम्मानित तीक्ष्ण बुद्धिवाली! अत्यधिक काम के कारण मन्दगामिनी! कूठ, नीम की पत्ती, आंवला, वच, इन्द्रजव, घी, लाख तथा पीले सरसों इन सबों का धूप ज्वर को नष्ट करता है ॥ ६९ ॥

एकस्मिन् दिने द्विवारमागच्छतो ज्वरस्यौषधम्—

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटाम्भोधरैः कृतः।
क्वाथः पुनः समायान्तं ज्वरं शीघ्रं विनाशयेत् ॥ ७० ॥

एक दिन में दो बार आने वाले ज्वर का औषध—कुटकी, खस, वरियार, धनियां पित्तपापड़ा तथा नागरमोथा इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ एक दिन में दो बार आने वाले ज्वर को शीघ्र ही नाश करता है ॥ ७० ॥

विषमज्वरक्षयादिरोगेषु घृतविशेषः—

गोपीक्ष्व्यामलकीस्थिरामगधजातिक्तापयःपालिनी-
द्राक्षाश्रीफलधावनीहिमविषामुस्तेन्द्रजैः साधितम्।
स्यादाज्यं विषमज्वरक्षयशिरःपार्श्वव्यथाऽरोचक—
च्छर्दिःशोफहलीमकप्रशमनं लीलालतामञ्जरि ! ॥ ७१ ॥

विषमज्वर क्षय आदि रोगों में घृत—हे लीलारूपी लता की मञ्जरी! सारिवा, भुईं आंवला, शालपर्णी, पीपर, कुटकी, सुगन्धबाला त्रायमाणा, मुनक्का, कच्चा बेल, बड़ी भटकटैया, चन्दन, अतीस, मोथा तथा इन्द्रयव (समभाग) इन सबों के साथ सिद्ध किया हुआ (स्नेह पाक विधि के अनुसार) घृत विषम-ज्वर, क्षय, शिर के एकपार्श्व की पीड़ा (अधकपारी), अरोचक, वमन, शोथ तथा हलीमक (पाण्डु विशेष) इन सबों को शान्त करता है ॥ ७१ ॥

कर्मजज्वरोपायाः—

चलदलतरुसेवा होममन्त्रौ त्रिनेत्र-
द्विजसुरगुरुपूजा कृष्णनाम्नां सहस्रम्।
मणिधृतिपरिदानान्याशिषस्तापसानां-
सकलमिदमरिष्टं स्पष्टमष्टज्वराणाम् ॥ ७२ ॥

कर्मजन्यज्वर के उपाय—पीपल के वृक्ष की सेवा, हवन, मन्त्र का जप, शंकर भगवान, ब्राह्मण, देवता तथा गुरुओं की पूजा, विष्णुसहस्र नाम का

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जप, पद्मराग आदि मणियों का धारण, घृतकुम्भादि का दान तथा तपस्वियों का आशीर्वाद ग्रहण करना--ये सब आठों प्रकार के ज्वरों को अच्छी तरह नाश करने वाले हैं ॥ ७२ ॥

ज्वरयुक्तज्वरमुक्तयोर्हितोपदेशः—

अयि रत्नकले ! कलानिधे ! कुशले ! कोकिलकोमलस्वरे ! ।
ज्वरवाञ्ज्वरवर्जितोऽथवा लघुकुर्यादशनं दिनात्यये ॥७३॥

इति श्रीलोलिम्बराजकृत वैद्यजीवने ज्वरप्रतिकारः प्रथमोविलासः समाप्तः ।

ज्वर पीडित एवं ज्वर मुक्त के लिए हितकर उपदेश—हे स्त्रीजाति में रत्न-स्वरूपा ! (श्रेष्ठ स्त्री !) कलाओं को जानने वाली ! प्रत्येक कार्य में कुशल ! कोकिल के समान स्वर वाली ! हे सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी ! ज्वर पीड़ित या ज्वर मुक्त पुरुष दिन के अन्त में हल्का भोजन करे ॥ ७३ ॥

सानुवाद वैद्यजीवन में ज्वरप्रतीकार नामक प्रथम विलास समाप्त ।

अथ द्वितीयो विलासः

ज्वरातिसारचिकित्सायाममृताऽऽदिक्वाथः —

अमृताऽतिविषासुरराजयवस्तनयित्नुकिरातकविश्वपयः ।
अतिसारहरं ज्वरनाशकरं शृणु निर्जितकुञ्जरकुम्भकुचे ॥ १ ॥

ज्वरातिसार की चिकित्सा में अमृतादि क्वाथ—हे अपने स्तनों से हाथी के गण्डस्थल को जीतने वाली ! सुनो, गुडूची, अतीस, इन्द्रजव, नागरमोथा, चिरायता तथा सोंठ (सम भाग) इन सबों का क्वाथ अतिसार तथा ज्वरातिसार को नष्ट करता है ॥ १ ॥

सर्वातिसारघ्नः शीतारिकषायः—

शीतोशीरकयुग्मवत्सकवृकीपद्माह्वधान्यामृताभूनिम्बा-
म्बुदवालबिल्वकविषाविश्वौषधैः साधितः ।
क्वाथो माक्षिकसाक्षिको विजयते हृल्लासतृष्णावमी-
दाहारोचकसङ्गभङ्गचतुरः सर्वातिसारामयान् ॥ २ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभी प्रकार के अतिसारों को नाश करने वाला शीतादि कषाय—लाल चन्दन, दोनों खस (वीरण मूल तथा लामज्जक), कुटज की छाल, पाठा, पद्मकाठ, धनिया, गुडूची, चिरायता, मोथा, नेत्रबाला, बेल का गूदा; अतीस तथा सोंठ (समभाग) इन ओषधियों का क्वाथ मधु के साथ सेवन करने से हिचकी, प्यास, वमन, दाह, अरुचि तथा सभी प्रकार के अतिसारों को नाश करने में समर्थ है ॥ २ ॥

ज्वरातिसारे पञ्चमूल्यादिक्वाथः—

पञ्चाङ्घ्रिवृक्यब्दबलेन्द्रबीजत्वकसेव्यतिक्तामृतविश्वबिल्वैः ।
ज्वरातिसारान् सवमीन् सकासान् सश्वासशूलाञ्छमयेत्कषायः ॥३॥

ज्वरातिसार में पञ्चमूल्यादि क्वाथ——लघुपञ्चमूल (सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा तथा गोखरू), पाठा, मोथा, खिरेटी, इन्द्रजव, कूड़ा का छाल, खस, कुटकी, गुडूची, सोंठ तथा बेल का गूदा (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ ज्वरातिसार, वमन, कास, श्वास तथा शूल को शान्त करता है ॥ ३ ॥

लघुबृहत्पञ्चमूलयोर्दोषानुसारिग्रहणनिर्देशः——

कफाधिके वा पवनाधिके वा द्वयाधिके वा गुरुपञ्चमूलम् ।
पित्ताधिके वा लघुपञ्चमूलं पुनः पुनः पृच्छसि किं मृगाक्षि ! ॥ ४ ॥

लघुपञ्चमूल तथा बृहत्पञ्च मूल को दोषानुसार ग्रहण करने का निर्देश——हे मृगनयनी ! तुम बार-बार क्या पूछ रही हो ? कफ की अधिकता में या वात की अधिकता में अथवा वात-कफ दोनों की अधिकता हो ऐसे ज्वरातिसार में गुरुपञ्च[1] मूल, तथा जिस अतिसार में पित्त की अधिकता हो उसमें लघुपञ्चमूल[2] को ग्रहण करना चाहिए । (लोलिम्बराज की पत्नी के पञ्चमूल के सम्बन्ध में पूछने पर उसके उत्तर में उन्होंने कहा है । प्रकरणवश यहाँ अतिसार का निर्देश किया जा रहा है किन्तु सामन्यतः किसी भी रोग में वात-कफ का अकेले या दोनों के

---

१. श्रीफलः सर्वतो भद्रा पाटलागणकारिका ।
स्योनाकः पञ्चभिश्चैते पञ्चमूलं बृहन्मतम् ॥
२. शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका ।
गोक्षुरः पञ्चभिश्चैते कनिष्ठं पञ्चमूलकम् ॥ (भाव प्र० नि०)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिलकर प्रकोप होने पर वृहत्पञ्चमूल तथा पित्त प्रकोप होने पर लघुपंचमूल ग्रहण करना चाहिए। वेल[1] का फल कच्चा ही लेना चाहिए) ॥ ४ ॥

शोकातिसारचिकित्सा—

सदेवदारुः सविषः सपाठः सजन्तुशत्रुः सघनः सतीक्ष्णः।
सवत्सकः क्वाथ उदाहृतोऽसौ शोकातिसाराम्बुधिकुम्भजन्मा ॥ ५ ॥

शोकातिसार की चिकित्सा—देवदारु, अतीस, पाठा, वायविडंग, नागरमोथा, काली मिर्च तथा कूड़ा का छाल इन सबों का क्वाथ शोकजन्य अतिसार रूपी समुद्र के लिये अगस्त्य ही है। अर्थात् शोक जन्य अतिसार को नाश करता है। (जैसे अगस्त्य मुनि ने समुद्र का पान कर लिया था वैसे ही यह क्वाथ अतिसार रूपी समुद्र को नाश करता है) ॥ ५ ॥

अतीसारचिकित्सायां, बालकादिक्काथः—

अयि प्रिये ! प्रीतिभृतां मुरारौ किं बालकश्रीघनधान्यविश्वैः।
यस्याप्यतीसाररुजो न तस्य किं बालकश्रीघनधान्यविश्वैः ॥ ६ ॥

अतिसार में बालकादि क्वाथ—हे प्रिये! श्रीकृष्ण में प्रेम करने वालों के लिये पुत्र, लक्ष्मी, धन तथा विश्वप्रपञ्च से क्या प्रयोजन है। अर्थात् कृष्णभक्तों के लिये इन सब चीजों की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार जो व्यक्ति अतिसार से पीड़ित नहीं है उसको सुगन्धवाला, वेल, नागरमोथा तथा सोंठ से कोई प्रयोजन नहीं है। अर्थात् इन सबों का समभाग क्वाथ अतिसार[2] को नाश करता है ॥ ६ ॥

धान्यचतुष्कक्काथः—

पित्तातिसारो धान्याम्बुबिल्वाब्दानां निरुद्ध्यते।
केनाऽत्र ज्ञायते कर्त्ता पण्डितेन त्वया विना ॥ ७ ॥

---

१. फलेषु परिपक्वेषु यो गुणः समुदाहृतः।
बिल्वादन्यत्र स ज्ञेयो बिल्वमामं गुणोत्तरम् ॥

२. संशम्यपां धातुरग्निं प्रवृद्धो वर्चोमिश्रो वायुनाऽधः प्रणुन्नः।
सरत्यतीवातिसारं तमाहुर्व्याधिं घोरं षड्विधं तं वदन्ति ॥
एकैकशः सर्वशश्चाति दोषैः शोकेनान्यः षष्ठ आमेन चोक्तः।
(माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धान्यचतुष्कक्वाथ—धनियां, नेत्रबाला, बेल का गूदा तथा नागरमोथा इन सबों के जल (क्वाथ) से पित्तातिसार नष्ट हो जाता है इसको तुम्हारे बिना कौन पण्डित जानता है ? या इस श्लोक में कौन कर्त्ता है यह तुम्हारे बिना कौन जान सकता है। श्लोक में "केन", कर्ता है जिसका अर्थ है 'किसने'; पक्षान्तर में 'क' का अर्थ जल है। अर्थात् उपर्युक्त द्रव्यों के जल (क्वाथ) से अतिसार रोग नष्ट होता है यह अभिप्राय है ॥ ७ ॥

इन्द्रजादिचूर्णप्रयोगः—

इन्द्रजमेघमदाकुसुमश्रीरोध्रमहौषधमोचरसानाम् ।
चूर्णमिदं गुडतक्रसमेतं हन्त्यचिरादतिसारमुदारम् ॥ ८ ॥

इन्द्रजादि चूर्ण का प्रयोग—इन्द्रयव, नागरमोथा, धाय का फूल, बेल का गूदा, लोध, सोंठ तथा मोचरस (सेमल का गोंद) इन सबों का चूर्ण गुड़ तथा मठ्ठा के साथ सेवन करने से शीघ्र ही प्रबल अतिसार को नाश करता है ॥ ८ ॥

शुण्ठ्यादिचूर्णप्रयोगः—

कल्याणि ! काञ्चनलताललिताङ्गयष्टे !
ताम्बूलशालिवदने ! ललने ! शृणुष्व ।
शुण्ठीमदाकुसुममोचरसाजमोदा-
स्तक्रान्विताः प्रशमयन्त्यतिसारमुग्रम् ॥ ९ ॥

शुण्ठ्यादिचूर्ण का प्रयोग—हे कल्याणकारिणि ! स्वर्णलता की तरह सुन्दर अंगवाली ! पान खाने से सुन्दर मुखवाली, स्त्रियों में श्रेष्ठ ! तुम सुनो, सोंठ, धाय का फूल, मोचरस (सेमर का गोंद), तथा अजमोद (समभाग) इन द्रव्यों का चूर्ण मठ्ठा के साथ मिलाकर पान करने से तीव्र अतिसार को नष्ट करता है ॥ ९ ॥

श्यामाप्रयोगः—

अतिसारप्रशमनी चित्रपत्रकशोभिता ।
वृद्धिदाऽतनुवह्नेश्च श्यामा श्यामेव राजते ॥ १० ॥

श्यामा का प्रयोग—जल पीपर से युक्त सरिवा अतिसार को नष्ट करनेवाली होती है, और मन्दाग्नि वाले व्यक्ति के जाठराग्नि को बढ़ाती है। जैसे

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्यामा[1] स्त्री (षोडशवर्षीया) पत्र-पुष्पादि की चित्र-विचित्र रचना एवं कस्तूरी आदि के लेप से सुगन्धित कुच वाली अपनी रचना विशेष से संगम करनेवाले व्यक्ति के बल को नष्ट करती है और दुर्बलों के कामाग्नि को बढ़ाती है ॥ १० ॥

कुटजादिक्वाथः—

बाले ! बाललताप्रबालललिताकाराङ्घ्रिहस्ताधरे !
मल्लीमाल्यलसत्कुचक्षितिधरे ! रत्नज्वलन्मेखले !
चञ्चत्कुण्डलमण्डले ! विजयते रक्तामशूलान्विता-
तीसारं कुटजाब्दबिल्वकविषोदीच्यैः कषायः कृतः ॥ ११ ॥

कुटजादिक्काथ—हे बाले ! कोमल लता के नवीन मनोहर लालपल्लव के समान हाथ-पैर तथा अधरवाली ! चमेली की माला से सुशोभित कुचस्थल-वाली ! माणिक्य-मुक्तादि से देदीप्यमान मेखलावाली ! तथा चञ्चल कुण्डल से प्रकाशमान कपोलवाली ! प्रिये ! कूड़ा का छाल, नागरमोथा बेल का गूदा, अतीस तथा नेत्रबाला का बनाया हुआ क्काथ रक्त, आम तथा शूल से युक्त अतिसार को जीत लेता है। अर्थात् यह क्काथ, शूल युक्त रक्तातिसार एवं आमा-तिसार को नष्ट करता है ॥ ११ ॥

बृहद्गङ्गाधराख्यं चूर्णम्—

धातक्यामलकीपयोधरवृकीकट्वङ्गयष्टीमधु-
श्रीजम्ब्वाम्रफलास्थिनागरविषाह्रीवेरलोध्रेन्द्रजैः ।
तुल्यांशैर्विहितं सतण्डुलजलं गंगाधराख्यं मह-
च्चूर्णं तूर्णमपाकरोति सकलं जीर्णातिसारं परम् ॥ १२ ॥

बृहद् गङ्गाधर चूर्ण—धाय का फूल, आँवला, नागरमोथा, पाठा, कट्वङ्ग (सोनापाठा), मुलेठी, बेल की गिरि, जामुन ताथा आम की गुठली, सोंठ, अतीस, नेत्रबाला, लोध तथा इन्द्रयव (सममाग) इन औषधियों का चूर्ण चावल के धोवन के साथ सेवन करने से पुराने सभी प्रकार के अतिसारों को शीघ्र हो अच्छी तरह दूर करता है। यह बृहद् गङ्गाधर नामक चूर्ण है ॥२१॥

१. श्यामा गुणवती कान्ता प्रिया मधुरभाषिणी ।
रतेषु दृष्टा या नारी सा स्त्री वृष्यतमा स्मृता ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रक्तातिसारे दाडिमवत्सकत्वक्क्वाथः—

अयि ! कन्दुकनिन्दकस्तनि ! प्रमदारूपमदापहारिणि !
रुधिरातिसृतौ कषायकः समधुर्दाडिमवत्सकत्वचः ॥ १३ ॥

रक्तातिसार में अनार तथा कुटज के छाल का क्वाथ—हे गेंद को तिरस्कृत करनेवाले स्तनोंवाली तथा सुन्दर स्त्रियों के सौंदर्य के घमण्ड को अपहरण करने वाली प्रिये ! अनार तथा कूड़ा के छाल का क्वाथ शहद मिलाकर रक्तातिसार में सेवन करना श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥

घृष्टचन्दनप्रयोगः—

चन्दनं विमलतण्डुलाम्बुना संयुतं मधुयुतं सितायुतम् ।
तृड्विखण्डनमसृग्विखण्डनं खण्डनं प्रचुरदाहमेहयोः ॥ १४ ॥

घिसे हुए चन्दन का प्रयोग—घिसा हुआ सफेद चन्दन, निर्मल चावल का धोवन, शहद तथा शक्कर मिलाकर सेवन करने से प्यास को नाश करता है, रक्त स्राव को रोकता है तथा प्रबल दाह एवं प्रमेह को नष्ट करता है ॥ १४ ॥

सगुडबालबिल्वप्रयोगः—

कुक्षिशूलामशूलघ्नं विविधास्रातिसारजित् ।
सेवेत सगुडं बिल्वं बिल्वतुल्यपयोधरे ! ॥ १५ ॥

गुड़ तथा कच्चे बेल का प्रयोग—हे बिल्वफल के समान स्तनोंवाली ! उदर-शूल, आम शूल तथा अनेक प्रकार के रक्त विकारों को जीतने वाले कच्चे बेल के फल के चूर्ण को गुड़ के साथ सेवन करे ॥ १५ ॥

अतिसारिणोऽसाध्यतायां कर्त्तव्यकर्मोपदेशः—

तृट्श्वासकासज्वरशोफमूर्च्छाहिक्काऽन्नविद्वेषणवान्तिशूलैः ।
युक्तोऽतिसारी स्मरतु प्रसह्य गोविन्ददामोदरमाधवेति ॥ १६ ॥

असाध्य-अतिसार के रोगी के लिये कर्तव्य कर्म—प्यास, श्वास, कास, ज्वर, शोथ, मूर्च्छा (बेहोशी), हिचकी, अन्न में अरुचि, वमन तथा शूल इन सब उपद्रवों से युक्त अतिसार का रोगी हठपूर्वक हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माधव ! ऐसा स्मरण करे। अर्थात् उपर्युक्त उपद्रवों से युक्त अतिसार का रोगी असाध्य[1] होता है ॥ १६ ॥

ग्रहणीरोगचिकित्सा—

यवानीनागरोशीरधनिकातिविषाघनैः ।
बलाबिल्वह्रिपर्णीभिर्दीपनं पाचनं स्मृतम् ॥ १७ ॥

ग्रहणीरोगचिकित्सा—अजवायन, सोंठ, खस, धनियां, अतीस, नागरमोथा, बरियार, बेल का गूदा, सहिवन, तथा पिठवन (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ [2]ग्रहणीरोग में अग्निवर्द्धक तथा दोषों को पचानेवाला होता है ॥ १७ ॥

पुनर्नवाऽऽदिक्काथः—

पुनर्नवावल्लिजवाणपुङ्खाविश्वाग्निपथ्याचिरविल्वबिल्वैः ।
कृतः कषायः शमयेदशेषान् दुर्नामगुल्मग्रहणीविकारान् ॥ १८ ॥

पुनर्नवादिक्काथ—पुनर्नवा (गदहपूर्ना), वल्लिज (मरिच), वाणपुङ्खा (शरफोका), सोंठ, चित्रक, हरें, चिरविल्व (करञ्जबीज), तथा बेल की गिरी (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ सभी प्रकार के अर्श रोग गुल्मरोग तथा ग्रहणी के विकारों को शान्त करता है ॥ १८ ॥

शुण्ठयादिक्काथः शुण्ठीघृतं च--

शुण्ठीच्छिन्नरुहाविषाजलधरैस्तुल्यैः कषायः कृतो-
मन्दाग्नौ ग्रहणीगदेऽपि सततं सामानुबन्धे हितः ।
शुण्ठीकल्ककृतं घृतं प्रपिबतः पाण्डवामकासापहं-
स्याद्वायोरनुलोमनं ग्रहणिका वेगेन जङ्गम्यते ॥ १९ ॥

---

१. शोथं शूलं ज्वरं मूर्च्छां श्वासं कासमरोचकम् ।
छर्दिं तृष्णां च हिक्कां च दृष्ट्वातिसारिणं त्यजेत् ॥ (इत्यसाध्यलक्षणम्)
स्नानावगाहनाभ्यङ्गं गुरुस्निग्धादिभोजनम् ।
व्यायामाग्निसंतापमतिसारी विवर्जयेत् ॥ (इत्यतिसारिणोऽपथ्यानि)

२. अतिसारे निवृत्तेऽपि मन्दाग्नेरहिताशनः ।
भूयः संदूषितो वह्निः ग्रहणीमभिदूषयेत् ॥
एकैकशः सर्वशश्च दोषैरत्यर्थमूर्छितैः ।
सा दुष्टा बहुशो भुक्तमाममेव विमुञ्चति ॥
पक्वं वा सरुजं पूति मुहुर्बद्धं मुहुर्द्रवम् ।
ग्रहणीरोगमाहुस्तमायुर्वेदविदोजनाः ॥ (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुण्ठ्यादि क्वाथ तथा घृत--सोंठ, गुडूची, अतीस तथा नागरमोथा समभाग इन द्रव्यों का बनाया हुआ क्वाथ मन्दाग्नि तथा आमानुबन्धि ग्रहणी रोग में भी हमेशा लाभदायक होता है। सोंठ के कल्क से सिद्ध किया हुआ (घृत निर्माण-विधि के अनुसार) घृत पान करने से पाण्डुरोग, आमदोष तथा कास (खाँसी) को नाश करता है तथा वायु को अनुलोमन करता है एवं ग्रहणी रोग वेगपूर्वक (शीघ्रातिशीघ्र) दूर हो जाता है ॥ १६ ॥

पाठाऽऽदिचूर्णम्--

पाठाविषाकुटजवृक्षफलत्वगब्दतिक्तामदारसजनागरबिल्वचूर्णम् ।
सक्षौद्रतण्डुलजलं ग्रहणीप्रवाहरक्तप्रवाह-गुदरुग्गुदजेषु दद्यात् ॥२०॥

पाठादिचूर्ण--पाठा, अतीस, कूड़ा की छाल तथा फल (इन्द्रजव) नागरमोथा, कुटकी, धाय का फूल, रसाञ्जन (रसौंत), सोंठ तथा बेल की गिरि (समभाग) इन द्रव्यों का चूर्ण शहद तथा चावल के धोवन (तण्डुलोदक) के साथ ग्रहणी विकार, प्रवाहिका (आँव), रक्तातिसार तथा गुदा की पीड़ा एवं गुदजरोग (अर्श-बवासीर) में प्रयोग करें ॥ २० ॥

चन्द्रकलाचूर्णम्--

तुल्यांशं सकलं किरातकटुकामुस्तेन्द्रजत्र्यूषणं-
भागश्चन्द्रकलामितः कुटजतो भागद्वयं चित्रकात् ।
चूर्णं चन्द्रकलाऽभिधं गुडपयोयुक्तं च पाण्डुज्वरा-
तीसारारुचिकामलाग्रहणिकागुल्मप्रमेहापहम् ॥ २१ ॥

चन्द्रकलाचूर्ण--चिरायता, कुटकी, मोथा, इन्द्रयव, त्र्यूषण (सोंठ, पीपर, मरिच) ये सब समभाग, कूड़ा की छाल सोलह भाग, चित्रक दो भाग, इन सबों को एकत्र कर चूर्ण बनावे। यह चन्द्रकला नामक चूर्ण गुड़ तथा शीतल जल के साथ सेवन करने से पाण्डुरोग, ज्वर, अतिसार, अरुचि, कामलारोग, ग्रहणीविकार, गुल्मरोग तथा प्रमेह को नष्ट करता है ॥ २१ ॥

क्षारद्वन्द्वादिचूर्णम्--

क्षारद्वन्द्वपटुत्रिकत्रिकटुकैश्चव्याजमोदानलैः
कृष्णामूलकहिङ्गुजीरमिशिभिस्तुल्यैर्विधेयं रजः ।
पीतं कोष्णजलेन कोलपयसा तक्रेण वाऽन्यौषधाद्-
धृतक्षुद्गुल्मगुदाङ्कुरग्रहणिषु प्रायः प्रियं प्रेयसि ! ॥ २२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्षारद्वन्द्वादि चूर्ण—हे प्रिये! सज्जीखार, जवाखार, तीनों नमक (विड-नमक, खारी नमक, सेन्धा नमक), त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच), चव्य, अज-वायन, चित्रक, पिपरामूल, हिंगु, जीरा तथा सौंफ समभाग इन द्रव्यों को एकत्र कर चूर्ण बनावे और इस चूर्ण को गरमजल, कौल (झरबैरिया) के क्काथ या मट्ठा के साथ पान करने से अन्य औषधों की अपेक्षा हृदयरोग, मन्दाग्नि, गुल्मरोग, अर्शरोग तथा ग्रहणीरोग में प्राय अधिकतर लाभदायक होता है ॥२०॥

द्विक्षारादिचूर्णम्—

द्विक्षारषट्कटुपटुव्रजहिङ्गुदीप्यैः स्यात्सारलुङ्गबदरैकरसेन युक्तम्।
श्लेष्मानिलग्रहणिकागुदजे प्रशस्तं लोकत्रयैकमतिदीपनपाचनेऽलम्॥

द्विक्षारादिचूर्ण—दोनों क्षार (सज्जीखार, जवाखार), षट्कटु (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मरिच), पटुव्रज (पांचों नमक—सेन्धानमक, सोंचरनमक, खारीनमक, सामुद्रनमक, साँभरनमक या साभारनमक), हींग तथा सौंफ समभाग इन द्रव्यों का चूर्ण अम्लवेंत का रस, बिजौरानींबू का रस तथा झरबैरिया का रस इनमें से किसी एक के रस से भावित कर सेवन करने से कफजन्यरोग, ग्रहणीविकार तथा अर्शरोग में लाभदायक होता है। तीनों लोक में दीपन तथा पाचन के लिए यह एक ही चूर्ण पर्याप्त है ॥ २३ ॥

चित्रकादिचूर्णम्—

चूर्णं चित्रकचव्यश्रीविश्वभेषजनिर्मितम्।
तक्रेण सहितं हन्ति ग्रहणीं दुःखकारिणीम् ॥ २४ ॥

चित्रकादिचूर्ण—चित्रक, चव्य, बेल की गिरि तथा सोंठ (समभाग) इन द्रव्यों का बनाया हुआ चूर्ण मट्ठा के साथ सेवन करने से दुःख देने वाली भयंकर ग्रहणी को नष्ट करता है ॥ २४ ॥

रुचकादिचूर्ण—

रुचकाग्निमरीचानां चूर्णं तक्रेण सेवितम्।
ग्रहण्युदरगुल्मार्शःक्षुन्मान्द्यप्लीहनाशनम्॥ २५ ॥

रुचकादिचूर्ण—सौवर्चलनमक (सोंचरनमक), चित्रक तथा मरिच का चूर्ण मट्ठा के साथ सेवन करने से ग्रहणी, उदररोग, गुल्मरोग, अर्श, मन्दाग्नि तथा प्लीहावृद्धि को नाश करता है ॥ २५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पयोधरादिघृतम्--

आज्यं पयोधरजलेन्द्रजवालविल्व-
ह्रीवेरमोचरसकल्कयुतं विपक्वम्।
आमानुबन्धसहितं रुधिरान्वितं च
सद्यो निहन्ति गृहणि! ग्रहणीविकारम्॥ २६॥

वैद्यलोलिम्बराजकृत वैद्यजीवनेऽतिसारग्रहणीप्रतिकारोनाम
द्वितीयो विलासः समाप्तः।

पयोधरादिघृत--हे गृहस्वामिनी! नागरमोथा, खस, इन्द्रजव, कच्चाबेल की गिरि, नेत्रबाला, तथा मोचरस (सेमर का गोंद) समभाग इन सबों के कल्क के साथ सिद्ध किया हुआ (घृत निर्माण-विधि के अनुसार) घृत आमानुबन्ध सहित रक्त से युक्त ग्रहणी के विकारों को शीघ्र ही नाश करता है॥ २६॥

वैद्य लोलिम्बराजकृत वैद्यजीवन में अतिसार-ग्रहणी प्रतीकार नामक
द्वितीय विलास समाप्त।

अथ तृतीयो विलासः

अथ श्वासकासादीनां चिकित्सामाह—

तत्र बृहत्पञ्चमूलीक्वाथः—

अतः परं कोमलवाणि! कासश्वासप्रतीकारमुदीरयामः।
निहन्ति कासं गुरुपञ्चमूलीकृतः कषायश्चपलासहायः॥ १॥

श्वास-कासचिकित्सा में पञ्चमूलीक्वाथ—हे मधुर बोलने वाली! अब इसके बाद श्वास-कास की चिकित्सा कहता हूँ। बृहत्पञ्चमूल (बेल की छाल, अरणी, सोनापाठा, पाढल, गम्भारी की छाल) का बनाया हुआ क्वाथ पीपर के चूर्ण के साथ सेवन करने से कास (खाँसी) को नष्ट करता है॥ १॥

घनादिगुटिका—

घनविश्वशिवागुडजा गुटिका त्रिदिनं वदनाम्बुजमध्यधृता।
हरति श्वसनं कसनं ललने! ललनेव हिमं हृदयोपगता॥ २॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घनादिगुटिका—हे ललने ! (कामिनि !) नागरमोथा, सोंठ, तथा हर्रे समभाग इन सबों का चूर्ण लेकर दुगुने गुड़ के साथ मिलाकर बनाई हुई वटी कमल रूपी मुख में धारण करने से श्वास तथा कास को दूर करती है। जैसे हृदय से लिपटाई गई कामिनी स्त्री ठंढक को दूर करती है ॥ २ ॥

विभीतकावलेहः—

अजस्य मूत्रस्य शतं पलानां शतं पलानां च कलिद्रुमस्य ।
पक्वं समध्वाशु निहन्ति कासं श्वासं च तद्वत् सबलं बलासम् ॥ ३॥

विभीतकावलेह—एक सौ पल (४ किलो ६६५ ग्राम ५२० मि० ग्रा०) बकरी का मूत्र तथा एक सौ पल बहेड़े का छिलका इन दोनों को लेकर अच्छी तरह पकावे अवलेहवत् हो जाने पर उतार कर ठंढा कर ले और शहद (चौथाई भाग १ किलो २५० ग्राम) मिलाकर अवलेह तैयार कर ले। यह अवलेह सेवन करने से श्वास, कास तथा उसी प्रकार बलवान् कफ का भी नाश करता है ॥३॥

आर्द्रकपाकः—

आर्द्रार्द्धतुला गुडादपि तथाऽर्द्धांशं च कुस्तुम्बरी-
दीप्यायोजरणात्रिजातजलदाद् दर्व्या पचेद्युक्तितः ।
लेहो रत्नकले ! तवैव कथितः प्राणप्रियाया मया
कासार्शोज्वरपीनसश्वयथुरुग्गुल्मक्षयध्वंसनः ॥ ४ ॥

आर्द्रकपाक (आदीपाक)—अदरख का रस आधा तुला (२ किलो ३३३ ग्राम ५२० मिली ग्राम) गुड़ आधा तुला तथा धनिया, अजवायन, लौहभस्म, कालाजीरा, दालचीनी, इलायची, तेजपात तथा नागरमोथा, प्रत्येक तीन पल छः माशे (१४० ग्राम) इन सबों को एकत्र कर। धनियाँ आदि आठ ओषधियों को महीन चूर्ण कर ले। इसके बाद पहले अदरख का रस तथा गुड़ को पकावे थोड़ा गाढ़ा होने पर चूर्ण को कलछी से मिला कर अवलेहवत् पाक कर ले। हे रत्नकले ! (लोलिम्ब राज की पत्नी का नाम) प्राणप्रिया तुम्हारे लिये ही मैंने कहा है। यह अवलेह कास (खाँसी), बवासीर, ज्वर, पीनस (दुर्गन्ध युक्त नासा स्राव), शोथ, गुल्मरोग तथा क्षयरोग को नष्ट करता है ॥ ४ ॥

चिन्तामणिचूर्णम्—

रास्नाबलापद्मकदेवदारुफलत्रिकत्र्यूषणवेल्लचूर्णम् ।
चिन्तामणिं क्षौद्रघृतोपपन्नं श्वासं च कासं च निराकरोति ॥ ५ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चिन्तामणिचूर्ण—रासन, बरियार, पद्मकाठ, देवदारु, हर्रे, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, मिरिच, पीपर तथा वायविडंग (सम भाग) इन द्रव्यों का चूर्ण बनावे। यह चिन्तामणि नामक चूर्ण विषममात्रा में घृत तथा मधु मिलाकर सेवन करने से श्वास तथा कास को दूर करता है ॥ ५ ॥

वासाऽऽदि क्वाथः—

वासाहरिद्रामगधागुडूचीभार्ङ्गीघनानागरधावनीनाम्। क्वाथेन मारीचरजोऽन्वितेन श्वासः शमं याति न कस्य पुंसः ॥ ६ ॥

वासादिक्वाथ—अड़ूसा, हल्दी, पीपर, गिलोय, बभनेटी, घना (रुद्रजटा), सोंठ तथा भटकटैया (समभाग) मरिच के चूर्ण से युक्त इन द्रव्यों के क्वाथ से किस पुरुष का श्वास शान्त नहीं होता है। अर्थात् इस क्वाथ के सेवन से श्वास रोग शान्त होता है ॥ ६ ॥

लवङ्गादिगुटिका—

तुल्या लवङ्गमरिचाक्षफलत्वचः स्युः
सर्वैः समो निगदितः खदिरस्य सारः।
बब्बूलवृक्षजकषाययुतश्च चूर्ण
कासान्निहन्ति गुटिका घटिकाऽष्टकान्ते ॥ ७ ॥

लवङ्गादिगुटिका—लवङ्ग, मरिच तथा बहेड़ा के फल की छिलका समभाग, सबके बराबर खैर सार मिलाकर चूर्ण करे और इस चूर्ण को बब्बूल की छाल के क्वाथ की भावना देकर बटी बनावे। यह गुटिका आठ घड़ी के बाद ही सभी प्रकार के कास (खाँसी) को नाश करती है ॥ ७ ॥

नागरक्वाथः—

रूपं कीदृक् कमलवदने! नुः परे सौ गिरेः स्यात्
सम्बुद्धिः का मधुरवचने! काऽग्निबीजस्य षष्ठी।
कस्य क्वाथः श्वसनशमनो वल्लभेनेति पृष्टा
विद्वद्वन्द्या द्रुतमिदमदात्सोत्तरं नागरस्य ॥ ८ ॥

नागरक्वाथ—(प्रश्नोत्तर के रूप में यहाँ पर औषध का निर्देश किया गया है) लोलिम्बराज पूछते हैं कि हे कमल के समान मुखवाली! नृ शब्द का सु विभक्ति (प्रथमा के एक वचन) में कैसा रूप होता है? हे मधुर बोलनेवाली! गिरि के वाचक 'अग' शब्द के सम्बोधन में तथा अग्निबीज 'र' शब्द का षष्ठी

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभक्ति में कैसा रूप होता है, और किसका क्वाथ श्वास रोग को शान्त करता है? ऐसा पति के पूछने पर विद्वानों के द्वारा वन्दनीय लोलिम्बराज की पत्नी रत्नकला ने शीघ्र ही उत्तर दिया कि नागरस्य[1] यानी सोंठ का। अर्थात् सोंठ का क्वाथ श्वास रोग को शीघ्र ही शान्त करता है ॥ ८ ॥

सिंहीक्वाथः—

अयि रत्नकले! नीलनलिनच्छदवीक्षणे!
सिंहीकषायः सकणः कासग्रासकरः क्षणात् ॥ ९ ॥

भटकटैया का क्वाथ—हे नील कमल की पंखड़ियों के समान सुन्दर नेत्रोंवाली! रत्नकले! भटकटैया का क्वाथ पीपर का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शीघ्र ही कास को खा जाता है। अर्थात् कास को नाश करता है ॥ ९ ॥

पिप्पल्यादिचूर्णम्—

पिप्पली-पिप्पलीमूल-बिभीतक-महौषधैः ।
मधुना सेवितैः कासः प्रशाम्यति कुतूहलम् ॥ १० ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण—पीपर, पिपरामूल, बहेड़ा तथा सोंठ का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से कास रोग शान्त हो जाता है यह आश्चर्य का विषय है अर्थात् यह आश्चर्य है। यह चूर्ण इतना उत्तम है कि खाँसी ऐसा महान् रोग इस चूर्ण के सेवन से नष्ट हो जाता है ॥ १० ॥

कटुतैलाक्तगुड़प्रयोगः—

कटुतैलेन संयुक्तो गुडो यावन्न सेवितः।
तावन्नश्यति किं श्वासः पीयूषमधुराधरे! ॥ ११ ॥

सरसों के तैल से मिश्रित गुड़ का प्रयोग—हे अमृत के समान मधुर अधर वाली! जब तक सरसों के तैल से युक्त गुड़ का सेवन न किया जाय तब तक क्या श्वास रोग नष्ट हो सकता है। अर्थात् सरसों के तैल में गुड़ मिलाकर सेवन करने से श्वास रोग नष्ट हो जाता है ॥ ११ ॥

१. वातं निर्दलयन् कफं कवलयन्नुन्मूलयन् पीनसं
दृष्टिं निर्मलयन् प्रभां प्रवलयन् हृद्रोगमुत्सारयन् ॥
निःशेषं जठरामयं प्रशमयन्नुद्दीपयन् पावकं
कासश्वासनिरासनसाधनमसौ विश्वाकषायः कृतः ॥
(इत्यन्यत्रोक्ताः नागरक्वाथस्य गुणाः)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुखे बिभीतकधारणम्—

रावणस्य सुतो हन्यान्मुखवारिजधारितः।
श्वसनं कसनं चापि तमिवानिलनन्दनः॥ १२॥

मुख में विभीतक धारण करने का फल—कमल रूपी मुख में धारण किया हुआ रावण का सुत अक्ष (बहेड़ा) श्वास तथा कास को वैसे ही नाश करता है जैसे रावण के पुत्र अक्षय कुमार को हनुमान् जी ने मारा था॥ १२॥

शुण्ठीभार्ङ्गीक्वाथः—

अयि! प्राणप्रिये! जातिफलल्लोहितलोचने!
शुण्ठीभार्ङ्गीकृतः क्वाथः कसनश्वसनाहिराट्॥ १३॥

शुण्ठीभार्ङ्गीक्वाथ—हे प्राणप्रिये। जायफल के समान लोहित नेत्र वाली! सोंठ तथा बभनेटी का बनाया हुआ क्वाथ कास तथा श्वास के लिये सर्पराज है। अर्थात् यह क्वाथ श्वास-कास को वैसे ही नष्ट करता है जैसे सर्पराज अपने विषैला गुण से मनुष्यों को नष्ट कर देता है॥ १३॥

त्रिकटुचूर्णप्रयोगः—

संयुक्तो गुडसर्पिर्भ्यां चूर्णस्त्रिकटुसम्भवः।
निहन्ति तरसा श्वासं त्रासानिव सतां हरिः॥ १४॥

त्रिकटुचूर्ण का प्रयोग—गुड़ तथा घी के साथ मिलाया हुआ त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच) का चूर्ण अतिशीघ्र श्वास का नाश करता है जैसे विष्णु सज्जनों के भय का नाश करते हैं॥ १४॥

शृङ्गवेररसप्रयोगः—

शृङ्गवेररसो येन मधुना सह सेवितः।
श्वासकासभयं तस्य न कदाचित्कृशोदरि!॥ १५॥

अदरख के रस का प्रयोग—हे कृशोदरि! जिसने अदरख का रस मधु के साथ पान कर लिया है उसे श्वास तथा खाँसी का भय नहीं है। अर्थात् अदरख का रस मधु के साथ सेवन करने से श्वास-कास को नष्ट करता है॥१५॥

आटरूषक्वाथः—

पुलोमजावल्लभसूनुपत्नीतातात्मभूशेखरवाहनस्य।
सौन्दर्यदूरीकृतरामरामे। कषायकः कासमीरसर्पः॥ १६॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अड़्सा का क्वाथ—हे सीता से भी अधिक सौन्दर्यशालिनी! इन्द्राणी के पति इन्द्र का लड़का अर्जुन, उसकी पत्नी द्रौपदी उसके पिता का पुत्र शिखण्डी, अर्थात् सर्प है शिर का आभूषण जिसके यानी शंकर उनका वाहन वृष (=बैल, औषध पक्ष में—अड़ूसा) का क्वाथ वायुरूपी कास के लिये सर्प के समान है। अर्थात् जैसे सर्प वायु को खा जाता है वैसे ही अड़ूसे का क्वाथ खाँसी को नष्ट करता है ॥ १६ ॥

फलत्रयादिचूर्णम्—

फलत्रयं छिन्नरुहा सचित्रा रास्ना कृमिघ्नं सकटुत्रयञ्च।
चूर्णं समांशं सितया समेतं कासं जयेन्नात्र विचारणीयम् ॥ १७ ॥

फलत्रयादिचूर्ण—त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), गुडूची, चित्रक रास्ना, वायविडंग, सोंठ, पीपर तथा मरिच (समभाग) इन द्रव्यों का चूर्ण बराबर मिश्री के साथ सेवन करने से खांसी को नष्ट करता है ॥ १७ ॥

आमवातचिकित्सा—

एरण्डतैलयुक्तो दशमूलक्वाथः शुण्ठीक्वाथो वा—

दशमूलकषायमिश्रितं वा ललने! विश्वकषायमिश्रितं वा।
प्रपिबेत् कटिकुक्षिवस्तिशूले ध्रुवमेरण्डजमेकमेव तैलम् ॥ १८ ॥

आमवात[1] की चिकित्सा में दशमूलका क्वाथ या सोंठ का क्वाथ—हे ललने! कटिशूल, उदरशूल तथा वस्तिशूल में दशमूल (बेल, सोनापाठा, गम्भारी, पाढल, अरणी, सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा, गोखरू) कषाय या सोंठ के कषाय में केवल एरण्ड का तैल मिलाकर पान करें। अर्थात् यह योग वात रोग को नष्ट करता है ॥ १८ ॥

एरण्डतैलयुक्तरास्नादिक्वाथः—

रास्नाऽमृतानागरदेवदारुपञ्चाङ्घ्रियुग्मेन्द्रयवैः कषायः।
रुबूकतैलेन समन्वितोऽयं हर्त्ता भवेदामसमीरणस्य ॥ १९ ॥

एरण्डतैलयुक्तरास्नादिक्वाथ—रासन, गुडूची, सोंठ, देवदारु, दोनों दशमूल (बेल, सोनापाठा, गम्भारी, पाढल, अरणी, सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा, गोखरू) इन्द्रजव (समभाग) इन सब द्रव्यों का क्वाथ रेड़ी के तैल के साथ सेवन करने से यह आम वात को नष्ट करनेवाला होता है ॥ १९ ॥

---

१ विरुद्धाहारचेष्टस्य—इत्यारभ्य—आमसंज्ञां च लभते शिरोगात्ररुजाकरः ॥
(माधवनिदानस्यामवातरोगाधिकारे द्रष्टव्यम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विलासिनी विलासेन विलासिहृदयं यथा।
तथा गुडूची विश्वेन हरेदामसमीरणम् ॥ २० ॥

जिस प्रकार विलासिनी अपने विलास से विलासी पुरुष का हृदय अपने हावभाव से हर लेती है, उसी प्रकार गडूची का क्वाथ सोंठ के चूर्ण के साथ सेवन करने से आमवात को हर लेता है ॥ २० ॥

अथ नेत्ररोगचिकित्सा—

तत्र कुलत्थाद्यञ्जनम्—

सम्यक्स्विन्नाश्छगलजरसे काननोत्थाः कुलत्था-
श्चैले बद्धाः परिहृततुषाः प्रौढसीमन्तिनीभिः।
सूक्ष्मं पिष्टाः पटुरसनिशाचूर्णपूर्णाः क्षपायां
चक्षुःक्षिप्ताः सकलरुधिरं संहरन्ति त्र्यहेण ॥ २१ ॥

नेत्र रोग की चिकित्सा में कुलत्थाद्यञ्जन—वन में उत्पन्न और चतुर स्त्रियों के द्वारा भूसी निकाला हुआ कुलत्थ कपड़ा में बांधकर बकरी के दूध में दोलायन्त्र के द्वारा स्वेदन करे। पुनः उसको निकाल चतुर स्त्रियों के द्वारा पीसकर सेन्धा-नमक, रसवंत तथा हल्दी का चूर्ण मिलाकर रात में आँख में लगाने से तीन ही दिन में सभी प्रकार के रक्ताभिष्यन्द को नष्ट करता है ॥ २१ ॥

शिग्र्वञ्जनम्—

लोलिम्बराजकविना वनिताऽवतंसे!
शिग्रोरमुष्य कथितोऽस्ति किमूपयोगः।
एतस्य पल्लवरसात्समधोः किमन्यद्
दृग्व्याधिमात्रहरणे महिलाग्रगण्ये ॥ २२ ॥

सहिजन का अञ्जन—लोलिम्बराज की पत्नी से कोई सखी पूछती है कि हे स्त्रियों में श्रेष्ठ! लोलिम्बराज कवि ने इस सहजन का भी कोई उपयोग बताया है। इसके उत्तर में कहती है कि हे स्त्रियों में पहले गिनी जाने वाली! इसके (सहिजन) पत्तों का रस मधु मिलाकर आँख में लगाया जाय तो इससे बढ़ कर सभी प्रकार के नेत्ररोगों को नष्ट करने के लिए क्या और कोई औषध है? अर्थात् नेत्र रोग को दूर करने के लिये इससे बढ़ कर और कोई औषध नहीं है ॥ २२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्जुनघ्नमञ्जनम्—

कुवलयनयनेऽर्जुनं कफोऽब्धेः सह सितया सुनिराचरीकरोति।
प्रियकरमिव कामिनी नवोढा लघुकुचशालिनि! वक्षसि प्रयुक्तम् ॥२३॥

अर्जुनरोग को नष्ट करनेवाला अञ्जन—हे नीलकमल के समान नेत्रों वाली! समुद्र का कफ अर्थात् समुद्रफेन मिश्री या मधु के साथ आँख में लगाने से अर्जुन[1] नामक रोग को उसी प्रकार दूर करता है जैसे छोटे-छोटे स्तनों वाली नवोढ़ा स्त्री अपने प्रिय के द्वारा छाती की ओर बढ़ाते हुए हाथ को दूर कर देती है ॥ २३ ॥

समधुघृतत्रिफलाप्रयोगः—

इति निगदितमार्ये! नेत्ररोगातुराणां-
निशि समधुघृताऽभया सेव्यमाना सुखाय।
अयि! नवशिशुलीलालोलदृष्टे! त्वमभया
जनयसि बत कस्माद्वैपरीत्यं परन्तु ॥ २४ ॥

मधु तथा घृत के साथ त्रिफला का प्रयोग—हे आर्ये! नेत्र रोग से पीड़ित रोगियों के लिये रात्रि में सेवन की गई मधु तथा घृत के साथ (विषम मात्रा में) त्रिफला सुख देने वाली कही गई है। किन्तु हे नवीन उत्पन्न बालक की तरह चञ्चल नेत्रवाली! स्त्रियों में श्रेष्ठ तुम नेत्र रोगियों के लिये विपरीत क्यों पड़ती हो। अर्थात् नेत्र रोगियों के लिये मधुघृत के साथ त्रिफला हितकर है तथा मैथुन निषिद्ध है ॥ २४ ॥

नक्तान्ध्यरोगप्रतीकारमाह—

निराकरोति नक्तान्ध्यं सगोमयरसा कणा।
यथा रतेन रमणी रमणस्य महाबलम् ॥ २५ ॥

रतौंधी को दूर करने का उपाय—गोबर[2] के रस के साथ घिस कर अंजन

१ एको यः शशरुधिरोपमस्तु विन्दुः शुक्लस्थो भवति तदर्जुनं वदन्ति।

२ गोबर को कपड़ा में रखकर निचोड़ने से उसका रस निकल आता है उसी रस में पत्थर को धोकर पीपर घिस लेना चाहिये और उसको आँख में लगाना चाहिये। कभी-कभी पीपर को गोबर में रख देते हैं पुनः उसको निकाल कर गोबर के रस में घिस कर आँख में आँजन करते हैं। यह पूर्व की अपेक्षा अधिक लाभदायक होता है।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
की हुई पिप्पली (पीपर) रतौंधी को इस प्रकार दूर करती है जैसे रमणी (स्त्री) रति में पुरुष के महान् बल को नष्ट कर देती है ॥ २५ ॥

शुक्ररोगप्रतीकारमाह—

श्यामेऽश्यामे ! प्रियश्यामे ! श्यामाबोधितमानसे ।
शुक्रं शमयति क्षिप्रं माक्षिकं माक्षिकान्वितम् ॥ २६ ॥

शुक्ररोग (फूलो) को दूर करने का उपाय—हे श्यामे । (सोलह वर्षीय-आयु वाली), अश्यामें ! (गौराङ्गी), प्रियश्यामे । (श्यामवर्ण के पति वाली !) तथा, श्यामा (षोडशवर्षीया) स्त्रियों के द्वारा समझाई हुई मनवाली प्रिये ! शहद् में घिस कर लगाया हुआ स्वर्णमाक्षिक शीघ्र ही शुक्र रोग (फूली) को नष्ट करता है ॥ २६ ॥

कामलाप्रतीकारमाह—

त्रिफलावृषभूनिम्बनिम्बतिक्तामृताकृतः ।
क्काथो मधुयुतः पीतः कामलापाण्डुरोगजित् ॥ २७ ॥

कामला रोग दूर करने का उपाय—त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), अडूसा, चिरायता नींम की छाल, कुटकी तथा गुडूची इन सबों का बनाया हुआ क्काथ शहद मिलाकर पान करने से कामला तथा पाण्डु रोग को जीत लेता है ॥ २७ ॥

कामलाघ्नं नस्यम्—

देवदालीफलरसो नस्यतो हन्ति कामलाम् ।
सन्देहो नात्र सम्फुल्लनीलोत्पलविलोचने ! ॥ २८ ॥

कामला रोग नाशक नस्य—हे खिले हुए नीलकमल के समान नेत्रवाली ! देवदाली के फल का रस नस्य लेने से (सूंघने से) कामला[1] रोग को नष्ट करता है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ २८ ॥

---

१ पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते ।
तस्य पित्तमसृङ्मांसं दग्ध्वा रोगाय कल्पते ॥ (इति कामलायाः सम्प्राप्तिः)
हारिद्रनेत्रः सुभृशं हरिद्रत्वङ्नखाननः ।
पीतवर्णशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः ।
दाहाविपाकदौर्बल्यं सदनारुचिकर्षितः ॥ (इति कामलायाः लक्षणम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कामलाघ्नमञ्जनम्—

गिरिमृद्धात्रिधात्रीणामञ्जनं कामलाऽपहम् ।
इदं न हि भवेन्मिथ्या शपथस्तु तवाङ्गने ! ॥ २९ ॥

कामला नाशक अञ्जन—गेरु, हल्दी तथा आँवला इन सबों का अंजन कामला रोग को नाश करता है। हे अङ्गने ! तुम्हारी शपथ है, यह बात झूठी नहीं है ॥ २९ ॥

कामलायां सनागरगोमूत्रप्रयोगः—

अये ! मनोज्ञकुण्डले ! स्फुरन्मुखेन्दुमण्डले ! ।
गवां पयः सनागरं निहन्ति कामलाभरम् ॥ ३० ॥

कामला रोग में सोंठ मिश्रित गोमूत्र का प्रयोग—हे सुन्दर कानों के आभूषण वाली ! चमकते हुए चन्द्रमा के समान मुख मण्डल वाली ! गाय का दूध सोंठ के चूर्ण के साथ पीने से बढ़े हुए कामला रोग को नाश करता है ॥ ३० ॥

योनिशूलप्रतीकारमाह—

पिचुमन्दरसेन मिश्रितैः पिचुमन्दाऽनिलशत्रुबीजकैः ।
घटितां वटिकां भगान्तरे भगशूलप्रशमाय धारयेत् ॥ ३१ ॥

योनिशूल नाशक उपाय—नीम तथा रेंड़ी के बीजों को नीम के रस में घोट कर वटी बनावे। इस वटी को योनि शूल को नाश करने के लिये योनि के अन्दर रक्खे ॥ ३१ ॥

योनिशूलनाशकोलेपः—

तरुण्युत्तरणीमूलं छागीसर्पिः सनागरम् ।
शिवशाखाभिधां बाधां योनिस्थां हन्ति सत्वरम् ॥ ३२॥

योनिशूलनाशकलेप—हे तरुणि ! इन्द्रवारुणी की जड़ सोंठ सहित बकरी के घृत में पीस कर योनि के अन्दर लेप करने से शिव की आयुध नामक बाधा (योनिशूल) को शीघ्र ही नष्ट करती है ॥ ३२ ॥

स्तन्यदुष्टिप्रतीकारमाह—

गोपी-वृकी-दारु-किरात-मूर्वा-तिक्ताऽमृता-विश्व-घनेन्द्रजानाम् ।
क्वाथोऽयमुक्तो मृगलोचनानां दुष्टस्य दुग्धस्य विशोधनाय ॥ ३३ ॥

दूध के विकार को नाश करने का उपाय—शारिवा, पाठा, देवदारु, चिरायता, मूर्वा, कुटकी, गुडूची, सोंठ, नागरमोथा तथा इन्द्रजव (समभाग) इन द्रव्यों का

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्वाथ स्त्रियों के दूषित दूध के शोधन के लिये कहा गया है। अर्थात् यह दूषित दूध को शुद्ध करनेवाला है ॥ ३३ ॥

प्रदरप्रतीकारमाह—

कटङ्कटेरी-रसजाब्दवासा-भूनिम्बभल्ली-तिलजः कषायः।
क्षौद्रान्वितश्चञ्चललोचनानां नानाविधानि प्रदराणि हन्यात् ॥ ३४ ॥

प्रदर रोग दूर करने का उपाय—दारुहल्दी, रसौंत, नागरमोथा, अडूसा, चिरायता, भिलावा तथा काले तिल का क्वाथ शहद मिलाकर सेवन करने से चञ्चल नेत्र वाली स्त्रियों के अनेक प्रकार के उदर रोगों (वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक तथा साञ्निपातिक) को नष्ट करता है ॥ ३४ ॥

प्रदरेषु तण्डुलीयादिचूर्णप्रयोगः—

कुवलयदलनेत्रे ! तण्डुलीयस्य मूलं
रसजमपि समांशं भेषजद्वन्द्वमेतत् ।
हिमकरमुखि ! युक्तं तण्डुलाम्भोमधुभ्यां-
प्रदरदरमुदीर्णं सुन्दरीणां निहन्ति ॥ ३५ ॥

प्रदर में तण्डलीयादि चूर्ण का प्रयोग—हे कमलदल के समान नेत्रवाली ! तथा चन्द्रमा के समान मुखवाली ! चौराई की जड़ का चूर्ण तथा रसौत समभाग दोनों को लेकर शहद तथा तण्डुल के जल के साथ सेवन करने से प्रवृद्ध प्रदर रोग का भय नष्ट हो जाता है ॥ ३५ ॥

स्त्रीणां रजोऽवरोधस्य कुलटानां भ्रूणपातस्य चोपायमाह—

मूलं गवाक्ष्याः स्मरमन्दिरस्थं पुष्पावरोधस्य वधं करोति ।
अभर्तृकाणां व्यभिचारिणीनां योगोऽयमेव द्रुतगर्भपाते ॥ ३६ ॥

स्त्रियों के रजोऽवरोध तथा गर्भपात का उपाय—गवाक्षी का मूल (इन्द्र-वारुणी की जड़) योनि में रक्खा जाय तो रज के अवरोध को नष्ट करता है। यह योग विधवा तथा व्यभिचारिणी स्त्रियों के लिये गर्भपात कराने वाला भी होता है ॥ ३६ ॥

गर्भिण्याः सुखप्रसवस्य वमेरप्युपायमाह—

मध्वाज्ययष्टीमधुलुङ्गमूलं निपीय सूते सुमुखी सुखेन ।
सुतण्डुलाम्भःसितधान्यकल्कपानाद्वमिर्गच्छति गर्भिणीनाम् ॥ ३७ ॥

गर्भिणी के सुख प्रसव तथा वमन के उपाय—मुलेठी तथा बिजौरे नींबू का

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
मूल पीस कर शहद तथा घृत के साथ (विषम मात्रा में) पीने से गर्भिणी सुखपूर्वक प्रसव उत्पन्न करती है और धनियाँ पीसकर उसमें मिश्री मिलाकर चावल के धोवन के साथ पान करने से गर्भिणी स्त्रियों का वमन दूर हो जाता है ॥ ३७ ॥

गर्भिण्याः सूतिकाया रोगेषु धान्यादिक्वाथो बालानां वान्त्यादिनाशकचूर्णद्वयं च—

धान्याब्दाम्बुद्वयारल्वमृतविषबलारेणुदुःस्पर्शशीतं-
गर्भिण्याः सूतिकाया अपि रुधिररुगामातिसारज्वरघ्नम् ।
मुस्ताशृङ्गीविषाणां प्रशमयति रजः सेवितं क्षौद्रयुक्तं
बालानां वान्तिकासज्वरमतिविषजं क्षौद्रयुक्तं रजो वा ॥ ३८ ॥

गर्भिणी के सूतिका रोग में धान्यादि क्वाथ तथा बालकों के वमन आदि नाशक दो योग—धनियाँ, नागरमोथा, खस, नेत्रबाला, सोनापाठा, गुडूची, अतीस, बरियार, पित्तपापड़ा, जवासा तथा लालचन्दन (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ गर्भिणी तथा नवप्रसूता स्त्रियों के रक्तातिसार, आमातिसार तथा ज्वर को नष्ट करता है, और नागरमोथा, काकड़ा सिंगी तथा अतीस (समभाग) इन द्रव्यों का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से बालकों के वमन खाँसी तथा ज्वर को अच्छी तरह शान्त करता है। अथवा केवल अतीस का ही चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से बालकों के वमन, खांसी तथा ज्वर को नष्ट करता है ॥ ३८ ॥

शिशोरतिसारस्योपायमाह—

कुमारातिसारे कषायः समङ्गामदासारिवारोध्रजः क्षौद्रयुक्तः ।
मदारोध्रबिल्वाब्दमञ्जिष्ठबालाकषायोऽवलेहोऽथ वा क्षौद्रयुक्तः ॥ ३९ ॥

वैद्य लोलिम्बराजकृत वैद्यजीवनेऽतिसारग्रहणी प्रतिकारो नाम
तृतीयो विलासः समाप्तः

बालकों के अतिसार दूर करने के उपाय—बालकों के अतिसार में मंजीठ, धाय का फूल, सारिवा तथा लोध (पठानी लोध) (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ मधु के साथ या धाय का फूल, पठानी लोध, बेल का गूदा, नागरमोथा, मंजीठ तथा नेत्रबाला (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ या अवलेह मधु के साथ सेवन करना हितकर है ॥ ३९ ॥

वैद्यजीवन में अतिसार ग्रहणी प्रतिकार नामक
तीसरा विलास समाप्त।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ चतुर्थो विलासः

क्षयरोगचिकित्सामाह—

क्षयादिगदानां चिकित्सां श्रोतुं रत्नकलोपक्रमः—

विद्वल्ललामलोलिम्बराज ! ते वाग्विलासतः ।
तृप्तिर्न जायते स्वामिन् ! पुनः किञ्चिन्निरूपय ॥ १ ॥

क्षयादि रोगों की चिकित्सा सुनने के लिये रत्नकला का प्रस्ताव—हे विद्वानों में श्रेष्ठ ! स्वामी लोलिम्बराज ! आपकी बातचीत से तृप्ति नहीं हो रही है। अतः फिर भी कुछ कहिए। ऐसा लोलिम्बराज की पत्नी ने कहा ॥ १ ॥

वासाप्रयोगः—

क्षयोत्पत्तिविनाशाय सिंहास्यः सेव्यतां सदा ।
बहूनामस्य विश्वासो जातः कमललोचने ! ॥ २ ॥

क्षय रोग में अडूसा का प्रयोग—लोलिम्बराज जी कहते हैं कि हे कमल के समान नेत्रवाली ! क्षयरोग के उत्पन्न होने पर उसके नाश के लिये 'अडूसा' का सेवन हमेशा करें। क्योंकि बार-बार प्रयोग करने से इसके ऊपर बहुतों का विश्वास हो गया है ॥ २ ॥

मधुसितानवनीतप्रयोगः—

अयि सुन्दरी ! सुन्दरानने ! रुचिरापाङ्गतरङ्गलोचने !
नवनीतमधूपलाशनादुडुराजोऽपि भवेत् क्षयक्षयः ॥ ३ ॥

क्षय रोग में मधु, मिश्री तथा मक्खन का प्रयोग—हे सुन्दरी ! हे सुन्दर मुखवाली ! हे सुन्दर कटाक्षपूर्ण नेत्रवाली। मक्खन, मधु तथा मिश्री खाने से चन्द्रमा भी क्षय रोग से मुक्त हो गये ॥ ३ ॥

व्रणरोगस्य प्रतिकारमाह—

अयि कोमलकुन्तलावलीविलसत्पल्लवमल्लिकाभरे !
त्रिफलाजनितः कषायकः सहितो गुग्गुलुना व्रणं जयेत् ॥ ४ ॥

व्रण रोग का उपाय—हे कोमल बालों की पंक्ति से सुशोभित पल्लव युक्त

---

१. वासायां विद्यमानायां निराशा जीवितस्य किम् ।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति ॥ (इति चक्रपाणिः)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चमेली के पुष्प के भार को धारण करनेवाली प्रिये! गुग्गुलु के साथ त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला) का क्वाथ व्रण को नष्ट करता है ॥ ४ ॥

मेदः प्रतिकारमाह—

मदनज्वरकारिनामधेये! रसिके! रत्नकले! प्रभातकाले।
शिशिराम्बु पिबन्मधुप्रयुक्तं गणनाथोऽपि भवेत्किलास्थिशेषः ॥ ५ ॥

मेद को कम करने का उपाय — हे कामज्वर को उत्पन्न करने वाले की संज्ञा वाली, हे रसिक रत्नकले! प्रातः काल मधु के साथ शीतल जल को पीने से गणेश जी की भी केवल हड्डी शेष रह जायगी। औरों के लिये क्या कहना है। अर्थात् इस योग को सेवन करने से मेद का क्षय हो जाता है ॥ ५ ॥

क्रिमिरोगस्य प्रतिकारमाह—

त्रिकटुत्रिफलाकलिङ्गनिम्बत्रिवृदुग्राखदिरोद्भवः कषायः।
पशुमूत्रसमन्वितो निपीतः कृमिकोटीरपि हन्ति वेगतोऽयम् ॥ ६ ॥

क्रिमि रोग का उपाय—त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच), त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), इन्द्रजव, नीम की छाल, निशोथ, वच तथा खैरसार (समभाग) इन सबों का क्वाथ गाय के मूत्र के साथ पीने से यह योग कड़ोरों क्रिमियों को भी शीघ्र ही नाश करता है ॥ ६ ॥

मुखपाकप्रतिकारमाह—

जातिप्रवाल-त्रिफलायवास-दार्वीत्रियामाऽमृतगोस्तनीनाम्।
कषायकः क्षौद्रयुतो निहन्ति मुखस्य पाकं मुखपङ्कजस्थम् ॥ ७ ॥

मुख पाक को दूर करने का उपाय—चमेली की पत्ती, त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), यवासा, दारुहल्दी, गुडूची तथा मुनक्का (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ शहद के साथ साथ सेवन करने से मुख कमल से स्थित मुख पाक को (मुख के निनावा को) नष्ट करता है ॥ ७ ॥

अम्लपित्तचिकित्सामाह—

भूनिम्ब-निम्ब-त्रिफला-पटोलिवासाऽमृता-पर्पट-भृङ्गराजैः।
क्वाथो हरेत् क्षौद्रयुतोऽम्लपित्तं चित्तं यथा वारवधूविलासः ॥ ८ ॥

अम्लपित्त की चिकित्सा—चिरायता, नीम की छाल, त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आँवला), परवल की पत्ती, अडूसा, गुड्ची, पित्तपापड़ा तथा भृङ्गराज (समभाग)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
इन द्रव्यों का क्वाथ मधु के साथ सेवन करने से अम्लपित्त को दूर करता है। जैसे वेश्यावों का हावभाव चित्त को हर लेता है। अर्थात् वश में कर लेता है ॥ ८ ॥

प्रमेहस्य चिकित्सामाह—

स्फुरत्सुन्दरोदारमन्दारदाम-प्रकामाभिरामस्तनद्वन्द्वरम्ये !
हरिद्रारजोमाक्षिकाभ्यां विमिश्रः शिवायाः कषायः प्रमेहापहारी ॥ ९ ॥

प्रमेह की चिकित्सा—हे प्रकाशमान सुन्दर मदार की माला से शोभायमान कुचद्वय से मन हरनेवाली ! आँवला का क्वाथ हल्दी के चूर्ण तथा शहद के साथ सेवन करने से प्रमेह को दूर करनेवाला है ॥ ९ ॥

सर्वमेहघ्नो मधुयुतगुडूचीस्वरसप्रयोगः—

समधुश्छिन्नास्वरसो नानामेहनिवारणः ।
वदन्ति भिषजः सर्वे शरदिन्दुनिभानने ! ॥ १० ॥

सभी प्रकार के प्रमेहों को नाश करनेवाला मधुयुक्तगुडूची स्वरस का प्रयोग—हे शरदृतु के चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली ! सभी वैद्य कहते हैं कि मधु के साथ गुडूची का स्वरस अनेक प्रकार के प्रमेहों को दूर करनेवाला है ॥१०॥

वातरक्तस्यौषधमाह—

रतिकेलिकलाकुशले ! विलसद्वलये ! मलयेन समानकुचे !
अमृताव्रतती रुबुतैलवती दलयेदनिलास्रमुदारतरम् ॥ ११ ॥

वातरक्त का औषध—हे रतिक्रीडा को कला में कुशल ! कंकण से सुशोभित हाथ वाली तथा मलयाचल के समान कठिन स्तनोंवाली ! रेड़ी के तैल के साथ गुडूची का क्वाथ तीव्रवातरक्त रोग को नष्ट कराता है ॥ ११ ॥

वातरक्ते पिण्डतैलमेरण्डक्वाथश्च—

मधूकारुणा-गोपिका-देवधूपैः श्रृतं वातरक्तापहं पिण्डतैलम् ।
कषायः सहैरण्डतैलेन पीतस्तथैरण्ड-सिंहास्य-वत्सादनीनाम् ॥१२॥

वात रक्त में पिण्ड तैल तथा एरण्डादि क्वाथ—मुलेठी, मंजीठ सारिवा तथा देवधूप (राल) इन सबों के क्वाथ के साथ पकाया हुआ यह पिण्ड तैल वातरक्त को दूर करता है, और एरण्ड का बीज, अडूसा तथा गुडूची का क्वाथ एरण्ड के तैल के साथ पान करने से वैसे ही वात रक्त को नष्ट करता है ॥ १२ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषूचिकोपचारमाह—

लसुन-जीरक सैन्धव-गन्धक-त्रिकटु-रामठ-चूर्णमिदं समम्।
सपदि निम्बुरसेन विषूचिकां हरति भो रतिभोगविचक्षणे ! ॥ १३ ॥

विषूचिका की चिकित्सा—हे सुरत क्रीड़ा में चतुर ! लहसुन, जीरा, सेन्धानमक, शु० गन्धक, त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच) तथा हींग समभाग इन द्रव्यों का चूर्ण नीबू के रस के साथ सेवन करने से शीघ्र ही विषूचिका[1] को दूर करता है ॥ १३ ॥

विषूचिकायां पिपासाया वमथोश्चोपचारः—

रुग्-लाजाऽब्ज-वटप्ररोह-मधुकैर्मध्वन्वितैः कल्पिता
उग्रामाशु तृषां भृशं प्रशमयेदास्यान्तरस्था वटी।
एला-लाज-लवङ्ग-नागचपला-स्त्री-कोल-मज्जाऽम्बुद-
श्रीखण्डं मधुखण्डयुक् प्रशमयेद्वान्तिं त्रिदोषोद्भवाम् ॥ १४ ॥

विषूचिका में प्यास तथा वमन की चिकित्सा—कूट, धान का लावा, नागरमोथा, वट की कोमलजटा तथा मुलेठी इन सबों को शहद के साथ पीस कर बनाई हुई वटी मुख में रखने से भयंकर प्यास को शीघ्र ही अच्छी तरह शान्त करती है। और बड़ी इलायची, धान का लावा, लवङ्ग, नागकेशर, पीपर, प्रियङ्गु, वेर की गुठली की गिरि, मोथा तथा सफेद चन्दन (समभाग) इन सबों का चूर्ण मधु तथा मिश्री के साथ सेवन करने से त्रिदोषज वमन को शान्त करता है ॥१४॥

निदाघोपचारमाह—

रमारम्याकारे ! चतुरवचने ! चारुचिकुरे !
विमूल्यालङ्कारे ! करतललसन्नीलनलिने !
निदाघः सञ्जातस्तव किमु सरोजन्मकदली-
दलैः क्लृप्ते तल्पे स्वपिहि लघु साहित्यनिपुणे ! ॥ १५ ॥

उष्णता जन्य स्वेद का उपचार—हे लक्ष्मी के समान सौम्य स्वरूप वाली, मधुर बोलनेवाली ! सुन्दर केशवाली ! बहुमूल्य आभूषणों को धारण करनेवाली

---

१. सूचिभिरिवगात्राणि तुदन् संतिष्ठतेऽनिलः।
यत्राजीर्णे च सा वैद्यैर्विषूचीति निगद्यते ॥
न तां परिमिताहारा लभन्ते विदितागमाः।
मूढास्तामजितात्मानो लभन्तेऽशनलोलुपाः ॥

CC-0, Kavyalaya Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा हाथ में सुन्दर नील कमल को धारण करने वाली, क्या तुम्हें पसीना आ रहा है। हे साहित्यकला में कुशल! कमल की पखड़ियों तथा केला के पत्तों से आच्छादित शय्या पर शीघ्र ही शयन करो॥ १५॥

पामोपचारमाह—

रस-द्विजीर-द्विनिशा-मरीच-सिन्दुरदैत्येन्द्र-मनःशिलानाम्।
चूर्णीकृतानां घृतमिश्रितानां त्रिभिः प्रलेपैरपयाति पामा॥ १६॥

खुजली का उपचार—शुद्ध पारा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, निशाहल्दी, दारुहल्दी, मरिच, सेन्दुर, गन्धक तथा मैनसिल–इन द्रव्यों के चूर्ण को घृत में मिलाकर तीन बार लेप करने से पामा (खुजली) दूर हो जाती है॥ १६॥

विपादिकाप्रतीकारमाह—

मदन-सैन्धव-गुग्गुलु-गैरिका-ऽऽज्यमधु वालक-पङ्कविलेपनात्।
स्फुटितमप्यखिलं चरणद्वयं विकचतामरसप्रतिमं भवेत्॥१७॥

विपादिका (बेवाई) की चिकित्सा—मोम, सेन्धानमक, गुग्गुलु, गेरु तथा सुगन्धवाला इन सबों का चूर्ण बनाकर घी तथा शहद के साथ घोट कर लेप तैयार करे। यह लेप लगाने से पूरा फटे हुए बेवाई रोग नष्ट होकर दोनों पैर कमल के समान सुन्दर हो जाते हैं॥ १७॥

दुर्नामादिरोगाणां प्रतीकारमाह—

पथ्या-तिलाऽरुष्करकैः समांशै-र्गुडेन युक्तैः खलु मोदकः स्यात्।
दुर्नाम-पाण्डु-ज्वर-कुष्ठ-कास-श्वासं जयेत् प्लीहरुजं च तद्वत्॥१८॥

अर्श आदि रोगों की चिकित्सा—हर्रे, तिल तथा शु० भिलावा समभाग इन द्रव्यों का चूर्ण बनाकर गुड़ के साथ मिलाकर मोदक तैयार करे। यह मोदक खाने से अर्श, पाण्डुरोग, ज्वर, कुष्ठ, तथा कास श्वास को जीत लेता है। उसी प्रकार प्लीहा रोग को भी जीत लेता है॥ १८॥

गण्डमालोपचारमाह—

भल्लात-कासीस-हुताश-दन्ती-मूलैर्गुडस्नुग्प्रविदुग्धदिग्धैः।
लेपोचितैर्गच्छति गण्डमाला समीरवेगादिव मेघमाला॥ १९॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गण्डमाला की चिकित्सा—भिलावा, कासीस, चित्रक तथा दासी मूल (जमाल गोटे की जड़) इन सबों को गुड़, सेंहुड़ के दूध तथा मदार के दूध के साथ पीस कर लेप तैयार करे। यह लेप लगाने से गण्डमाला रोग उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जैसे वायु के वेग से मेघपंक्ति नष्ट हो जाती है ॥ १९ ॥

कण्ठामयस्य प्रतीकारमाह—

गोमूत्रेण कृतः कलिङ्गकटुका-पाठा-वृषाऽब्दामर-
क्वाथः क्षौद्रयुतो निहन्ति सकलान् कण्ठामयानुत्कटान्।
पाठा-तेजवती-रसाञ्जन-यवक्षारो-पकुल्या-निशा-
देवानां मधुना कृता मुखधृता तद्वद्वटी वर्त्तते ॥ २० ॥

कण्ठ रोग की चिकित्सा—कलिङ्ग (इन्द्रजव), कुटकी, पाठा, अडूसा, नागरमोथा तथा देवदारु इन द्रव्यों का गो मूत्र के साथ बनाया हुआ क्वाथ शहद के साथ पीने से भयंकर कण्ठ के रोगों को नाश करता है। और पाठा, तेजबल, रसाञ्जन, यवक्षार, पीपर, हल्दी तथा देवदारु (समभाग) इन सबों का चूर्ण बनाकर मधु के साथ घोटकर वटी बनावे। यह वटी मुख में धारण करने से भयङ्कर कण्ठ के रोगों को नष्ट करती है ॥ २० ॥

मन्दाग्नेश्चिकित्सामाह—

प्राणेश्वर ! प्रियतमे ! वद किं वदामि
तत् कान्त तत् किमु मृगाक्षि यदग्निकारि।
सम्यक्छृणु प्रणयिनि प्रणयिञ्छृणोमि
खादेत्सनिम्बुरसैन्धवशृङ्गवेरम् ॥ २१ ॥

मन्दाग्नि की चिकित्सा—(प्रश्नोत्तर रूप में मन्दाग्नि की चिकित्सा बतायी गई है प्रश्नकर्त्ता—रत्नकला तथा उत्तरदाता लोलिम्बराज हैं) हे प्राणेश्वर ! हाँ प्रियतमे ! कहो, क्या कहूँ, हे कान्त ! उसको कहो, हे मृगाक्षि ! वह क्या है, जो जाठराग्नि को बढ़ाने वाला है। हे विनम्रे ! अच्छी तरह सुनो, हाँ कान्त ! सुन रही हूँ, नींबू का रस तथा सेन्धा नमक के साथ अदरक को खाना चाहिए। भोजन के पूर्व इसे खाने से जाठराग्नि प्रदीप्त होती है ॥ २१ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्मर्यादिरोगाणां चिकित्सामाह—

हिङ्गु-क्षारद्वय-सैन्धव-सौवर्चल-विड-पिप्पली-
ग्रन्थिक-चित्रक-चव्य-मरिच-कस्तुम्बरी-बर्बरी-
तिन्तीडी-षड्ग्रन्थाऽजमोदाम्लवेतस-पुष्करमूल-
नागर-करञ्ज-जीरक-हरीतकी-वृकी-हपुषाभिः।
विरचितं चूर्णमिदमश्मरी-हृदयगलरोग-
विबन्धाध्मानहिक्का-वर्ध्म-गुदज-गुल्म-सकल-
शूल-प्लीह-पाण्डु-श्वसन-कसन-दहन—
सदन-वदनविरसताविरतये समर्थतरम्॥ २२॥

पथरी आदि रोगों की चिकित्सा—हींग, सज्जीखार, जवाखार, सेन्धानमक, सौबर्चल नमक, विडनमक, पीपर, पीपरामूल, चित्रक, चव्य, मरिच, धनियाँ, जंगलीतुलसी, इमली, वच, अजमोदा, अम्लबेंत, पुष्करमूल, सोंठ, करञ्ज, जीरा, पाठा तथा हाऊबेर (समभाग) इन द्रव्यों का बनाया हुआ चूर्ण अश्मरी (पथरी), हृदयरोग, गले का रोग, विबन्ध (कब्जियत), आध्मान (पेट में वायु का भरना), हिचकी, वर्ध्म (पट्टे में कौड़ी को जगह पर का शोथ), अर्श (बवासीर), गुल्मरोग, सभी प्रकार के शूल प्लीहारोग, पांडुरोग, श्वास, कास, दाह, अग्निमान्द्य तथा मुख की विरसता (मुख में स्वाद का नष्ट हो जाना) इन सब रोगों को दूर करने में अच्छी तरह समर्थ है॥ २२॥

अग्निमान्द्यस्य प्रतीकारमाह—
तत्र हिंग्वष्टकं वृक्षाम्लादिकंचूर्णं च—

हिङ्गु—व्योषाजमोदा—द्विजरण—लवणं प्राग्भजेत्साज्यभुक्तं
कुर्याज्जाज्वल्यमानं ज्वलनमनिलजं गुल्ममेतन्निहन्ति।
वृक्षाम्लाम्लाग्नि—पथ्यात्रिकटु—वटु—विडं जन्तुजिज्जीरयुग्मं
दीप्यौ सौवर्चलं चाचलमाप सकलं भस्मसाच्चकरीति॥ २३॥

अग्निमान्द्य चिकित्सा में हिंग्वष्टक तथा वृक्षाम्लादिचूर्ण—हींग, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच), अजवायन, सफेद जीरा, स्याह जीरा तथा सेन्धानमक

---

१. वस्त्याध्मानं तदासन्नदेशेषु परितोऽतिरुक्।
मूत्रे वस्तसगन्धत्वं मूत्रकृच्छ्रं ज्वरोऽरुचिः॥ (माधवनिदानम्)

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन द्रव्यों का चूर्ण घी के साथ भोजन के प्रथम ग्रास में खाय यह अग्नि को प्रदीप्त करता है तथा वातगुल्म को नष्ट करता है। इसके अतिरिक्त इमली, अम्लबेंत, चित्रक, हर्रे, त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच) सेन्धानमक, विड़नमक, वायविडङ्ग, सफेद जीरा, स्याह जीरा, अजमोदा, अजवायन तथा सौवर्चलनमक इन द्रव्यों का चूर्ण अचलमय (पत्थर के समान) अन्न को भी पका देता है ॥२३॥

लोलिम्बराजाभिधं चूर्णम्—

शुण्ठी बाणमिता कणाऽर्णवमिता दीप्यायवान्योः क्रमाद्-
भागानां त्रितयं द्वयं च लवणाद्भागः शिवैतत्समा ।
कोष्ठाटोप-रुगाम-गुल्म-मलहल्लोलिम्बराजोदित-
श्चूर्णोऽद्रीनपि भस्मसात्प्रकुरुते किं भोजनं भो जनाः ॥ २४ ॥

लोलिम्बराजनामकचूर्ण—सोंठ पांचभाग, पीपर चारभाग, अजमोदा तीनभाग, अजवायन दोभाग, सेन्धानमक एकभाग और इन सभी द्रव्यों के बराबर (पन्द्रह भाग) हर्रे लेकर चूर्ण बना ले। हे मनुष्यो! यह लोलिम्बराज का कहा हुआ चूर्ण पेट का अफरन (गुड़गुड़ाहट) तथा शूल, आँव, वातगुल्म तथा मल के विकार को नाश करने वाला है। यह चूर्ण भोजन को क्या कहा जाय पत्थर तक को अर्थात् पत्थर के समान भी गरिष्ठ अन्न को भस्म कर देता है ॥ २४ ॥

विद्रधि[1] प्रतीकारमाह—

शीग्रु-दीप्य-वरुण-द्वियामिनी-कुञ्जराशनकृतः कषायकः ।
बोलचूर्णसहितोऽन्तरस्थितं विद्रधिं प्रशमयेदसंशयम् ॥ २५ ॥

व्रण की चिकित्सा—सहिजन की छाल, अजवायन, वरुण की छाल, आमाहल्दी, दारुहल्दी तथा पीपल की छाल इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ बोल (रक्त बोल) का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से भीतरी विद्रधि (हृदय के व्रण) को निसन्देह शान्त करता है ॥ २५ ॥

---

१. मन्दोष्णताऽल्पशोथत्वं काठिन्यत्वक्सवर्णता ।
मन्दवेदनताचैतच्छीतानामासलक्षणम् ॥ (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हृद्रोगचिकित्सामाह—

कमलकुड्मलकल्पपयोधरद्वयसमाहितहारमनोहरे ! ।
हृदयरुक्षु हितं घृतमर्जुनस्वरसकल्कसुसाधितमङ्गने ! ॥ २६ ॥

हृदयरोग की चिकित्सा—हे कमल की कली के समान दोनों स्तनों पर शोभायमान पुष्पमाला से मन को हरनेवाली प्रिये ! अर्जुन के स्वरस तथा कल्क के साथ पकाया हुआ घृत (घृत पाक नियम के अनुसार) हृदय रोग के लिये हितकर है। (घृत पाक के लिये द्रव्यों की मात्रा—अर्जुन का कल्क (५०० ग्रा०), घृत (२ किलो ग्रा०), स्वरस (४ कि० ग्रा०) तथा जल स्वरस के बराबर लेकर घृत पाक करना चाहिए। मन्दाग्नि पर पकाना लाभ दायक होता है) ॥ २६ ॥

दन्तरोगस्यौषधमाह—

सोऽयं सुगन्धिमुकुलो वकुलो विभाति
वृक्षाग्रणीः प्रियतमे ! मदनैकबन्धुः ।
यस्य त्वचैव चिरचर्वितया नितान्तं
दन्ता भवन्ति चपला अपि वज्रतुल्याः ॥ २७ ॥

दन्त रोग की चिकित्सा—हे प्रिये ! यह सामने जो सुगन्धित कलियों वाला श्रेष्ठ वृक्ष कामदेव का एक अभिन्न मित्र मौलसरी सुशोभित हो रहा है, जिसकी त्वचा (छाल) को नित्यप्रति चबाने से या चूर्ण का मञ्जन करने से हिलते हुए भी दांत वज्र के समान दृढ़ हो जाते हैं ॥ २७ ॥

रक्तपित्तप्रतीकारमाह—

द्राक्षापथ्याकृतः क्वाथः शर्करामधुमिश्रितः ।
श्वासकासहरो देयो रक्तपित्तप्रशान्तये ॥ २८ ॥

रक्तपित्त की चिकित्सा—मुनक्का तथा हर्रे का बनाया हुआ क्वाथ शर्करा तथा मधु के साथ सेवन करने से श्वास-कास को दूर करता है। इसको रक्त पित्त की शान्ति के लिये देना चाहिए ॥ २९ ॥

---

१. ऊर्ध्वं नासाक्षिकर्णस्यमेंढ्रयोनिगुदैरधः ।
कुपितैरोमकूपैश्च समस्तैस्तत्प्रवर्तते ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रक्तपित्तवासाक्काथप्रयोगः—

भिन्दन्ति के कुञ्जरकर्णपालीं किमव्ययं वक्ति रते नवोढा।
संबोधनं नुः किमु रक्तपित्तं निहन्ति वामोरु! वद त्वमेव॥ २९॥

रक्त पित्त में अडूसा के क्वाथ का प्रयोग—लोलिम्बराज अपनी स्त्री से पूछते हैं कि हे वामोरु! हाथी के गण्डस्थलों को कौन विदीर्ण करता है? (उत्तर—सिंहाः) तथा नई व्याही नवोढ़ा स्त्री रति काल में किस अव्यय को बोलती है? (न इस अव्यय को बोलती है)। नृ शब्द का सम्बोधन क्या है? (नः है) रक्तपित्त को कौन सी ओषधि नष्ट करती है इस बात को तुम्हीं कहो। इस प्रकार पूछने पर स्त्री ने उत्तर दिया कि "सिंहाननः" जिसका अर्थ अडूसा होता है। अर्थात् अडूसा का क्वाथ रक्तपित्त को नष्ट करता है (यह बुझौवल की तरह प्रश्नोत्तर है)॥ २९॥

हिक्काप्रतिकारमाह—

विश्वा-कणा-शिवाचूर्णः ससितः समधुः स्मृतः।
नस्यवद्विश्व-गुडयो-र्हिक्का[1]-धिकार-कारकः ॥ ३०॥

हिक्का की चिकित्सा—सोंठ, पीपर तथा आँवला का चूर्ण शहद तथा मिश्री मिलाकर सेवन करने से हिक्का इस प्रकार नष्ट होती है जैसे गुड़ तथा सोंठ के चूर्ण का नस्य लेने से हिक्का (हिचकी) नष्ट हो जाती है॥ ३०॥

भ्रमप्रतिकारमाह—

दुरालभाकषायस्य घृतयुक्तस्य सेवनात्।
भ्रमः शाम्यति गोविन्दचरणस्मरणादिव॥ ३१॥

भ्रम चिकित्सा—यवासा का क्वाथ घी मिला कर सेवन करने से भ्रम[2] रोग वैसे ही नष्ट होता है जैसे श्रीकृष्ण के चरण कमलों को स्मरण करने से भ्रम (भ्रम रोग) दूर हो जाता है॥ ३१॥

---

१. मुहुर्मुहुर्वायुरुदेतिसस्वनो यकृत्प्लीहान्त्राणि मुखादिवाक्षिपन्।
सदोषवानासुहिनस्त्यसून् यतस्ततस्तु हिक्केत्यभिधीयते बुधैः॥
(माधवनिदानम्)

२. चक्रवद् भ्रमतो गात्रं भूमौ पतति सर्वदा।
भ्रमरोग इति ज्ञेयो रजःपित्तानिलात्मकः॥ (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोकप्रतीकारमाहः—

अयि रत्नकले ! कुरु मा कलहं कलहंसकलत्रसलीलगते !
शृणु मद्वचनं वद वैद्यमणे ! मदिरा मदिराक्षि ! शुचं शमयेत् ॥ ३२ ॥

शोकजन्य उपद्रव का उपाय—हे रत्नकले ! कलह मत करो । हे हंसिनी के समान विलासपूर्वक गमन करनेवाली ! सुनो, हे वैद्यों में श्रेष्ठ ! कहो । हे मदिराक्षि ! मदिरा (शराब) पीने से शोक नष्ट होता है ॥ ३२ ॥

उरुस्तम्भप्रतीकारमाह—

पुनर्नवा-नागर-दारुपथ्या-भल्लातकश्छिन्नरुहाकषायः ।
दशाङ्घ्रिमिश्रः परिपेय ऊरुस्तम्भेऽथ वा मूत्रपुरप्रयोगः ॥ ३३ ॥

उरुस्तम्भ की चिकित्सा—गदहपूर्णा, सोंठ, देवदारु, हर्रें, शु० भिलावा, गुड़ुची तथा दशमूल (बेल की छाल, सोनापाठा, गम्भारी, पाढल, अरणी, सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा, गोखरू) इन द्रव्यों का क्वाथ उरुस्तम्भ[1] में पान करे । अथवा गुग्गुलु को गोमूत्र के साथ सेवन करे ॥ ३३ ॥

मूत्रकृच्छ्रस्य चिकित्सामाह—

सक्षौद्रं कुश-काश-गोक्षुर-शिवा-शम्पाक-पाषाणभिद्-
दुःस्पर्शं परिसेवितं परिहरेत् सद्योऽश्मरीं दुस्तराम् ।
एला-पर्वतभिच्छिलाजतु-कणाचूर्णं गुडेनान्वितं-
यद्वा तण्डुलधावनोदकयुतं स्यान्मूत्रकृच्छ्रापहम् ॥ ३४ ॥

मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा—कुश की जड़, कास की जड़, गोखरू, हर्रें, अमलतास, पाषाणभेद तथा यवासा (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ शहद के साथ पान करने से भयंकर पथरी रोग को शीघ्र ही दूर करता है और इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत तथा पीपर (समभाग) इन द्रव्यों का चूर्ण गुड़ के शर्बत या चावल के धोवन के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र को नाश करनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

---

१. तदास्तभ्नाति तेनोरूस्तब्धौ शीतावचेतनौ ।
परकीयाविव गुरूस्यातमतिभृशव्यथौ ॥
ध्यानाङ्गमर्दस्तैमित्यतन्द्राच्छर्द्यरुचिज्वरैः ।
संयुक्तौ पादसदनकृच्छ्रोद्धरणसुप्तिभिः ॥
तमूरुस्तम्भमित्याहुराढ्यवातमथापरे ॥ (माधवनिदानम्)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूत्रकृच्छ्राश्मरीशर्कराघ्नः सदाहरुजाविबन्धमूत्रकृच्छ्रघ्नश्च क्वाथौ—

वासैला-मधुकाऽश्मभेद-चपला-कौन्तीक्षुरैरण्डजः—
क्वाथः साश्मजतुर्जयत्यतितरां कृच्छ्राश्मरीशर्कराः।
कृच्छ्रे दाहरुजाविबन्धसहिते क्वाथोऽश्मभिद्गोक्षुरा-
नन्तारग्वध-चेतकी-विरचितो मध्वन्वितः शस्यते ॥ ३५ ॥

मूत्रकृच्छ्रादिनाशक दो क्वाथ—अडूसा, छोटी इलायची, मुलेठी, पाषाण भेद, पीपर, रेणुका बीज, तालमखाना का बीज तथा रेड़ी का बीज (समभाग) इन द्रव्यों का क्वाथ शिलाजीत मिलाकर पान करने से मूत्रकृच्छ, पथरी तथा शर्करा को अच्छी तरह जीत लेता है। और पाषाणभेद, गोखरू, यवासा, अमलतास तथा हर्रें इन सबों का क्वाथ शहद के साथ सेवन करने से जलन, पीड़ा तथा मूत्र की रुकावट से युक्त मूत्रकृच्छ्र को दूर करने में प्रशस्त है ॥ ३५ ॥

व्यङ्गचिकित्सामाह—

न्यग्रोधाङ्कुर-कुष्ठ-रोध्र-विकसा-श्यामा-मसूराऽरुण-
श्रीखण्डैः पयसाऽन्वितैर्विरचितं व्यङ्गघ्नमुद्वर्त्तनम्।
लिप्तं सप्तदिनं मसूररजसा सर्पिः पयः श्यामता-
वक्त्रं शारदचन्द्रसुन्दरतरं व्यङ्गस्य भङ्गाद्भवेत् ॥ ३६ ॥

व्यङ्ग रोग की चिकित्सा—वट का अंकुर, कूठ, लोध, मंजीठ, प्रियङ्गु, मसूर तथा लालचन्दन इन सबों को दूध के साथ पीस कर उबटन बनाये। इस उबटन को लगाने से मुख का व्यङ्ग (झांई) नष्ट होता है, और मसूर से चूर्ण को घी तथा दूध में मिलाकर सात दिन तक मुख पर उबटन लगाने से व्यङ्ग के नष्ट हो जाने पर श्याम वर्ण का मुख शरद काल के चन्द्रमा की तरह अधिक सुन्दर हो जाता है ॥ ३६ ॥

मुखकान्तिप्रदतारुण्यजपिटकाघ्नारुंषिकानाशकाः लेपाः—

इङ्गुद्याः फलमज्जको जलयुतो लेपो मुखे कान्तिदो-
लोध्रोग्रा धनिकं निहन्ति पिटकास्तारुण्यजाँल्लेपनात्।
हार्यं रक्तमरुंषिकारुजि हितो मूत्रेण लेपोऽथ वा
पिण्याकस्य नवेतरस्य शकृतः पादायुधस्य ध्रुवम् ॥ ३७ ॥

मुखकान्तिप्रद तथा पिटकादि नाशक लेप—हिंगोट फल के गुद्दी को जल के साथ पीस कर लगाने से मुख की शोभा बढ़ती है। लोध, वच तथा धनियाँ

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एकत्र जल से पीसकर लेप करने से जवानी में होनेवाली पिडिकाओं (मुख पर होनेवाली फुन्सियों) को नष्ट करता है। अरुंषिका (शिरो व्रण) में रक्त का निर्हरण (जोंक लगवा कर या तुम्बी लगवा कर) करवाना चाहिए। या पुराने तिल की खल्ली को गोमूत्र में पीस कर लेप करने से अथवा मुर्गे के वीट का लेप करने से सिर की फुन्सियां अवश्य ही नष्ट हो जाती हैं॥ ३७॥

शोथ की चिकित्सा—

तैलं शोफमपारमप्यमप्यपहरेद् वृश्चीर-रास्ना-महा-
भैषज्यामर-शुष्कमूलकयुतं विम्वीरसे साधितम्।
तद्वद्विश्व-किरात-तिक्तमथवा पाठा-निशा-धावनी-
मुस्ता-जीरक-पञ्चकोलज-रजः संमिश्रमुष्णाम्बुना॥ ३८॥

शोथ की चिकित्सा—सफेदगदहपूर्ना, रास्ना, सोंठ, देवदारु, सूखीमूली इन सबों के कल्क के साथ पकाया हुआ तैल भयंकर शोथ को भी नष्ट करता है। (कल्क २५० ग्राम तिल तैल एक किलो, जल चार किलो मिलाकर तैल पाक विधि के अनुसार पाक करे) इसी प्रकार सोंठ तथा चिरायता के कल्क के साथ कुन्दरु के क्वाथ में तैल सिद्ध कर लगाने से शोथ शान्त होता है। अथवा पाठा, हल्दी, भटकटैया, नागरमोथा, जीरा, पञ्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) इन सबों के चूर्ण को गरम जल में मिलाकर लेप करने से शोथ नष्ट होता है। (तैल निर्माण में सामान्यतः तैल के चौथाई कल्क तथा चौगुना जल लेकर पकाना चाहिए। जब पानी जल जाय और उसको जलाने पर चिट-चिट का आवाज न हो तो तैल सिद्ध समझना चाहिए)॥ ३९॥

शिरोरुक्कर्णशूलयोः प्रतीकारमाह—

उग्रा-पाठा-पटोलौषध-रुवुकजटा शिग्रुदद्रुघ्नकुष्ठै-
र्धान्याम्लेन प्रपिष्टैः प्रशमयति महामूर्द्धरोगानशेषान्।
पक्वं पत्रं घृताक्तं रविभवमनले तापितं पीडितं त-
त्तोयं कर्णे च सिक्तं दलयति सकलं कर्णशूलं समूलम्॥ ३९॥

शिरः शूल तथा कर्ण शूल की चिकित्सा—वच, पाठा, परवल की पत्ती, सोंठ, एरण्ड की जड़, सहजन की छाल, चकवड़ के बीज तथा कूठ इन द्रव्यों को काञ्जी में पीस कर लेप करने से यह समस्त शिरो रोगों को नष्ट करता है। और

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पके हुए मदार के पत्ते को आग पर गरम कर तथा रस निचोड़ कर कान में छोड़ने से यह रस कान के सभी प्रकार के शूलों को समूल नष्ट करता है ॥३९॥

वातोपचारमाह—

घृततीक्ष्णयुतः सुरसास्वरसो लघुराजमृगाङ्क इति प्रथितः ।
अपहन्त्यनिलान्सबलान्बहुलान् निजभक्तरिपूनिव चक्रधरः ॥ ४० ॥

वात रोगों की चिकित्सा—घृत तथा मरिच चूर्ण से युक्त तुलसी का स्वरस, लघुराजमृगाङ्क नाम से प्रसिद्ध है। यह बलवान् बहुत से वातरोगों को नष्ट करता है। जैसे विष्णुभगवान् अपने भक्त के शत्रुओं को नष्ट करते हैं ॥ ४० ॥

वातनाशार्थं विलासिनीपरिरम्भणोपदेशः—

चूर्णाः कषाया गुटिका घृतानि तैलानि भागेन च योजितानि ।
विलासिनां वातविनाशनाय विलासिनीनां परिरम्भणानि ॥ ४१ ॥

वात नाश के लिये विलासिनी के साथ आलिङ्गन का उपदेश—वातशान्ति के लिये चूर्ण, कषाय, गुटिका घृत तथा तैल अपने-अपने भाग के अनुसार प्रयोग किये गये हैं, किन्तु विलासी पुरुषों के लिये विलासिनियों का आलिङ्गन ही श्रेष्ठ वात शामक है ॥ ४१ ॥

पित्तौषधमाह—

अमृतममृतजं सितासमेतं गुणवति ! पित्तमपाकरोति सद्यः ।
तरुण इव नितम्बिनीनितम्बाम्बरमतनुज्वरजर्जरीकृताङ्गः ॥ ४२ ॥

पित्त की चिकित्सा—हे गुणवति ! गुडूची का क्वाथ मिश्री मिलाकर सेवन करने से शीघ्र हो पित्त को शान्त करता है। जैसे कामज्वर से जर्जर शरीर वाला युवक नितम्बवाली स्त्रियों के कटिवस्त्र को दूर करता है ॥ ४२ ॥

कफौषधमाह—

कफाद् भवति भो भीरु। छिछ्नाकाथो मधूदरः ।
अस्यार्थो लक्ष्यते नैव तन्वङ्गि। तव मध्यवत् ॥ ४३ ॥

इति वैद्य लोलिम्बराजकृत वैद्यजीवनेऽतिसारादि प्रतीकारो नाम चतुर्थो विलासः ।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कफ का औषध—हे भीरु ! मधु के साथ गुडूची का क्वाथ कफ को नाश करनेवाला है। हे तन्वङ्गि ! इसका अर्थ तुम्हारी कटि की तरह सभी को नहीं ज्ञात होता है। (इस श्लोक में कफाद् शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार है। कफमत्तीति कफाद् अर्थात् कफ को खानेवाला) ॥ ४३ ॥

वैद्य जीवन में अतिसारादि प्रतिकार नामक चतुर्थ विलास समाप्त।

अथ पञ्चमो विलासः

वाजीकरणमाह—

तत्रादौ कामोद्दीपकद्रव्यनिर्देशः--

ताम्बूलं मधु कुसुमस्रजो विचित्राः कान्तारं सुरतरु वा विलासवत्यः।
गीतानि श्रवणहराणि मिष्टमन्नं क्लीवानामपि जनयन्ति पञ्चबाणम् ॥१॥

वाजीकरण में कामोद्दीपक द्रव्य का निर्देश-- पान, मद्य, अनेक प्रकार के विभिन्न पुष्पमालायें तथा देववृक्ष, मदार, मौलेशरी आदि से युक्त विशाल बगीचा, एवं हावभाव में चतुर स्त्रियाँ, सुनने में मनोहर लगने वाले गीत और मिष्टान्न (मधुर भोजन) ये सब चीजें नपुंसकों के भी काम को उद्दीप्त करते हैं ॥ १ ॥

समधुघृतमधुकप्रयोगः--

सहितं घृतेन मधुना मधुकं परिषेचितं पिबति योऽनुपयः।
नवसुभ्रुवां सुखकरः सततं स हि वीर्यपूरितपुरो भवति ॥ २ ॥

वाजीकरण में मधु-घृत के साथ मुलेठी का प्रयोग—जो पुरुष मुलेठी के चूर्ण को घृत तथा मधु के साथ (विषम मात्रा में) खाकर ऊपर से दूध पीता है, वह नवीन स्त्रियों के रति में समर्थ होने से सुख दायक होता है और उसका शरीर वीर्य से परिपूर्ण होता है ॥ २ ॥

अमृताऽऽदिचूर्णम्—

अमृताऽऽमलकत्रिकण्टकानां हविषा शर्करया निषेवणेन।
अजरा अमरा अपारवीर्या भलकेशा अदितेः सुता बभूवुः ॥ ३ ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
अमृतादिचूर्ण--अमृता (गुडूची), आँवला तथा गोखरु (समभाग), इन द्रव्यों का चूर्ण घी तथा शक्कर के साथ सेवन करने से अदिति के पुत्र अजर, अमर, अत्यधिक पराक्रमी या वीर्यवान् तथा अलकापुरी के स्वामी हुए। (यह अतिशयोक्ति परक वाक्य इस योग को सेवन करने के लिये प्रवृत्त कराने वाला है) ॥ ३ ॥

उच्चटाऽऽदिक्षीरपाकः--

उच्चटा-मर्कटी-गोक्षुरैश्चूर्णितैः शर्करादुग्धसम्मिश्रितैः पाचितैः।
सेवितैर्वार्द्धके मानवो मानिनीमानमुच्छेदयेत् किं पुनर्यौवने ? ॥ ४ ॥

उच्चटादिक्षीरपाक--उच्चाटा (श्वेत गुञ्जा-घुमुची), केवाछ के बीज तथा गोखरु (समभाग) इन सबों के चूर्ण को शक्कर तथा दूध में मिलाकर तथा क्षीरपाक[1] विधि से पकाकर सेवन करने से वृद्धावस्था में भी मनुष्य मानिनियों के मान को भंग कर देता है। यदि युवा अवस्था में सेवन करे तो क्या कहना है ॥ ४ ॥

वरीचूर्णप्रयोगः—

भुक्त्वा वरीं क्षीरयुतां विलासी भुङ्क्ते शतं सुन्दरि ! सुन्दरीणाम्।
त्वं तावदेकाऽसि मया तु साऽद्य भुक्ता रतौ पश्य कुतूहलं मे ॥ ५ ॥

शतावरी चूर्ण का प्रयोग—हे सुन्दरि ! विलासी पुरुष शतावरी चूर्ण को दूध के साथ खाकर एक सौ स्त्रियों के साथ रमण कर सकता है। तुम इस समय अकेली हो मैंने आज शतावरी को दूध के साथ खाया है, सम्भोग काल में मेरे कूतूहल को देखो। अर्थात् मैं सौ बार रमण कर सकता हूँ। (यहाँ भी अतिशयोक्ति के द्वारा शतावरी की प्रशंसा की गई है) ॥ ५ ॥

स्वरसभावितविदारीचूर्णप्रयोगः--

चूर्णो घृतक्षौद्रयुतो रसैः स्वैर्विभाविताया बहुधा विदार्याः।
निषेव्यमाणोऽनुदिनं विलासी दशाङ्गनाभिः सह रंरमीति ॥ ६ ॥

विदारीस्वरस से भावित उसके चूर्ण का प्रयोग—विदारीकन्द का चूर्ण उसी के रससे अनेक बार भावित कर तथा सुखा कर प्रतिदिन शहद तथा घी के साथ खाने से विलासी पुरुष दश स्त्रियों के साथ अच्छी तरह रमण करता है ॥ ६ ॥

---

१. द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात्तोयं चतुर्गुणम्।
क्षीरावशेषः कर्तव्यः क्षीरपाके त्वयं विधिः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विदारीचूर्णप्रयोगः—

सहितं घृतदुग्धाभ्यां विदारिप्रभवं रजः।
उदुम्बरमितं भुक्त्वा वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ७ ॥

विदारीकन्द के चूर्ण का प्रयोग—विदारीकन्द का चूर्ण एक उदुम्बर (एक कर्ष—१२ ग्राम) की मात्रा में घृत तथा दूध के साथ खाकर वृद्ध पुरुष भी युवा पुरुष की तरह आचरण करता है ॥ ७ ॥

सिताऽऽज्ययुक्तदुग्धप्रयोगः —

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्द्धनानि
किं सन्ति नो भुवि बहूनि रसायनानि ।
कन्दर्पवर्द्धिनि ! परन्तु सिताऽऽज्ययुक्ताद्
दुग्धादृते न मम कोपि मतः प्रयोगः ॥ ८ ॥

शक्कर तथा घी के साथ दूध का प्रयोग—सौभाग्य (सुन्दरता), मजबूती, बल तथा वीर्य को बढ़ाने वाले बहुत से रसायन[1] क्या इस संसार में नहीं हैं। अर्थात् बहुत से रसायन हैं। किन्तु हे काम को बढ़ाने वाली ! शक्कर तथा घृत से युक्त दूध को छोड़कर अन्य कोई प्रयोग मुझे अभिमत (अभीष्ट) नहीं है ॥८॥

रसप्रयोगाभिधानोपक्रमः—

अधुना ब्रूमहे सद्यश्चमत्कारकरान् रसान् ।
यतो न नीरसा भाति कविता कुलकामिनी ॥ ९ ॥

रसप्रयोग का क्रम—इस समय शीघ्र ही आश्चर्य जनक लाभ दिखाने वाले रसों को कहते हैं। क्योंकि नीरस कविता तथा कुलवधू अच्छी नहीं लगती है ॥९॥

विश्वतापहरणरसमाह—

पथ्या-कणाऽर्क-विषतिन्दुक-दन्तिबीज-
तिक्ता-त्रिवृद्रसबलीन्सदृशान् विमर्द्य ।
धूर्त्ताम्बुना सकलवासरमेष सूतः
स्याद्विश्वतापहरणोऽभिनवज्वरघ्नः ॥ १० ॥

---

१. यजरा व्याधि विध्वंसि सवयः स्तम्भकं तथा ।
चक्षुष्यं बृंहणं वृष्यं भेषजं तद् रसायनम् ॥
दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः।
देहेन्द्रियबलं कान्तिं नरो विन्देद् रसायानात् ॥ इति ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वतापहरणरस—हरें, पिप्पली, मदार की जड़, शुद्धकुचिला, शुद्ध-जमालगोटा, कुटकी, निशोथ, इन सबों का चूर्ण, पारद तथा गन्धक की कज्जली समभाग इन सबों को लेकर धतूरे के रस में एक दिन खरलकर बनाया हुआ यह विश्वताप हरण रस नूतन ज्वर को नाश करनेवाला होता है (मात्रा २४० मिली ग्राम मधु के साथ तीन वार दिन में) ॥ १० ॥

शीतारिनाम रसमाह—

शुल्बं टङ्कण-गन्धकौ च गरलं तुत्थं रसं खर्परं-
तालं तुल्यमिदं विमर्द्य घटिकामात्रं सुसेव्या रसैः ।
सूतः स्यात्त्रिपुरारिणा विरचितः शीतारिरित्थं स्मृतो-
ऽजाजीशर्करया युतः प्रशमयेदैकाह्निकादिज्वरम् ॥ ११ ॥

शीतारिनामकरस—ताम्रभस्म, सोहागा शुद्ध गन्धक,[1] शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध तूतीया, शुद्ध पारा,[2] शुद्ध खपरिया, शुद्ध हरताल समभाग इन द्रव्यों को लेकर करेला के रस में एक घड़ी तक घोट कर रस तैयार करे। इस प्रकार शंकर जी का बनाया हुआ यह शीतारि नामक रस भूनी जीरा का चूर्ण तथा शक्कर के साथ सेवन करने से ऐकाहिक आदि विषम ज्वरों को नष्ट करता है ॥ ११ ॥

कनकसुन्दररसमाह—

मरीच-बलि-हिङ्गुलैर्गरल-पिप्पली-टङ्कणैः
सुवर्णभववीजकैः समलवैर्दिनार्द्धावधिः ।
जयास्वरसमर्दितैः कनकसुन्दरः सुन्दरि !
स्मृतो ग्रहणिका-ज्वरातिसृति-वह्निमान्द्यापहः ॥ १२ ॥

---

१. गन्धक शोधन विधिः—

गन्धकं नवनीताख्यं क्षुदितं लोहभाजने ।
त्रिधा चण्डातपे शुष्कं भृंगराजरसाप्लुतम् ॥
ततो वह्नौ द्रवी भूतं त्वरितं वस्त्रगालितम् ।
यत्नाद् भृङ्गरसे क्षिप्तं पुनः शुष्कं विशुद्धयति ॥

२. रस शोधनम्—

जयन्त्याः वर्द्धमानस्य आर्द्रकस्वरसेन च ।
वायस्याश्चानुपूर्व्यैवं मर्दनं रस शोधनम् ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कनक सुन्दर रस—हे सुन्दरि ! मरिच, शुद्धगन्धक, शुद्धसिंगरफ, शुद्ध-वत्सनाम, पीपर, शुद्धसुहागा, शुद्ध धतूरे का बीज इन सबों को समभाग लेकर भांग के रस में आधे दिन (बारह घंटे) तक घोट कर तैयार करें। यह कनक-सुन्दर रस ग्रहणी, ज्वर, अतिसार तथा मन्दाग्नि को नाश करने वाला है ॥१२॥

पञ्चामृतपर्पटीरसमाह—

लौहाऽभ्राऽर्क-रसं समं द्विगुणितं गन्धं पचेत्कोलिका-
काष्ठाग्नौ मृदुले निधाय सकलं लोहस्य पात्रे भिषक्।
सर्वं गोमयमण्डले विनिहिते रम्भादले विन्यसे-
त्तस्योर्द्ध्वं कदलीदलं द्रुततरं वैद्येश्वरो निःक्षिपेत्।
स्यात्पञ्चामृतपर्पटी ग्रहणिका-यक्ष्माऽतिसार-ज्वर-
स्त्रीरुक्-पाण्डु गराम्लपित्त-गुदज-क्षुन्मान्द्यविध्वंसिनी ॥ १३ ॥
ग्रहण्यामनुपानं च हिङ्गुसैन्धवजीरकम्।
जीरकं पाण्डुगरयोरितेषु स्वयुक्तितः ॥ १४ ॥

पञ्चामृत पर्पटी रस—लौह भस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म तथा शुद्ध पारद समभाग इन द्रव्यों के दुगुना शुद्ध गन्धक लेकर लोहे की कड़ाही में रख कर बेर के लकड़ी की आग में मन्दाग्नि पर पकावें। पुनः गोबर पर केला का पत्ता रख कर उस पर पिघले हुए इन द्रव्यों को-गिरावे और ऊपर से केला का पत्ता रख कर गोबर की पोटली से दबा दें। इस प्रकार पञ्चामृत पर्पटी[1] तैयार हो जाती है। यह ग्रहणी, यक्ष्मा, अतिसार, ज्वर, स्त्रियों के रोग, पाण्डुरोग, विष, अम्लपित्त, अर्श, तथा अग्निमान्द्य को नष्ट करने वाली होती है। इसको ग्रहणी रोग में हींग, सेन्धानमक तथा भूनी जीरा के चूर्ण के अनुपान के साथ तथा

---

१. पर्पटी-निर्माण विधि—एक छुलछुल में घृत पोतकर उसमें पर्पटी के द्रव्यों को बेर के लकड़ी की मन्द आँच में पिघलायें और जमीन पर गोबर रख कर उस पर केला का पत्ता रख दे। इसी समय एक पत्ते में गोबर की पोटली बनाकर रख लें। जब पर्पटी द्रव्य पिघल जाय तब केला के पत्ता पर गिरा कर ऊपर केला का पत्ता रख दे और गोबर की पोटली से दबा दे। इससे अच्छी तरह सुन्दर आकार वाली पर्पटी तैयार हो जाती है। इसको काँच की शीशी में भर कर रख दे और प्रयोग में लावें।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाण्डु एवं विष रोग में जीरे का चूर्ण और अन्य रोगों में अपनी युक्ति से उचित अनुपान के साथ प्रयोग करे ॥ १३-१४ ॥

शूलादीनां भेषजम्—

वचा-विश्वा-जीरोषण-गरल-वाह्लीक दहन-
त्वचां कार्या वट्यश्चणकतुलिता मार्कवरसैः।
यथा भानोर्भासस्तिमिरनिकरं यामिनिभवं-
हरन्त्येताः शूलान्यनिलमनलग्लानिमपि च ॥ १५ ॥

शूल आदि रोगों का औषध—वच, सोंठ, जीरा, मरिच, शुद्ध विष [वत्सनाभ], हींग, चित्रक तथा दालचीनी, [समभाग] इन सबों के चूर्ण को भृगराज के रस में भावना देकर चने के बराबर वटी बनावें। यह वटी सभी प्रकार के शूल, वातरोग तथा अग्निमान्द्य को दूर करती है। जैसे सूर्य का प्रकाश रात्रि के अन्धकारसमूह को नष्ट करता है ॥ १५ ॥

विलासिनी वल्लभरसमाह—

समानभागे बलिशूलिबीजे तयोः समानं कनकस्य बीजम्।
धत्तूरतैलेन विमर्द्य सम्यग्विलासिनीवल्लभनामधेयः ॥ १६ ॥
सूतो भवेद्वल्लयुगप्रमाणः सितायुतो मेहसमूहहारी
वीर्यस्य बन्धं कुरुते नराणां निहन्ति दर्पं च सुलोचनानाम् ॥ १७ ॥

विलासिनी बल्लभ रस—शुद्ध गन्धक तथा शुद्ध पारा समभाग, [दोनों की कज्जली] तथा दोनों के बराबर शुद्ध धत्तूरे का चूर्ण इन सबों को लेकर धत्तूरे के तैल के साथ अच्छी तरह मर्दन कर वटी बनाये। यह विलासिनीवल्लभ नामक रस है। यह रस दो वल्ल [६ रत्ती] की मात्रा में मिश्री के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेह के रोगों को दूर करने वाला होता है और पुरुषों के वीर्यों को स्तम्भन करनेवाला एवं कामिनियों के दर्प को दलन करनेवाला है।१६-१७।

कतिपयरोगेष्वनुपानान्याह—

शूले हिङ्गुघृतान्वितं, मधुयुता कृष्णा पुराणज्वरे,
वाते साज्यरसोनकः, श्वसनके क्षौद्रान्वितं त्र्यूषणम्।
शीते व्याललतादलं समरिचं मेहे वरा सोपला,
दोषाणां त्रितयेऽनुपानमुचितं सक्षौद्रमार्द्रकम् ॥१८॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घनपर्पटकं ज्वरे, ग्रहण्यां मथितं हेम, गरे वमीषु लाजाः।
कुटजोऽतिसृतौ, वृषोऽस्रपित्ते, गुदकीलेष्वनलः, कृमौ कृमिघ्नः ॥१९॥

कुछ रोगों में अनुपान का निरूपण—शूलरोग में घृतमिश्रित हिंगु, पुराने-ज्वर में मधु के साथ पीपर का चूर्ण, वात रोग में घी से युक्त लहसुन, श्वासरोग में शहद से मिश्रित त्रूषण (सोंठ, पीपर, मरिच) का चूर्ण, शीतरोग में पान के रस के साथ मरिच का चूर्ण, प्रमेह में शक्कर के साथ त्रिफला [हर्रे, बहेड़ा, आंवला] का चूर्ण और सन्निपात रोग में शहद के साथ अदरख के रस का अनुपान उचित है ॥ १९ ॥

ज्वर में नागर मोथा तथा पित्तपापड़ा का क्वाथ या चूर्ण, ग्रहणी में बिना जल के मथा हुआ दही (मट्ठा), विष जन्य उपद्रव तथा वमन में धान का लावा, अतिसार में कुटज की छाल, रक्तपित्त में अडूसा, अर्श रोग [बवासीर] नें चित्रक तथा कृमिरोग में वायविडंग का अनुपान लाभदायक है ॥ १९ ॥

कुक्षिवातभवभयरोगाणां भेषजान्याह—

नारायणं भजत रे! जठरेण युक्ता—
नारायणं भजत रे! पवनेन युक्ताः।
नारायणं भजत रे! भव भीतियुक्ता-
नारायणात्परतरं न हि किञ्चिदस्ति ॥ २० ॥

उदर रोग वातरोग तथा भवभय रूपी रोग की औषध—उदररोग से पीड़ित मनुष्यों! नारायण[1] चूर्ण का का सेवन करो। हे वातरोगों से पीडित मनुष्यों!

---

1. यवानी हपुषाधान्यं त्रिफला चोपकुञ्चिका।
कारवी पिप्पलीमूलमज गन्धाशटीवचा ॥
शताह्वाजीरको व्योषं स्वर्णक्षीरी च चित्रकम्।
द्वौ क्षारौ पौष्करं मूलं कुष्ठं लवणपञ्चकम् ॥
विडङ्गं च समांशानि दन्त्या भागत्रयं भवेत्।
त्रिवृद्विशाले द्विगुणे शीतला स्याच्चतुर्गुणा ॥
एष नारायणो नाम्ना चूर्णोरोगगणापहः।
एनं प्राप्य निवर्तन्ते रोगा विष्णुं यथाऽसुराः ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
नारायणनामक[1] तैल का सेवन करो। हे संसार के भयरूपी रोग से व्याकुल पुरुषों

तक्रेणोदरिभिः पेयं गुल्मिभिर्बदराम्बुना।
आनद्धवाते सुरया वातरोगे प्रसन्नया॥
दधिमण्डेन विड्बन्धे दाडिमाम्बुभिरर्शसि।
परिकर्तेषु वृक्षाम्लैरुष्णाम्बुभिरजीर्णके॥
भगन्दरे पाण्डुरोगे कासे श्वासे गलग्रहे।
हृद्रोगे ग्रहणीरोगे कुष्ठे मन्दानले ज्वरे॥
द्रंष्ट्राविषे मूलविषे सगरे कृत्रिमे विषे।
यथार्हं स्निग्धकोष्णेन पेयमेतद् विरेचनम्॥

(भा० प्र० चि० ८ उदराधिकार श्लोक ४८–५४)

नारायण तैलम्—

१. बिल्वाग्निमन्थश्योनाकपाटलागणकारिका।
प्रसारण्यश्वगन्धा च बृहती कण्टकारिका॥
बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रा सपुनर्नवा।
एषां दशपलान् भागांश्चतुर्द्रोणाम्भसः पचेत्॥
पादशेषं परिस्राव्य तैलपात्रे प्रदापयेत्।
शतपुष्पा देवदारु मांसी शैलेयकं वचा॥
चन्दनं तगरं कुष्ठमेलापर्णी चतुष्टयम्।
रास्ना तुरगगन्धा च सैन्धवं सपुनर्नवम्॥
एषां द्विपलिकान् भागान् पेषयित्वा विनिः क्षिपेत्।
शतावरीरसञ्चैव तैलतुल्यं प्रदापयेत्॥
आजं वा यदि वा गव्यं क्षीरं दद्याच्चतुर्गुणम्।
पाने बस्तौ तथाभ्यंगे भोज्ये चैव प्रशस्यते॥
अश्वो वा वातभग्नो वा गजो वा यदि वा नरः।
पङ्गुश्च पीठसर्पो च तैलेनानेन सिद्ध्यन्ति॥
अधो भागे च ये वाताः शिरोमध्यगताश्च ये।
मन्यास्तम्भे हनुस्तम्भे दन्तरोगे गलग्रहे॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नारायण[1] भगवान् को भजो। क्योंकि नारायण[2] के अतिरिक्त दूसरा वस्तु नहीं हैं॥ २०॥

ग्रन्थकार परिचयः—

आयुर्वेदवचोविचारसमये धन्वन्तरिः केवलं-
सीमा गानविदां दिवाकरसुधाऽम्भोधित्रियामापतिः।
उत्तंसः कवितावतां मतिमतां भूभृत्सभाभूषणं
कान्तोक्त्याऽकृतवैद्यजीवनमिदं लोलिम्बराजः कविः॥ २१॥

इति वैद्यलोलिम्बराज कृत वैद्यजीवने वाजीकरणादिनिरूपणनामक—
पञ्चमो विलासः समाप्तः

यस्य क्षुद्‍यति चैकाङ्गं गतिर्यस्य च विह्वला।
क्षीणेन्द्रियाः क्षीणशुक्राः ज्वरक्षीणाश्च ये नराः॥
बधिराः ल्ल्लजिह्वाश्च मन्दमेधसएव च।
अल्पप्रजा च या नारी या च गर्भं न विन्दति॥
वातार्तौ वृषणौ येषामान्त्रवृद्धिश्च दारुणा।
एतत्तैलवरं तेषां शस्तं नारायणाभिधम्॥
(भै० र० वातव्याधि-चिकित्साधिकार श्लोक ३३२ से ४४२ तक)

१. भवभीति निरूपणं कुलार्णवे—
दुःखमूलं हि संसारः स यस्यास्ति स दुःखितः।
तस्य त्यागो कृतो येन स सुखी नापरः प्रिये!॥
प्रभवं सर्वदुःखानामालयं सकलापदाम्।
आश्रयं सर्वपापानां संसारं वर्जयेत् प्रिये!॥
अबन्धबन्धनं घोरमस्वीकृतमहाविषम्।
अशस्त्रखण्डनं देवि! संसारासक्तचेतसाम्॥

२. आपोनारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥
यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा।
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः॥
नारायणाय नम इत्यमुमेव सत्यं संसारघोरविषसंहरणाय मन्त्रम्।
श्रृण्वन्तु भव्यमतयो यतयोऽस्तरागा उच्चैस्तरामुपदिशाम्यहमूर्ध्वबाहुः॥
(इति नृसिंहपुराणे)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रन्थकार का परिचय—जो आयुर्वेद के वाक्यों के विचार काल में केवल धन्वन्तरि ही हैं, गानविद्या के विशेषज्ञों में सीमा स्वरूप हैं, सूर्यरूपी अमृत के समुद्र के चन्द्रमा स्वरूप हैं, पण्डितों तथा कवियों के सिर के भूषण हैं, और राजावों के सभा के रत्न हैं। ऐसे ललिम्बराज कवि ने अपनी कान्ता रत्नकला को सम्बोधित करते हुए इस 'वैद्यजीवन' नामक ग्रन्थ को बनाया ॥ २१ ॥

वैद्यजीवन में वाजीकरणादि निरूपण नामक पांचवाँ विलास समाप्त ॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिशिष्ट—१

प्राचीन परम्परा के अनुसार इस ग्रन्थ में भी मात्रा का निर्देश नहीं मिलता है। यद्यपि मात्रा की कल्पना रोग की अवस्था (तीव्रता, सौम्यता आदि), रोगी की आयु, शीतोष्णप्रदेश एवं वर्षा, शीत तथा ग्रीष्म आदि काल के अनुसार की जाती है तथापि चूर्ण, वटी, अवलेह आदि की एक सामान्य मात्रा का निर्देश पारिभाषिक की ग्रन्थों में मिलता है अतः वहाँ उसकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। सामान्यतः इस ग्रन्थ में क्वाथ तथा चूर्ण का अधिक प्रयोग किया गया है। साधारणतः चूर्ण की मात्रा ३ ग्रा० से ६ ग्राम की होती है। यदि तीक्ष्ण द्रव्यों का चूर्ण हो तो दो ग्राम से चार ग्राम तक तथा सौम्य द्रव्यों का चूर्ण हो तो चार ग्राम से आठ ग्राम तक मात्रा एक बार में दी जा सकती है। यह नियम उन्हीं स्थानों पर रहता है जहाँ पर मात्रा का निर्देश नहीं है। जहाँ पर मात्रा का निर्देश है वहाँ पर निर्देश के अनुसार ही प्रयोग करना चाहिये।

क्वाथ्य द्रव्यों की मात्रा जहाँ पर निर्दिष्ट नहीं है वहाँ पर क्वाथ्य द्रव्य २५ ग्रा० से ५० ग्रा० तक लेना चाहिए। क्वाथ बनाने की सामान्य विधि यह है कि क्वाथ्य द्रव्य के चौगुना या आठगुना जल (कठोर द्रव्यों में) के साथ क्वाथ पकाना चाहिए और चौथाई जल शेष रह जाय तो छान कर उचित अनुपान के साथ सेवन कराना चाहिए। वटी की सामान्य मात्रा १ ग्रा० से तीन ग्राम तक, अवलेह की मात्रा १० ग्रा० से २० ग्रा० तक सिद्ध घृत-तैल की मात्रा १० ग्राम से १५ ग्राम तक सेवन कराना चाहिए। रस-भस्मादिघटित वटी आदि की मात्रा तीक्ष्णता एवं सौम्यता के आधार पर मि० ग्रा० में ग्रहण किया जाता है। सामान्यतः १०० मि० ग्रा० से ५०० मि० ग्रा० तक सेवन कराया जाता है। विषघटित औषधों का प्रयोग सावधानी से देश, काल, अवस्था आदि का अच्छी तरह विचार कर मात्रा का निर्धारण करना चाहिए। तीक्ष्ण औषधों के साथ सौम्य अनुपान का प्रयोग चिकित्सक की बुद्धि का परिचायक होता है :—

न्यूनं स्यान्मात्रया द्रव्यं न व्याधिं विनिवर्तयेत्।
मात्रयाधिकया युक्तं जनयेच्चापदं परम्॥
मात्राया नास्त्यवस्थानं दोषमग्निं बलं वयः।
व्याधिं द्रव्यं च कोष्ठं च वीक्ष्य मात्रां प्रयोजयेत्॥

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैद्यजीवन का योगसंग्रह

प्रथम विलास

ज्वर चिकित्सा—सर्व प्रथम लङ्घन, देवदारु, धनियाँ, छोटी-कटेरी, बड़ी-कटेरी तथा सोंठ इन सबों के पाचन क्वाथ का प्रयोग। (वै० जी० १।१४)

वातिकज्वर में क्वाथ—गिलोय, सोंठ मोथा तथा यवासा का क्वाथ।

पित्त ज्वर में क्वाथ—चिरायता, कुटकी, मोथा, पित्त पापड़ा तथा यवासा का क्वाथ।

कफज्वर में क्वाथ—सोंठ, अडूसा, मोथा तथा यवासा का क्वाथ (वै० १।१५)।

वात ज्वर में पीयूषादि काथ—गुरुच, सोंठ तथा पिपरामूल का क्वाथ (वै० १।१६)।

ज्वर में उशीरादि काथ—खस, पृश्नीपर्णी, सोंठ, चिरायता, मोथा, शालपर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, गुरुच तथा गोखरु (वै० १।१७)।

वातपित्त ज्वर में पञ्चभद्र काथ—गुरुच, पित्तपापड़ा, मोथा, चिरायता तथा सोंठ (१।१८)।

पित्त ज्वर में क्वाथ—पित्तपापड़ा का क्वाथ (१।१९)।

पित्त ज्वर में क थ—पित्तपापड़ा, लालचन्दन, नेत्रवाला तथा सोंठ (१।२०)।

मूर्च्छादियुक्तपित्त ज्वर में द्राक्षादि काथ—मुनक्का, पित्तपापड़ा, अमलतास, कुटकी, मोथा तथा हरीतकी—इन सबों का क्वाथ मूर्च्छा, यक्ष्मा, पसीना आना, प्यास, प्रलाप तथा भ्रान्ति में।

ज्वर में स्पर्शादि काथ—यवासा मेंहदी, चिरायता, कुटकी, अडूसा तथा पित्तपापड़ा का क्वाथ शक्कर के साथ प्यास, जलन, रक्तपित्त तथा ज्वर में (१।२१)।

पित्त ज्वर में छिन्नादि क्वाथ—गुडूची, आँवला तथा पित्तपापड़ा का क्वाथ पित्त ज्वर में (१।२२)।

पित्त-कफज्वर में लोहितचन्दनादि काथ—लालचन्दन, पद्मकाठ, धनियाँ, गुडूची तथा नीम के छाल का क्वाथ पित्त-कफ ज्वर, जलन, पिपासा वमन तथा मन्दाग्नि में (वै० १।२३)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दाहयुक्तज्वरादि में जलादि क्वाथ—सुगन्धवाला, खस, नागरमोथा पित्तपापड़ा सोंठ तथा लालचन्दन इन सबों का क्वाथ जलन युक्त पित्तज्वर, प्यास तथा नवीन ज्वर में (१।२४)।

दाह में सहस्रधौतघृत—सहस्रधौतघृत का अभ्यङ्ग दाह में (१।२५)।

पित्त ज्वर के प्रतिकार—स्वच्छ कमल एवं पुष्प रस से युक्त हवा तथा जल क्रीड़ा प्यास तथा दाहशामक है (१।२६)।

सभी प्रकार के दाह में—चन्दनमुक्ता आदि से अलंकृत विशाल कुचस्थल वाल मधुभाषिणी सुन्दरियों का आलिङ्गन पित्तजन्य दाह शामक हैं (१।२७)।

दाह शामक-उपाय—केले का पत्ता तथा कमल की पखुड़ियों की निर्मित शय्या पर शयन करना, वृक्षपुष्पों से सुशोभित वन में मित्रों के साथ रहना, वीणा वादन के साथ मधुरगीतों का सुनना, शुक-भ्रमर एवं कोयल की मधुर क्रन्दन, मनोहर सुन्दरियाँ तथा सुन्दर कहानियाँ और स्वच्छ ताड़ के पंखे की हल्की हवा का सेवन करना ये सब दाह को दूर करते हैं (१।२८)।

प्यास, दाह तथा मूर्च्छा में—निम्ब के कोमल पत्तों के फेन का लेप करना प्यास, दाह तथा मूर्च्छा शामक है (१।२९)।

दाहशामकहिमादिलेप—सफेदचन्दन, कर्पूर तथा नेत्रबाला का अनुलेपन दाह शामक है (१।३०)।

ताप नाशक-उपाय—सफेद चन्दन का लेप लगाकर सुन्दर मकान के छत पर चन्द्रमा की चाँदनी में सोना ताप शामक है (१।३१)।

पित्त ज्वर में—प्रिया के अधर का पान पित्तज्वर शामक है। यह वैद्यराज लोलिम्बराज का अनुभूत है (१।३२)।

अन्तर्दाह में—रात की भिगोई धनियाँ का जल मिश्री मिला कर पान करना अन्तर्दाह शामक होता है (१।३३)।

वात-पित्त ज्वर में पञ्चमूल्यादि क्वाथ—लघुपञ्चमूल (सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी, वनभंटा तथा गोखरु), गुडूची, नागरमोथा, सोंठ तथा चिरायता इन सबों का क्वाथ वात्त पित्त ज्वर शामक है (१।३४)।

श्वास-कासयुक्त ज्वर में शृंग्यादि अवलेह—काकड़ासिंगी, पीपर, जायफल तथा पुष्करमूल के चूर्ण का शहद के साथ बनाया हुआ अवलेह श्वास-कासयुक्त कफज्वर शामक होता है (१।३५)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भार्ङ्ग्यादिकाथ—बभनेटी, गुडूची, नागरमोथा, देवदारु, भटकटैया, सोंठ, पीपर तथा पुष्करमूल इन सबों का क्वाथ ज्वरशामक, श्वास नाशक, भूख बढ़ाने वाला तथा रुचि कारक है (१२६)।

मुखतिक्ततानाशक क्वाथ—कुटकी का क्वाथ मुख के तीतापन को नाश करता है (१।३७)।

कफ ज्वर एवं कासादि में कट्फलादि क्वाथ—कायफर, रोहिततृण (अगिया खर), मोथा, धनियाँ काकड़ासिंघी, वच, हरीतकी, बभनेटी, पित्तपापड़ा, सोंठ तथा देवदारु इन सबों का क्वाथ हिङ्गु तथा शहद मिलाकर सेवन करना कास, श्वास, मुखरोग, ज्वर के वेग एवं कफ की वृद्धि को दूर करता है और गले के दर्द को भी नाश करता है (१।३८)।

अरुचिनाशक उपाय—निम्बू का केशर, घी तथा सेन्धा नमक मिलाकर खाने से भोजन की अरुचि नष्ट होती है (१।३९)।

सन्निपात ज्वर चिकित्सा में ग्रन्थादि क्वाथ—पिपरामूल, इन्द्रजव, देवदारु, गुग्गुल वायविडङ्ग, भृङ्गराज, दालचीनी, सोंठ, मरिच, पीपर, चित्रक, कायफर, पुष्करमूल, रासना, हर्रे, कण्टकारी, वनभन्टा अजवायन, जटामांसी, चिरायता, वच, चव्य तथा पाठा समभाग इन सबों का क्वाथ सभी प्रकार के सन्निपात, बुद्धिविभ्रम, स्वेदोगम, शीत, प्रलाप, शूल, पेट का दर्द, अफारा, विद्रधि, कफ वातजन्यरोग तथा प्रसूति रोग नाशक है (१।४०-४१)।

त्रिदोषादि में अर्कादि क्वाथ—मदार की जड़, लाल जवासा, चिरायता, देवदारु, रस्ना मेउड़ी (सिन्दुवार), वच, अरणी, सहिजन, पञ्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चिलक सोंठ), अतीस तथा भृङ्गराज इन सबों का क्वाथ शीघ्र ही भयङ्कर त्रिदोष, धनुर्वात, दाँतों का जकड़न, शीत, उग्रश्वास कास आदि रोगों का नाशक है (१।४२)।

सभी प्रकार के सन्निपात में तिक्तादि क्वाथ—कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गुडूची, कचूर, रास्ना, पीपर, पुष्करमूल, त्रायन्ती, भटकटैया, देवदारु, सोंठ, हरीतकी, जवासा, तथा बभनेटी इन सबों का क्वाथ सभी प्रकार के त्रिदोष, दिन में सोना, रात्रि में जागना, प्यास, मुख सूखना, जलन, खाँसी तथा सभी प्रकार के श्वासरोगों को नाश करने वाला है (१।४३)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सन्निपात में कर्णमूल शोथ के उपाय—कर्णमूलशोथ में जलौका से रक्त निर्हरण कराकर घृत पान कराना। रास्ना, सोंठ, बिजौरानिम्बू की जड़, चित्रक, दारुहल्दी तथा अरणी समभाग इन सबों का लेप कर्णमूलशोथ नाशक है (११४६)।

शिरःमूल आदि के निवारण के उपाय—लघुपञ्चमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, वनभंटा तथा गोखरु) का क्वाथ पार्श्वशिरःशूल (कनपटी का शूल) खाँसी, श्वास तथा जीर्णज्वर को दूर करता है। गुड़ और पिप्पली का चूर्ण मिलाकर खाने से जीर्णज्वर, अजीर्णरोग, मन्दाग्नि, अन्न में अरुचि, पाण्डु, उदर की कृमि, खाँसी तथा श्वास रोग नष्ट होता है इन रोगों के लिये यह सर्वोत्तम औषध है (११४७)।

कफजन्यजीर्ण ज्वर में गुडूची का कषाय—गुडूची का क्वाथ पीपर के साथ सेवन करने से श्लैष्मिक जीर्णज्वर नष्ट होता है (११४८)।

कफजन्यजीर्णज्वर में पञ्चमूलीकषाय—पञ्चमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया वनभंटा तथा गोखरु) का क्वाथ सेवन करने से कफजन्यजीर्णज्वर को नष्ट करता है (११४९)।

जीर्णविषमसन्निपातज्वरनाशक उपाय—कपूरकचरी, सोंठ, पित्तपापड़ा, देवदारु, यवासा, भटकटैया, मोथा, कुटकी तथा चिरायता इन सबों का क्वाथ शहद तथा पीपर का चूर्ण मिलाकर पीने से सन्निपात, विषमज्वर तथा जीर्णज्वर को शान्त करता है (११५०)।

ऐकाहिकज्वर में वासादि क्वाथ—अडूसा, परवल की पत्ती, हर्रे, बहेड़ा आँवला, मुनक्का, अमलतास तथा नीम के छाल का क्वाथ शहद मिश्री के साथ पीने से एकाहिक ज्वर (दिन में एकबार चढ़ने वाले) को नष्ट करता है (११५१)।

ऐकाहिकज्वर में जलाञ्जलि का प्रयोग—गङ्गा के तीर पर मृत किसी अपुत्र तपस्वी को जलाञ्जलि देने से एकाहिक ज्वर नष्ट होता है (११५२)।

तृतीयक ज्वर में रक्तचन्दनादि क्वाथ—रक्तचन्दन, धनियाँ, सोंठ, खस, पीपर तथा नागरमोथा का क्वाथ, शहद तथा मिश्री के साथ पीने पर तृतीयक ज्वर को नष्ट करता है (११५३)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चातुर्थिक ज्वर में हिंग्वादि नस्य—हिंगु तथा पुराने घी का नस्य चातुर्थिक-ज्वर को नष्ट करता है (१।५४)।

चातुर्थिक ज्वर में दूसरा नस्य—अगस्त्य के पत्ते के रस का नस्य चातुर्थिक (चौथिया) ज्वर को नष्ट करता है (१।५५)।

चातुर्थिक ज्वर में सुरदार्वादि काथ—देवदारु, हरीतकी, आँवला, शालपर्णी, आडूसा तथा सोंठ का क्काथ मधु तथा मिश्री के साथ मिलाकर पीने से चातुर्थिक ज्वर को शान्त करता है (१।५६)।

शीतज्वर की दवा—सोंठ, पीपर तथा मरिच चूर्ण के साथ मट्ठा पीना या केवल मद्य सेवन करना या अङ्गेठी रखकर आग तापना या भेड़ आदि के रोम-निर्मित कम्बल या कथरी ओढ़ना अथवा जवानी के मद से अलसाई तथा कस्तूरी एवं अगरलिप्त कठिन कुच वाली सुन्दरियों का आलिङ्गन शीतज्वर को शान्त करता है (१।५७)।

शीतज्वर में इन्द्रायणादि काथ—इन्द्रायण, चकवड़ के बीज, अडूसा, गुड़ूचो, सिन्दुवार, भृङ्गराज, सोंठ, छोटी भटकटैया तथा अजवायन इन सबों का क्काथ शीतज्वर नाशक है। १।५८

विषमज्वर में गुडूच्यादि काथ—गुडूची, आंवला, सोंठ, नागरमोथा तथा भटकटैया इन औषधियों का क्काथ मधु तथा पीपर चूर्ण मिलाकर पीने से विषमज्वर को नष्ट करता है (१।५९)।

विषमज्वर में रसोनकल्क—तैल के साथ लहसुन के कल्क का प्रयोग आर्दित (लकवा) तथा विषमज्वर को नष्ट करता है (१।६१)।

विषमज्वर नाशक चार औषध—१. हरें का चूर्ण मधु के साथ २. वर्द्धमान पिप्पली (क्रम से बढ़ाकर तथा घटाकर सेवन की हुई पिप्पली), ३. गुड़ के साथ जीराचूर्ण तथा ४. गुड़ के साथ अजवायन चूर्ण विषमज्वर को शान्त करता हैं (१।६२)।

विषमज्वर में पटोलादि काथ—परवल की पत्ती, कुटकी, मुलेठी तथा मोथा इस सबों का क्काथ शीघ्र ही विषमज्वर नाशक है। (१।६३)

विषमज्वर में कुलकादि काथ—परवल की पत्ती, नींम की छाल, भटकटैया, इन्द्रयव, गुडूची तथा नागरमोथा का क्काथ शहद के साथ पीने से विषमज्वर को नाश करता हैं (१।६४)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विषमज्वर में श्यामा का प्रयोग—मधु के साथ पीपर का चूर्ण विषमज्वर नाशक है। या मधु के साथ श्यामा (षोडश वर्षीया बाला) का आलिंगन विषमज्वर नाशक है (११६५)।

विषमज्वरनाशक मेघनाद मूल—चौराई की जड़ शिर पर बाँधने से विषमज्वर को नष्ट करती है (११६६)।

विषमज्वर में मदिरादि क्वाथ—धव का फूल, गुडूची तथा आंवला का क्वाथ शहद के साथ पीने से विषमज्वर (मलेरिया) को दूर करता है (११६७)।

विषमज्वर में अमृतादि क्वाथ—गुडूची, नागरमोथा तथा आंवला का क्वाथ शहद के साथ पीने से विषमज्वर को नष्ट करता है (११६८)।

ज्वरहरधूप—कूट, नीम की पत्ती, आंवला, वच, इन्द्रयव, घी, लाख तथा पीलीसरसों का धूप ज्वर को नष्ट करता है (११६९)।

दिन में दो बार आनेवाले ज्वर का औषध—कुटकी, खस, बला, धनियाँ, पित्तपापड़ा तथा नागरमोथा का क्वाथ दिन में दो बार आनेवाले ज्वर को नष्ट करता है (११७०)।

विषमज्वर एवं क्षयरोग में घृत का प्रयोग—शारिवा, भूँईआंवला, शालपर्णी, छोटीपीपर, कुटकी, सुगन्धबाला, त्रायमाणा, मुनक्का, कचावेल, वनभंटा, लाल चन्दन, अतीस, नागरमोथा तथा इन्द्रयव इनसबों के कल्क के साथ सिद्धघृत (घृत निर्माण विधि के द्वारा सिद्धघृत एक किलो, कल्क २५० ग्रा० तथा जल ४ कि०) विषमज्वर, क्षयरोग, सिर के एक पार्श्व का दर्द, अरोचक, वमन, शोथ तथा हलीमक रोग को नाश करता है (११७१)।

कर्मजज्वर के उपाय—पीपल के वृक्ष की पूजा, होम, मन्त्र का जप, शङ्कर-भगवान्, ब्राह्मण तथा गुरु की पूजा, विष्णुसहस्रनाम का पाठ, मणियों का धारण, दान करना तथा तपस्वियों का आशिर्वाद ग्रहण करना ये सब कर्मज आठों प्रकार के ज्वर को नष्ट करते हैं (११७२)।

ज्वरग्रस्त तथा ज्वरमुक्त रोगी को हितोपदेश—ज्वरपीड़ित या ज्वरमुक्त रोगी दिन के अन्त में हल्का भोजन करे (१७३)।

प्रथम विलास समाप्त।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीय विलास

ज्वरातिसार में अमृतादि क्वाथ—गुडूची, अतीस, इन्द्रयव, नागरमोथा, चिरायता तथा सोंठ इन सबों का क्वाथ अतिसार तथा ज्वर को नष्ट करता है। (२।१)।

सर्वविधातिसार नाशक शीतादिकाथ—लालचन्दन, खस, लामज्जक, कूडा की छाल, पाठा, कमल, धनियाँ, गुरुच, चिरायता, नागरमोथा, नेत्रबाला, कच्चे वेल की गुद्दी, अतीस तथा सोंठ इन सबों का बनाया हुआ क्वाथ शहद के साथ पीने से हिचकी, प्यास, जलन, अरुचि तथा सभी प्रकार के अतिसार को नष्ट करता है (२।२)।

ज्वरातिसार में पञ्चमूल्यादि क्वाथ—लघु पञ्चमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, वनभंटा, गोखरु), पाठा, मोथा बला, इन्द्रयव, कूड़ा की छाल, खस, कुटकी, गुरुच, सोंठ तथा वेल की गिरि इन सबों का क्वाथ खाँसी, श्वास तथा शूलयुक्त सभी प्रकार के ज्वरातिसार को नष्ट करता है (२।३)।

दोषों के अनुसार लघुपञ्चमूल तथा बृ० पञ्चमूल ग्रहण करने का निर्देश—कफ की अधिकता या वात की अधिकता के कारण ज्वरातिसार में गुरुपञ्चमूल (वेल की छाल, गम्भारी, सोनापाठा, पाढल तथा अरणी) हितकर है और पित्ताधिक के कारण ज्वरातिसार में लघु पञ्चमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, वनभटी, गोखरु) हितकर है (२।४)।

शोकातिसार की चिकित्सा—देवदारु, अतीस, पाठा, वायविडङ्ग, नागरमोथा, कालीमरिच और कूड़ा की छाल समभाग इन सबों का क्वाथ शोकातिसार को दूर करता है (वै॰ २।५)।

अतिसार में बालकादि काथ—नेत्रबाला, वेल की गिरि, नागरमोथा, धनियाँ तथा सोंठ इन सबों का क्वाथ अतिसार में लाभदायक है (२।६)।

पित्तातिसार में धान्यचतुष्क काथ—धनियां नेत्रबाला, वेल की गिरि तथा मोथा इन सबों का क्वाथ पित्तातिसार को रोक देता है (२।७)।

तीव्रातिसार में इन्द्रादि चूर्ण—इन्द्रयव, मोथा, धाय का फूल, वेलकी-गिरि, लोध, सोंठ तथा मोचरस इन सबों का चूर्ण मट्ठा के साथ सेवन करने से भयङ्कर अतिसार को शान्त करता है (२।८)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीव्रातिसार में शुण्ठ्यादि चूर्ण—सोंठ, धाय का फूल, मोचरस तथा अजवायन इन सबों का चूर्ण मट्ठा के साथ सेवन करने से तीव्र-अतिसार को नष्ट करता है। २१९

अतिसार एवं जाठराग्निवर्द्धन में श्यामा का प्रयोग—जलपीपर के साथ श्यामा (सारिबा) का चूर्ण अतिसार नाशक है तथा जाठराग्नि बर्द्धक है (२११०)।

रक्तआमशूलादियुक्त अतिसार में कुटजादि क्वाथ—कुटज की छाल, नागरमोथा, वेल की गिरि, अतनीस तथा नेत्रबाला इन सबों का क्वाथ रक्त, आम. तथा शूल से युक्त अतिसार को शान्त करता है (२।११)।

अतिसारों में बृ० गङ्गाधर चूर्ण—धाय का फूल, आँवला, नागरमोथा, पाठा, सोनापाठा, मुलेठी, कच्चेवेल की गिरि, जामुन की गुठली, आम की गुठली, सोंठ, अतीस, नेत्रबाला, लोध तथा इन्द्रयव समभाग इन सबों का चूर्ण चावल के धोअन के साथ सेवन करने से पुराने अतिसार को नाश करता है (२।१२)।

रक्तातिसार में दाडिमवत्सकत्वक् क्वाथ—अनार तथा कूड़ा के छाल का क्वाथ शहद के साथ मिलाकर पीने से तीव्र रक्तातिसार को शान्त करता है (२।१३)।

घिसे हुए चन्दन का प्रयोग—घिसा हुआ सफेदचन्दन चावल का धोअन, शहद तथा चीनी के साथ मिलाकर पोने से प्यास, रक्तगिरना, सभी प्रकार के रक्तस्राव प्रबलदाह तथा प्रमेह को नष्ट करता है (२।१४)।

गुड़ सहित कच्चे वेल का प्रयोग—कच्चे वेल की गिरि गुड़ के साथ सेवन करने से उदरशूल, आमशूल तथा अनेक प्रकार के रक्तातिसार को शान्त करता है (२।१५)।

असाध्य अतिसार के रोगियों के लिये उपदेश—प्यास, श्वास, कास, ज्वर, शोथ, मूर्च्छा, हिचकी, अन्न में अरुचि तथा शूल आदि युक्त अतिसार के रोगी को असाध्य समझना चाहिए। ऐसे रोगी को हे गोविन्द ! हे दामोदर ! हे माधव ! इस प्रकार भगवान् का स्मरण करना चाहिए। पूर्वोक्त उपद्रवों से युक्त अतिसार के रोगी अच्छा नहीं होते (२।१६)।

ग्रहणी रोग में यवान्यादि क्वाथ—अजवायन, सोंठ, खस, धनियाँ, अतीस,

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha
नागरमोथा, बला, वेल की गिरि, शालपर्णी, तथा पृश्निपर्णी इन सबों का क्वाथ रुचिवर्द्धक, पाचक तथा ग्रहणी दोष को दूर करता है (२।१७)।

ग्रहणी में पुनर्नवादिकाथ—गदहपूरना, मरिच, सरफोंका, सोंठ, चित्रक, हरें, करञ्ज तथा कच्चा वेल की गिरि इन सबों का क्वाथ सभी प्रकार के बवासीर, गुल्मरोग तथा ग्रहणी रोग को नष्ट करता है (२।१८)।

ग्रहण्यादिरोग में शुण्ठ्यादि काथ तथा शुण्ठीघृत—सोंठ, गुरुच, अतीस तथा नागरमोथा समभाग इन सबों का क्वाथ मन्दाग्नि तथा आमानुबन्धग्रहणी में लाभदायक है। सोंठ के कल्क के साथ सिद्धघृत (सोंठ का कल्क २५० ग्रा० घृत एक किलो तथा जल ४ किलो) पीने से पाण्डु, आमदोष, तथा खाँसी को नाश करता है और वायु का अनुलोमन करता है (२।१९)।

संग्रहणी आदि में पाठादि चूर्ण— पाठा, अतीस, कूड़ा की छाल, इन्द्रयव, नागरमोथा, कुटकी, धाय का फूल, रसाञ्जन (रसौंत) सोंठ तथा बेल की गिरि इन सबों का चूर्ण शहद में मिलाकर चावल के धोअन के साथ सेवन करने से संग्रहणी, प्रवाहिका, रक्तातिसार, गुदा की पीड़ा तथा बवासीर को नष्ट करता है (२।२०)।

पाण्डुज्वरादि में चन्द्रकलाचूर्ण—चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रयव, सोंठ, काली मरिच तथा पीपर और कूड़ा की छाल सोलह भाग तथा चित्रक दो भाग इन सबों का चूर्ण बनावे। यह चन्द्रकला नामक चूर्ण दुगुने गुड़ के साथ मिलाकर शीतल जल के साथ सेवन करने से पाण्डु, ज्वर, अतिसार, अरुचि, कामला, ग्रहणी, गुल्म तथा प्रमेह को नष्ट करता है (२।२१)।

हृद्रोग ग्रहणी आदि में क्षारद्वन्द्वादि चूर्ण—सज्जीखार, जवाखार, विडनमक, खारी नमक, सेन्धा नमक, सोंठ, पीपर, मरिच, चव्य, अजवायन, चित्रक, पिपरामूल, हींग, जीरा तथा सौंफ समभाग इन द्रव्यों का चूर्ण गरम जल या वनबैर के क्वाथ या मट्ठा के साथ सेवन करने से हृदय रोग, अग्निमान्द्य, वातगुल्म, अर्श तथा ग्रहणी रोग में लाभदायक है (२।२२)।

ग्रहण्यादि में द्विक्षारादि चूर्ण—सज्जीखार, जवाखार, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मरिच, सेन्धानमक, साबर नमक, विड नमक, सामुद्र नमक, कालानमक तथा अजवायन इन सबों का चूर्ण अम्लवेंत, निंबू या आँव

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के रस से भावित कर सेवन करने से कफ-वातजन्य रोग, ग्रहणी तथा अर्शरोग में लाभदायक है। पाचन के लिये इससे बढ़कर कोई चूर्ण नहीं है (वै० २।२३)।

ग्रहणी में चित्रकादि चूर्ण—चित्रक, चव्य, वेल की गिरि तथा सोंठ इन सबों का चूर्ण मट्ठा के साथ सेवन करने से कष्टप्रद ग्रहणी को नष्ट करता है (वै० २।२४)।

ग्रहण्यादि में रुचकादि चूर्ण—सोंचर नमक, चित्रक तथा मरिच का चूर्ण मट्ठा के साथ सेवन करने से ग्रहणी, उदर विकार, वात, गुल्म, अर्श, अग्निमान्द्य तथा प्लीहा को नष्ट करता है (२।२५)।

ग्रहणी विकार में पयोधरादि घृत—नागरमोथा, खस, इन्द्रयव, कच्चे-वेल की गिरि, नेत्रवाला तथा मोचरस इनके कल्क के साथ सिद्धघृत (कल्क २५० ग्रा० घृत १ किलो जल ४ किलो) आमानुबन्ध तथा रक्तयुक्त ग्रहणी विकार को शीघ्र ही नष्ट करता है (२।२६)।

द्वितीय विलास समाप्त।

तृतीय विलास

कास में बृ० पञ्चमूली क्वाथ—बृ० पञ्चमूल (बेल की गिरि, सोनापाठा, गम्भारी, पाढल तथा अरणी) का क्वाथ पीपल का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से खांसी नष्ट होती है (वै० जी० ३।१)।

कासश्वास में घनादि गुटिका—नागरमोथा, सोंठ तथा हरें समभाग इन सबों का चूर्ण दुगुने पुराने गुड़ के साथ गुटिका बनाकर मुख में रखकर चूसने से श्वास रोग तथा कास रोग को नष्ट करता है (३।२)।

श्वास-कास में विभीतकावलेह—बहेड़ा की छिलका एक सौ पल (पाँच किलो) बकरी का मूत्र एक सौ पल (पाँच किलो) में पकाकर अवलेह बनाये। यह शीतल होनेपर शहद मिलाकर सेवन करने पर प्रबल श्वास-कास को शीघ्र ही नष्ट करता है (३।३)।

कासादि में आर्द्रकपाक—आदी का रस ढाई किलो, गुड़ ढाई कि०, धनियाँ, अजवायन, लौहभस्म, कालाजीरा, दालचीनी, बड़ी इलायची, तेजपात

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा नागरमोथा समभाग इन सबों का चूर्ण प्रत्येक १५० ग्रा० लेकर आदी का रस तथा गुड़ मिलाकर कलछी से चलाते हुए पकावे और अवलेह तैयार कर ले। यह अवलेह खांसी, बवासीर, बुखार, पीनस (दुर्गन्धमयनासास्राव), शोथ, गुल्मरोग तथा क्षय रोग को नष्ट करता है (३।४)।

कास-श्वास में चिन्तामणि चूर्ण—रास्ना, बला, पद्मकाठ, देवदारु, हर्रे, बहेड़ा, सोंठ, काली मरिच, पीपर तथा वायविडंग समभाग इन द्रव्यों का चूर्ण विषम मात्रा में शहद तथा घृत के साथ सेवन करने से श्वास तथा खांसी को दूर करता है (३।५)।

श्वास रोग में वासादि क्वाथ—अडूसा, पीपर, गुडूची, वभनेटी, नागरमोथा, सोंठ तथा भटकटैया समभाग इन सबों का क्वाथ मरिच का चूर्ण मिलाकर पीने से श्वास वृद्धि रोग को शान्त करता है (३।६)।

कास रोग में लवङ्गादिगुटिका—लवङ्ग, मरिच तथा बहेड़े की छिलका समभाग चूर्ण तथा इन तीनों के बराबर खैरसार (खैर) लेकर बबूल के क्वाथ के साथ मर्दन कर वटी बनावे। यह वटी मुख में रखकर चूसने से आठ घड़ी में ही सभी प्रकार के खांसी को दूर करती है (३।७)।

श्वास रोग में नागर क्वाथ—सोंठ का क्वाथ श्वासरोग को शीघ्र ही शान्त करता है (३।८)।

कास में सिंही क्वाथ—भटकटैया का क्वाथ पीपर का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शीघ्र ही खांसी को दूर कर देता है (३।९)।

कास रोग में पिप्पल्यादि चूर्ण—पीपर, पिपरामूल, बहेड़ा तथा सोंठ इन सबों का चूर्ण शहद के साथ चाटने से खांसी को दूर करता है (३।१०)।

श्वास रोग में कटुतैलयुक्त गुड़ का प्रयोग—कड़ु तैल के साथ गुड़ मिलाकर चाटने से कास, (खाँसी) नष्ट हो जाता है (३।११)।

श्वास-कास रोग में बहेड़े का प्रयोग—बहेड़े की छिलका मुख में रखने से श्वास-कास नष्ट होता है (३।१२)।

कास-श्वास में शुण्डी-भार्गी क्वाथ—सोंठ तथा बभनेटी का क्वाथ सेवन करने से श्वास-कास को नष्ट करता है (३।१३)।

श्वास रोग में त्रिकटु चूर्ण का प्रयोग—त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच) का चूर्ण गुड़ तथा घी के साथ सेवन करने से श्वास रोग को शान्त करता है (३।१४)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्वास-कास रोग में अदरक के रस का प्रयोग—अदरक का रस शहद के साथ सेवन करने से श्वास-कास को दूर करता है (३।१५)।

कास रोग में अडूसे का क्वाथ—अडूसे का क्वाथ कास रोग को नष्ट करता है (३।१६)।

कास रोग में फलत्रयादि चूर्ण—फलत्रय (हर्रे, बहेड़ा, आंवला) गुडूची, चित्रक, रासन, वायविडिंग, सोंठ, मरिच तथा पीपर समभाग इन सर्वों का चूर्ण समभाग मिश्री मिलाकर सेवन करने से कास रोग को जीत लेता है। इसमें संदेह नही है (३।१७)।

कटिशूलादि में एरण्डतैलयुक्त दशमूल क्वाथ या शुण्ठी क्वाथ—एरण्ड तैल के साथ दशमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया वनभंटा गोखरु, बेल की गिरि, गम्भारी सोना पाठा, पाढ़ल, अरणी) का क्वाथ या सोंठ का क्वाथ, कमर दर्द, उदर दर्द तथा पेडू (वस्ति) का दर्द में पान करे। यह उपरोक्त रोगों को दूर करता है (३।१८)।

आमवात में एरण्ड तैलयुक्त रास्नादि क्वाथ—रासन, गुडूची, सोंठ, देवदारु, दोनों पञ्चमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी भटकटैया, वनभंटा, गोखरु, बेल की गिरि, गम्भारी, सोनापाठा, पाढल, अरणी) तथा इन्द्रयव इन सर्वों का क्वाथ रेंड़ी के तेल में मिलाकर पीने से आमवात को नाश करता है। ३।१९

आमवात में गुडूची तथा सोंठ का प्रयोग—गुडूची तथा सोंठ का क्वाथ पीने से आमवात को दूर करता है (३।२०)।

नेत्ररोग में कुलत्थाद्यञ्जन—भूसी निकाली हुई बनकुलथी को कपड़े में बाँधकर बकरी के दूध में दोला यन्त्र के द्वारा स्वेवन कर अच्छी तरह पीस ले और उसमें सेन्धानमक, रसौंत तथा हल्दी का चूर्ण मिलाकर लेप बना लें यह रात को आँख में लगाने से तीन दिन में नेत्र के रक्ताभिष्यन्द को शान्त करता है (३।२१)।

नेत्ररोग में शिग्र्वञ्जन—सहिजन के मुलायम पत्तों का रस शहद में मिलाकर लगाने से सभी प्रकार के नेत्ररोग को शान्त करता है। ३।२२

अर्जुन रोग नाशक-अञ्जन—समुद्रफेन मिश्री के साथ मिलाकर अञ्जन करने से अर्जुन (नेत्र के श्वेत पटल पर खरगोस के रक्त के समान विन्दु) रोग को नष्ट करता है (३।२३)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नेत्र रोग में घृतमधु के साथ त्रिफला का प्रयोग—त्रिफला (हरें, बहेड़ा, आँवला) का चूर्ण घृत तथा मधु (विषम मात्रा में) के साथ रात्रि में सेवन करने से नेत्र रोग में लाभ कारक होता है (३।२४)।

नक्तान्ध्य रोग में गोबर के रस के साथ पिप्पली का प्रयोग—गोवर के रस में पिप्पली को घिसकर आँख में लगाने से नक्तान्ध्य (रतौंधी) रोग नष्ट हो जाती है (३।२५)।

शुक्र (फूली) रोग में माक्षिक का प्रयोग—स्वर्ण माक्षिक शहद के साथ मिलाकर लगाने से नेत्र के शुक्र (फूली) रोग को नष्ट करता है (।३।२६)।

कामला रोग में त्रिफलादि क्वाथ—त्रिफला (हरें, वहेड़ा, आँवला) अडूसा, चिरायता, नीम की छाल, कुटकी तथा गुडूची के क्वाथ को शहद मिलाकर पीने से कामला रोग नष्ट होता है (३।२७)।

कामला नाशक नस्य—देवदाली फल के रस का नस्य कामला रोग को नष्ट करता है (३।२८)।

कामला नाशक अञ्जन—गेरु, हल्दी तथा आँवले के रस का अञ्जन कामला रोग को नष्ट करता है (३।२९)।

कामला रोग में सोंठ युक्त गोमूत्र का प्रयोग—सोंठ के चूर्ण के साथ गोमूत्र पीने से कामला रोग को नष्ट करता है (३।३०)।

योनि शूल में नींम तथा एरण्ड बीज का प्रयोग—नीम तथा रेड़ी के बीज को नींम की पत्ती के रस में पीसकर बनाई हुई वटी योनि में रखने से योनि शूल नष्ट होता है (३।३१)।

योनिशूलनाशक लेप—इन्द्रवारुणी (इनारुज) की जड़ । तथा सोंठ को बकरी के घृत में पीस कर योनि में लेप करने से योनि शूल नष्ट होता है (३।३२)।

स्तन्य (दूध) दोष का प्रतिकार—शारिवा, पाठा, देवदारु, चिरायता मूर्वा, कुटकी, गुडूची सोंठ, नागरमोथा तथा इन्द्रयव समभाग इन सबों का क्वाथ पीने से स्त्रियों के दूषितदूध का शोधन करता है। अर्थात् दूध पिलाने वाली स्त्रियों का दूध शुद्ध हो जाता है (३।३३)।

प्रदररोग का प्रतिकार—दारुहल्दी, रसौंत, नागरमोथा, अडूसा, चिरायता, भिलावा तथा कालातिल समभाग इन सबों का क्वाथ शहद के साथ पीने

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से सभी प्रकार के प्रदर (वातज, पित्तज, कफज तथा सन्निपातज) को नष्ट करता है (३।३४)।

प्रदर रोग में तण्डुलीयादि चूर्ण का प्रयोग—चौराई की जड़ का चूर्ण तथा (रसौंत) समभाग इन दोनों को चावल का धोवन तथा शहद के साथ सेवन करने से प्रदर रोग का भय नष्ट हो जाता है (३।३५)।

स्त्रियों के रजोऽवरोध तथा भ्रूणपात के उपाय—गवाक्षी (इन्द्रवारुणी-इनारुन) की जड़ योनि में रखने से रजोऽवरोध दूर हो जाता है। अर्थात् मासिक स्त्राव ठीक-ठीक होने लगता है और व्यभिचारिणियों का शीघ्र ही गर्भपात हो हो जाता है (३।३६)।

गर्भिणी के सुख प्रसव तथा वमन के उपाय—मुलेठी, बिजौरानिम्बु की जड़ पीसकर शहद तथा घृत (विषम मात्रा में) मिलाकर पीने से गर्भिणी प्रसव काल में सुखपूर्वक प्रसव करती है, और धनियाँ को पीसकर मिश्री तथा चावल के धोअन के साथ पीने से गर्भिणियों का वमन शान्त हो जाता है (३।३७)।

सूतिका रोग में धान्यादि क्वाथ तथा बालकों के वमन नाशक दो चूर्ण—धनियाँ, नागरमोथा, खस, सुगन्धवाला सोनापाठा, गुडूची, अतीस, बला, पित्तपापड़ा, यवासा तथा लालचन्दन इन सबों का क्वाथ गर्भिणी तथा नव प्रसूता के रक्तातिसार आमातिसार तथा ज्वर को नष्ट करने वाला है। नागरमोथा, काकड़ासिंघी तथा अतीस का चूर्ण शहद के साथ या केवल अतीस का चूर्ण शहद के साथ सेवन करने से बच्चों का वमन खाँसी तथा ज्वर नष्ट होता है (३।३८)।

बालकों के अतिसारनाशक उपाय—मजीठ, धाय का फूल, सारिवा तथा लोध समभाग इन सबों का क्वाथ शहद के साथ या धाय का फूल, पठानी लोध, कच्चेबेल का गूदा, नागरमोथा, मंजीठ, तथा नेत्रवाला इनका क्वाथ अथवा अवलेह शहद के साथ सेवन कराने से बालकों का अतिसार शान्त होता है (३।३९)।

तृतीय विलास समाप्त।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्थ विलास

क्षय रोग में वासा का प्रयोग—क्षय रोग में अडूसा का सेवन (अवलेह, क्वाथ या चूर्ण के रूप में लाभदायक) लाभदायक होता है (४।२)।

क्षय रोग में मधु, मिश्री तथा मक्खन का प्रयोग—मक्खन, मिश्री तथा शहद मिलाकर खाने से क्षय रोग नष्ट होता है (४।३)।

व्रण रोग का प्रतिकार—त्रिफला (हर्रें, बहेड़ा, आँवला) का क्वाथ गुग्गुल के साथ सेवन करने से व्रण रोग को नष्ट करता है (४।४)।

मेद रोग का प्रतिकार—शीतल जल में मधु मिला कर प्रतिदिन प्रातः काल पीने से मोटापा दूर होती है अर्थात् शरीर का मेदक्षय होने से मनुष्य पतला हो जाता है (४।५)।

क्रिमिरोग में त्रिकटुकादि काथ—त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच), त्रिफला (हर्रें, बहेड़ा, आँवला) इन्द्रयव, नीम की छाल, निशोथ, वच तथा खैरसार इन सबों का क्वाथ गोमूत्र मिलाकर पिलाने से क्रिमियों को नष्ट करता है (४।६)।

मुख पाक में जात्यादि क्वाथ—चमेली की पत्ती, त्रिफला (हर्रें, बहेड़ा, आँवला) यवासा, दारुहल्दी, गुड़ूची, तथा मुनक्का समभाग इन सबों का क्वाथ कुल्ला करने से मुख के छाले को नष्ट करता है (४।७)।

अम्लपित्त में भूनिम्बादि काथ—चिरायता, नींम की छाल, त्रिफला (हर्रें, बहेड़ा, आँवला), परवल की पत्ती, अडूसा, गुड़ूची, पित्तपापड़ा तथा भृङ्गराज समभाग इन सबों का क्वाथ शहद मिलाकर पीने से अम्लपित्त को शान्त करता है (४।८)।

प्रमेह की चिकित्सा—हल्दी का चूर्ण तथा आँवला का रस या क्वाथ शहद के साथ पीने से प्रमेह को नष्ट करता है (४।९)।

सर्वप्रमेहनाशक मधुयुक्त गुडूचीस्वरस का प्रयोग—गुडूची का स्वरस शहद के साथ सेवन करने से अनेक प्रकार के प्रमेह को नष्ट करता है (४।१०)।

वातरक्त का औषध—गुडूची का स्वरस या क्वाथ रेंड़ी के तैल के साथ पीने से प्रबल वातरक्त को नष्ट करता है (४।११)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वातरक्त में पिण्डतैल तथा एरण्डादि क्वाथ—मुलेठी, मंजीठ, शारिवा तथा राल के कल्क के साथ सिद्ध (कल्क २५० ग्रा०, तैल १ कि०, जल ४ किलो) यह पिण्ड तैल लेप करने से वातरक्त को दूर करता है। रेंड़ी का बीज, अडूसा तथा गुडूची इन सबों का क्वाथ रेंड़ी के तैल के साथ पीने से वातरक्त को नष्ट करता है (४।१२)।

विसूचिका (हैजा) की चिकित्सा—लहसुन , जीरा, सेन्धानक, गन्धक, त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरिच) तथा हिंग समभाग इन द्रव्यों का चूर्ण निम्ब के रस के साथ सेवन करने से विसूचिका को दूर करता है (४।१३)।

विषूचिका में प्यास तथा वमन का उपचार—कूट, धान की लावा, कमलगट्टा, वट की कोमल जटा तथा मुलेठी इन सबों का चूर्ण शहद के साथ वटी बनाकर मुँह में रखने से जल्दी-जल्दी लगने वाले तेजप्यास को शान्त करता है और बड़ी इलायची, धान की लावा, लौंग, नागकेशर, पीपर, प्रियगु, वेर की गुठली की गिरि, नागरमोथा तथा सफेद चन्दन समभाग इन सबों का चूर्ण मधु तथा मिश्री के साथ मिलाकर खाने से त्रिदोषज वमन को शान्त करता है (५।१४)।

सूर्य का ताप लगने की चिकित्सा—सूर्य की गर्मी के कारण पसीना निकलने पर कमल के पत्त तथा केले के पत्ते से निर्मित शय्यापर शीघ्र ही शयन करना चाहिए (४।१५)।

पामा का उपचार—पारा, दोनों जीरा (स्याहजीरा, सफेदजीरा) दारु-हल्दी, हल्दी. मरिच, सिन्दूर, गन्धक तथा मैनसिल समभाग इन सबों का चूर्ण घृत में मिलाकर तीन बार लेप करने से पामा (खुजली) को दूर करता है (४।१६)।

विपादिका की चिकित्सा—मोम, सेन्धानमक, गुग्गुल, गेरु, घी, शहद तथा सुगन्धवाला को खरल में मर्दन कर लेप करने से तीव्र विपादिका (बेवाई) रोग को दूर करता है (४।१७)।

अर्श आदि रोग की चिकित्सा—हरें, काला तिल तथा शु० भिलाँवा इन सबों के चूर्ण को गुड़ के साथ मोदक बनाकर खाने से अर्श, पाण्डु, ज्वर, कुष्ठरोग, कास तथा श्वासरोग नष्ट होता है। यह प्लीहा रोग को भी नष्ट करता है (४।१८)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गण्डमाला रोग की चिकित्सा—शु० भिलाँवा, हीराकसीस, चित्रक तथा जमालगोटे की जड़ इन सबों को गुड़ में सेंहुड़ का दूध तथा मदार के दूध के साथ पीस कर लेप करने से गण्डमाला रोग नष्ट होता है (४।१९)।

कण्ठ रोग की चिकित्सा—इन्द्रयव, कुटकी, पाठा, अडूसा, नागरमोथा तथा देवदारु इन सबों का क्वाथ शहद के साथ पीने से सभी प्रकार के भयङ्कर कण्ठ रोगों को नष्ट करता है तथा पाठा, गजपीपर, रसौंत, जवाखार, पीपर, हल्दी तथा देवदारु समभाग इन सबों के चूर्ण को शहद के साथ मर्दन कर वटी बनावे। यह वटी मुख में रखने से कण्ठ रोगों को नष्ट करती है (४।२०)।

मन्दाग्नि की चिकित्सा—मन्दाग्नि में निम्बु का रस, सेन्धानमक तथा अदरक का रस एक साथ मिलाकर भोजन के पहले खाने से जाठराग्नि को बढ़ा देता है (४।२१)।

अश्मर्यादि रोग की चिकित्सा—हिङ्गु, सर्ज्जीखार, जवाखार, सेन्धानमक सोंचरमक, विडनमक, पीपर, पिपरामूल, चित्रक, चव्य, मरिच, धनियाँ, जङ्गली-तुलसी, इमली, वच, अजवाइन, अम्लवेंत, पुष्करमूल, सोंठ, करंज, जीरा, पाठा तथा हाऊवेर समभाग इन सबों का चूर्ण सेवन करने से पथरीरोग, हृदयरोग गले का रोग, विबन्ध (कब्ज) आध्मान, हिचकी, वर्ध्मरोग, बवासीर वातगुल्म अनेक प्रकार के शूल, प्लीहा, पाण्डु, श्वास, कास, अग्निमाद्य तथा मुख की फीकापन को दूर करता है (४।२२)।

अग्निमान्ध में हिङ्ग्वष्ट चूर्ण तथा वृक्षाम्लादि चूर्ण—शु० हिङ्गु, सोंठ, मरिच, पीपर, अजवायन, सफेदजीरा स्याहजीरा और सेन्धानमक समभाग इन सबों का चूर्ण घी के साथ भोजने के प्रथम ग्रास में खाने से मन्दाग्नि को प्रदीप्त करता है। इमली, अम्लवेंत, चित्रक, हर्रें, सोंठ, पीपर, मरिच, सेन्धानमक, विडनमक वायविडग, सफेदजीरा, स्याहजीरा, अजमोदा, अजवायन तथा सोचर-नमक इन सबों का चूर्ण गरिष्ठ अन्न को पचा देता है (४।२३)।

सभी प्रकार के उदर विकार में लोलिम्बराज नामक चूर्ण—सोंठ पाँच-भाग, पीपर चार भाग, अजमोदा तीन भाग, अजवायन दो भाग, सेन्धानमक, एक भाग तथा इन सबों के बराबर हरीतकी (पन्द्रहभाग) इन सबों का चूर्ण बना ले। यह लोलिम्बराज नामक चूर्ण है। यह चूर्ण पेट में वायु का भरना या

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदर की गुड़-गुड़ाहट, शूल, आँव, वातगुल्म तथा मल के विकारों को नष्ट करता है। यह गरिष्ठ भोजन को भी पचाता है (४।२४)।

विद्रधि की चिकित्सा—सहिजन की छाल, अजवाइन, वरुण की छाल, हल्दी, दारुहल्दी तथा पीपल की छाल समभाग इन सबों का क्वाथ रक्तबोल का चूर्ण मिलाकर पीने से अन्दर की विद्रधि (हृदय का व्रण) नष्ट होता है (४।२५)।

हृदय रोग की चिकित्सा—अर्जुन की छाल के कल्क तथा क्वाथ के साथ सिद्धघृत (कल्क १२५ ग्रा० घृत १ कि० स्वरस २ कि० तथा जल २ कि०) हृदय रोगों में लाभदायक है (४।२६)।

दन्तरोग की चिकित्सा—मौलेशरी की छाल अधिक समय तक प्रतिदिन चबाने से या इसके चूर्ण का मञ्जन करने से बहुत दिनों से हिलते दाँत स्थिर हो जाते हैं (४।२७)।

रक्तपित्त की चिकित्सा—मुनक्का तथा हर्रे का क्वाथ चीनी तथा शहद मिलाकर पीने से श्वास कास को नष्ट करता है तथा रक्तपित्त को शान्त करता है (४।२८)।

रक्तपित्त में वासा क्वाथ का प्रयोग—अड़ूसा का क्वाथ रक्त पित्त को नष्ट करता है (४।२९)।

हिक्का की चिकित्सा—सोंठ, पीपर तथा आँवले का चूर्ण मिश्री तथा शहद मिलाकर चाटने से हिक्का को नष्ट करता है और गुड़ तथा सोंठ का चूर्ण नस्य लेने से हिक्का (हिचकी) को नष्ट करता है (४।३०)।

भ्रमरोग की चिकित्सा—यवासा का क्वाथ घृत के साथ सेवन करने से भ्रम रोग को नष्ट करता है (४।३१)।

शोक की चिकित्सा—मद्यपान शोक को नष्ट करता है (४।३२)।

उरुस्तम्भ की चिकित्सा—पुनर्नवा, सोंठ, देवदारु, हर्रे, शु० भिलावा, गुडूची तथा दशमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, वनभन्टा, गोखरू, बेल की छाल, गम्भारी, सोनापाठा, पाढल तथा अरणी) समभाग इन सबों का क्वाथ पीने से उरु स्तम्भ को नष्ट करता है, अथवा शु० गुग्गुल, गोमूत्र के साथ खाने से उरु स्तम्भन को नष्ट करता है (४।३३)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा—कुश, कास, गोखरु, हर्रे, अमलतास, पाषाणभेद तथा यवासा समभाग इन सबों का क्वाथ शहद मिलाकर पीने से शीघ्र ही असाध्य पथरी रोग को नष्ट करता है और छोटी इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत तथा पीपर का चूर्ण समभाग इन सबों को लेकर गुड़ के शर्वत या चावल के धोअन के साथ पीने से मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है (४।३४)।

मूत्रकृच्छ्रादिरोगों में अडूसादि एवं पाषाणभेदादि क्वाथ—अडूसा, इलायची, मुलेठी, पाषाणभेद, पीपर, रेणुकाबीज, तालमखाना, तथा रेड़ी का बीज समभाग इन सबों का क्वाथ शिलाजीत मिलाकर पीने से अश्मरी तथा शर्करा रोग को अच्छी तरह नष्ट करता है, और पाषाणभेद, गोखरु, यवासा, अमलताल तथा हर्रे का क्वाथ मधु मिलाकर पीने से दाह, पीडा, मूत्रावरोध तथा मूत्रकृच्छ्र को दूर करता है (४।३५)।

व्यङ्ग (मुख की झाई) की चिकित्सा—बट का अङ्कुर, कूठ, लोध, मंजीठ, फूलप्रियङ्गु, मसूर तथा लालचन्दन समभाग इन सबों को दूध के साथ पीसकर उवरन लगाने से व्यङ्गरोग (मुख की झाई) नष्ट होता है और मसूर के आटे को घी तथा दूध में मिलाकर सात दिन तक मुख पर मलने से व्यङ्ग रोग नष्ट होता है (४।३६)।

मुख कान्तिप्रद अरुंषिकानाशकादि लेप—(१) इङ्गुदी (हिङ्गोट-फल) की गूदी जल के साथ पीसकर लेप लगाने से मुख की कान्ति बढ़ती है। (२) लोध, वच तथा धनियाँ को पीसकर लेप लगाने से मुख की पिड़िका नष्ट होती है। (३) शिरोव्रण में जोंक लगवाकर रक्त निर्हण करना चाहिए। या पुराने तिल को गोमूत्र में पीसकर लेप करने से मुख की झाई आदि में लाभदायक है। (५) मूर्गे के बीट का लेप झाई आदि में लाभदायक है (४।३७)।

शोथ की चिकित्सा—सफेद गदहपूरना, रासन, सोंठ, देवदारु तथा सूखी-मूली समभाग इन सबों के कल्क के साथ कुन्दरु के रस में सिद्ध तैल (कल्क २५० ग्रा०, तैल १ कि०, रस ४ कि०) शोथ को नष्ट करता है और उसी प्रकार सोंठ तथा चिरायता के कल्क के साथ कुन्दरु के रस में सिद्ध तैल शोथ को नष्ट करता है। अथवा पाठा हल्दी, भटकटैया, नागरमोथा, जीरा तथा पञ्चकोल (पीप्पली, पिपरामूल, चव्या चित्रक, सोंठ) समभाग इन सबों का चूर्ण जल के साथ लेप बना कर लगाने से शोथ को नष्ट करता है (४।३८)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शिरः शूल तथा कर्णशूल की चिकित्सा—वच, पाठा, परवल की पत्ती, सोंठ, रेड़ की जड़, सहिजन की छाल, चकवड के बीज तथा कूट समभाग इन सबों को कांजी के साथ पीसकर सिर पर लेप करने से सभी प्रकार के सिर के रोग शान्त होते हैं। पके हुए मदार के पत्ते को घृत से लिप्त कर तथा आग में तपा कर उसका रस निचोड़ ले और कान में छोड़े। यह रस सभी प्रकार के कर्णशूल को जड़ से नष्ट करता है (४।३६)।

वात रोग की चिकित्सा—घृत तथा मरिच चूर्ण से युक्त तुलसी का स्वरस "लघुराजमृगाङ्क" कहा जाता है। यह पान करने से प्रबल वातरोग को नष्ट करता है (४।४०)।

वातनाशक-उपचार—विलासी पुरुष के लिये विलासिनी स्त्रियों का आलिङ्गन वातशामक होता है। उन लोगों के लिये चूर्ण, बटी, तैल आदि की कोई आवश्यकता नहीं है (४।४१)।

पित्तशामक औषध—गुडूची का स्वरस या क्वाथ मिश्री के साथ मिलाकर पीने से पित्तजन्य दाहादि उपद्रवों को शान्त करता है (४।४२)।

कफशामक-औषध—गुडूची का स्वरस या क्वाथ मधु के साथ पीने से कफजन्यशीतादि को शान्त करता है (४।४३)।

चतुर्थ विलास समाप्त।

पाँचवाँ विलास

कामोद्दीपक द्रव्य—पान, मद्य, अनेक प्रकार की पुष्प-माला, देवताओं के प्रियवृक्ष मदार, वकुल आदि से युक्त विशाल बगीचा, हाव-भाव में प्रवीण स्त्रियाँ, मन को आकृष्ट करने वाले गीत तथा मिष्ठान्न ये सब कामोद्दीपक होते हैं। ये सब नपुंसकों का भी कामोद्दीपक होते हैं (५।१)।

मधु-घृतयुक्त मुलेठी का प्रयोग—मुलेठी के चूर्ण को मधु तथा घृत के साथ मिलाकर चाटने के बाद जो दूध पीता है वह स्त्रियों के साथ संभोग करने में समर्थ होता है और परिपूर्ण वीर्य से युक्त हो जाता है (५।२)।

वीर्य वर्द्धक अमृतादि चूर्ण—गुडूची, आँवला, तथा गोखरु के चूर्ण को घृत तथा शक्कर के साथ सेवन करने से मनुष्य पर्याप्त वीर्य से युक्त हो है (५।३)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कामवर्द्धक उच्चटादिक्षीरपाक—सफेदघुघुची, केवाछ के वीज तथा गोखरु इन सबों के चूर्ण चीनी तथा दूध के साथ क्षीरपाकविधि के अनुसार क्षीरपाक बनाकर सेवन करने से वृद्धावस्था में भी अपने सामर्थ्य से स्त्रियों के मान की मर्दन करता है। युवास्था में तो कोई सन्देह नहीं है (५।४)।

वीर्यवर्द्धक शतावरीचूर्ण का प्रयोग—मनुष्य केवल शतावरी का चूर्ण दूध के साथ सेवन करने से सैकड़ों स्त्रियों के साथ संभोग कर सकता है (५।५)।

वीर्यवर्द्धकविदारीकन्द के चूर्ण का प्रयोग—विदारीकन्द के स्वरस से भावित विदारीकन्द का चूर्ण शहद तथा घृत के साथ प्रतिदिन सेवन करने से सैकड़ों औरतों के साथ संभोग कर सकता है (५।६)।

विदारी चूर्ण का प्रयोग—विदारीकन्द का चूर्ण एक तोला (१२ ग्राम) की मात्रा में घृत तथा दूध के साथ सेवन करने से वृद्धपुरुष भी युवा पुरुष की तरह स्त्रियों के साथ संभोग करने में समर्थ होता है (५।७)।

घृत तथा चीनी के साथ दूध का प्रयोग—मिश्री तथा घृतयुक्त दूध सेवन करने से अच्छी तरह कामवर्द्धक होता है। इससे अधिक कोई भी रसायन कामवर्द्धक नहीं होता है (५।८)।

विश्वतापहरणरस—हर्रें, पीपर, मदार की जड़, शु० कुचिला, शु० जमालगोटा, कुटकी, निशोथ समभाग इन सबों का चूर्ण तथा शु० पारद-गन्धक की कज्जली समभाग इन सबों को धत्तूर के रस में एक दिन घोट कर दो-दो रत्ती (२५० कि० ग्रा०) की वटी बनावें। यह विश्वतापनाशकरस एक-एक वटी दिन में तीन बार शहद के साथ सेवन करने से नवीन ज्वर को नष्ट करता है (५।१०)।

शीतादि रस—ताम्रभस्म, शु० सोहागा, शु० गन्धक, शु० वत्सनाम, शु० तूतिया, शु० पारद, शुद्ध खपरिया तथा शुद्धहरताल समभाग इन सबों को लेकर करैला के रस के साथ एक घण्टा मर्दन कर वटी बनावें। यह शीतारि रस (एक—१२० मि० ग्रा० की मात्रा में तीन बार) भूने जीरा का चूर्ण तथा शक्कर के साथ सेवन करने से ऐकाहिक आदि विषय ज्वर को नष्ट करता है (५।११)।

कनक सुन्दर रस—मरिच, शु० गन्धक, शु० हिङ्गुल, शु० पत्सनाभ, पोपर, शु० सोहागा तथा शु० धत्तूरे का बोज समभाग इन सबों को लेकर भाँग के रस के साथ आधे घण्टे तक मर्दन कर (एक-एक रत्ती—१२० कि० ग्रा०)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वटी बनाये। यह कनकसुन्दर रस (एक-एक वटी की मात्रा में दिन में तीन वार) मधु के साथ सेवन करने से ग्रहणी, ज्वर, अतिसार तथा अग्निमान्य को नष्ट करता है (५।१२)।

पञ्चामृत पर्पटी—पञ्चामृतपर्पटी ग्रहणी रोग में हिङ्गु, सेन्धानमक तथा भूनीजीरा के चूर्ण के साथ तथा पाण्डु एवं विषविकार में भुनीजीरा के चूर्ण के साथ एवं अन्य रोगों में रोग नाशक अनुपानों के साथ प्रयोग करे। यह पर्पटी ग्रहणी, राजयक्ष्मा, अतिसार, ज्वर स्त्रियों के प्रदरादि रोग, पाण्डुरोग, विषविकार, अम्लपित्त अर्श तथा अग्निमान्ध को नष्ट करती है। (इसका निर्माण विधि मूलग्रन्थ में देखें) (५।१३–१४)।

शूलादिनाशक औषध—वच, सोंठ, जीरा, मरिच, शु० विष (वत्सनाम) हिंगु, चित्रक तथा दालचीनी समभाग इन सबों को भृंगराज के रस में घोटकर ५०० मि० ग्रा० (चारत्ती) की वटी बनावे। यह वटी सभी प्रकार के शूल-वात रोग तथा मन्दाग्नि को नष्ट करता है (५।१५)।

विलासिनीवल्लभरस—शु० गन्धक तथा शु० पारद समभाग इन दोनों की कज्जली तथा दोनों के बराबर धतूरे का बीज लेकर धतूरे के तैल के साथ अच्छी तरह मर्दन कर 'विलासिनीवल्लभ' रस तैयार कर लें। यह रस ६ रत्ती (७५० मि० ग्रा०) मिश्री के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से सभी प्रकार के प्रमेह को नष्ट करता है, वीर्य का स्तम्भन करता है तथा कामिनियों के दर्प को मर्दन करता है। ५।१६–१७

कुछ रोगों में अनुपान विधि—शूलरोग में घृत के साथ हींग, पुराने ज्वर में मधु के साथ पीपर का चूर्ण, वातरोग में घृत के साथ लहसुन, श्वासरोग में शहद के साथ सोंठ, पीपर, तथा मरिच का चूर्ण, प्रमेह में शहद के साथ त्रिफला (हर्रे, बहेड़ा, आंवला) का चूर्ण और सन्निपात में शहद के साथ अदरख का रस उचित अनुपान है। अर्थात् इन रोगों में पूर्वोक्त अनुपान के साथ औषध का प्रयोग करना चाहिए। ५।१८

उदररोग, वात्तरोग तथा भवभीति रोग में नारायण चूर्ण—जठर रोग में नारायण चूर्ण वात रोग में नारायण तैल तथा भवमय रोग में नारायण का नाम सेवनीय है।

(नारायण चूर्ण तथा नारायण तैल भैषज्य रत्नावली में या मूल ग्रन्थ की टिप्पणी में देखें)।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

परिशिष्ट—२

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मान-परिभाषा

प्राचीन समय में मागध तथा कलिङ्ग दो ही मान (तौल) प्रचलित थे। प्राचीन आचार्यों ने द्रव्यग्रहण में प्रायः उन्हीं दो मानों का उल्लेख अपने-अपने ग्रन्थों में किया है। कुछ आचार्यों ने कलिङ्ग-मान से मागध-मान को श्रेष्ठतम माना है।

व्यावहारिक जगत में वस्तुओं के आदान-प्रदान, क्रय-विक्रय तथा औषधि-निर्माण में द्रव्यों का शास्त्रोक्त मात्रा में प्रयोग करने के लिये मान-ज्ञान की आवश्यता पड़ती है।

व्यवहार-कुशल वैद्य उपर्युक्त मागध तथा कलिङ्ग मान के अनुसार ही आधुनिक प्रचलित मानों में नाम मात्र का हेर-फेर करके ओषधि-द्रव्यों का ग्रहण करते हैं।

प्राचीन शास्त्रोक्तमान, पुरातन भारतीय मान तथा नवीनतम प्रचलित स्वतन्त्र भारतीय मानों का समन्वयात्मक विवेचन अधोलिखित तालिका द्वारा किया जाता है—

प्राचीन पारिभाषिक मानों की तालिका

चार माष=एक टंक
चार टंक=एक अक्ष (कर्ष)
चार अक्ष=एक बिल्व
चार बिल्व=एक कुडव
चार कुडव=एक प्रस्थ

चार प्रस्थ=एक आढक
चार आढक=एक द्रोण (राशि)
चार द्रोण=एक द्रोणी
चार द्रोणी=एक खारी।

प्राचीन तथा अर्वाचीन मानों की समन्वयात्मकतालिका

मागध मान	आधुनिक मान	प्रचलित मान
८ सरसों=१ यव	×	३० मिलीग्राम
४ यव =१ गुंजा	एक रत्ती	१२१ मिलीग्राम
६ रत्ती =१ माशा	×	७२९ मिलीग्राम
४ माशा=१ शाण, धरण, टंक-	३ माशा	२ ग्राम ९१६ मिलीग्राम
२ टंक = १ कोल, बदर, द्रक्षण, क्षुद्रक, वटक	६ माशा	५ ग्राम ८३२ मिलीग्राम

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मागध मान	आधुनिक मान	प्रचलित मास
२ कोल = { १ कर्ष, पिचु, पाणिमाणिक, अक्ष, सुवर्ण, विडालपदक, षोडशिका, कवडग्रह उदुम्बर	१ तोला	११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम
२ कर्ष =½ शुक्ति, पल	२ तोला	२३ ग्राम ३२८ मि० ग्रा०
२ शुक्ति = { १ पल, मुष्टी, आम्र षोडशी—	४ तोला	४६ ग्राम ६५५ मि० ग्रा०
२ पल =१ प्रसृति	८ तोला	९३ ग्राम ३१० मि० ग्रा०
२ प्रसृति = { १ कुडव अञ्जलि अर्द्ध-शराव, अष्टमान ४ पल-	१६ तोला	१८६ग्राम ६२१ मि० ग्रा०
२ कुडव =१ मानिक, शराव	३२ तोला	३७२ग्राम ७४२ मि० ग्रा०
२ मानिक=१ प्रस्थ	६४ तोला	७४६ ग्राम ४५३ मि० ग्रा०
४ प्रस्थ =१ आढक	२५६ तोला	२ किलो ९८५ ग्राम ९३३ मि०
४ आढक=१ द्रोण, कलश	१०२४ तोला	११ कि० ८९० ग्राम ३८७ मि०
४ द्रोण =१ द्रोणी, वह, गोणी	४०९६ तोला	४७ कि० ५६१ ग्राम ५४८ मि०
४ द्रोणी =१ खारी	×	× × ×
१०० पल १ तुला (५ सेर)	४०० तोला	४ कि० ६६५ ग्राम ५२० मि०
२ हजार पल= १ भार (१०० सेर)	८००० तोला	९३ कि० ५२७ ग्राम ६०० मि०

कलिंग मान

१२ सरसो = १ यव
२ यव = १ रत्ती
३ रत्ती = १ वल्ल (वाल)
८ रत्ती = १ माशा
४ माशा = १ शाण, टंक

६ माशा = १ गद्याण
१० माशा = १ कर्ष
४ कर्ष = १ पल
४ पल = १ कुडव

भारतीय तौल

८ रत्ती = १ माशा
१२ माशा = १ तोला

५ तोला = १ छटाँक
८० तोला = १ सेर (प्रचलित सेर)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नोट—जहाँ ४ तोले का छटाँक होता वहाँ ६४ तोले का सेर माना जाता है। प्राचीन प्रस्थ ६४ तोले का होता है, संभवतः इसी के आधार पर सेर को भी ६४ तोले का मानते हैं।

वर्तमान समय के मान

१० मिलीग्राम = १ सेंटीग्राम	१० हेक्टोग्राम = १ किलोग्राम
१० सेंटीग्राम = १ डेसीग्राम	१० किलोग्राम = १ मिरीयाग्राम
१० डेसीग्राम = १ ग्राम	१० मिरीयाग्राम = १ क्वींटल
१० ग्राम = १ डेकाग्राम	१० क्वींटल = १ मेट्रीक टनी
१० डेकाग्राम = १ हेक्टोग्राम	२० मिलीग्राम = १ केरेट

तरल पदार्थ तौलने के प्रचलित मान

१० मिलीलीटर = १ सेन्टी लीटर	१० लीटर = १ डेका लीटर
१० सेन्टी लीटर = १ डेसी लीटर	१० डेका लीटर = १ हेक्टो लीटर
१० डेसी लीटर = १ लीटर	१० हेक्टो लीटर = १ किलो लीटर

द्रव्यग्रहण-प्रकार

औषधि निर्माण में तीन प्रकार के द्रव्यों का ग्रहण किया जाता है—शुष्क (सुखा), आर्द्र (गीला तथा द्रव (पिघलने वाला—स्निग्ध)। योग-निर्माण में प्रायः शुष्क द्रव्य ही लेने का विधान है। जहाँ शुष्क द्रव्य नहीं मिले वहाँ आर्द्र द्रव्य दुगुनी मात्रा में और जहाँ आर्द्र द्रव्य लेने का विधान है वहाँ यदि आर्द्र (ताजा) नहीं मिले तो शुष्क द्रव्य आधी मात्रा में ही लेना चाहिए। परन्तु जिस प्रयोग में तुला-मान तथा पल के मान का उल्लेख किया गया हो वहाँ आर्द्र-द्रव्यों को दुगुना नहीं लेना चाहिए।

किसी भी योग में निम्मलिखित द्रव्यों का आर्द्र (कच्चा) ही लेने का विधान है। यथा—

गुडूची, कोरैया, अडूसा, कुष्माण्ड, शतावरी, असगन्ध, सहचर (कठसरैया), सौंफ, प्रसारणी तथा नीम, परवल, केतकी, बला, कुमुदिनी, पुनर्नवा, पूतिगन्धा, नागवला, गुग्गुल, हिंगु, अदरक, और गुड़।

कहीं २ पर गुंजा (रत्ती) से लेकर कुडव (एक पाव) तक द्रव, आर्द्र तथा शुष्क द्रव्यों का मान औषध बनाने में बराबर लेने का विधान किया है

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha 417
तथा प्रस्थ (सेर) से ऊपर औषध बनाने में द्रव तथा आर्द्र द्रव्यों का सूखे द्रव्यों से दुगुना लेने का विधान किया गया है। परन्तु यह युक्तिविरुद्ध एवं चरक सुश्रुत आदि ग्रन्थों से विरुद्ध होने के कारण प्रामाणिक नहीं है।

द्रव्यग्रहण-नियम

जहाँ एक नाम से अनेक द्रव्यों का बोध होता है, वहाँ विशेष (रूढ़) द्रव्य ग्रहण करने का संकेत मिलता है। यथा—लवण से 'सेन्धा नमक' तथा चन्दन से 'लाल चन्दन'। चन्दन के सम्बन्ध में विशेष नियम यह है कि—चूर्ण, अवलेह, आसव तथा स्नेह के लिये सफेद चन्दन तथा लेप एवं कषाय के लिये प्रायः लाल चन्दन का ही प्रयोग होता है।

जहाँ पर दूध तथा घी का सामान्य वचन होता है वहाँ गाय का दूध तथा घृत लेते हैं। शकृद् रस से गाय का गोबर तथा मूत्र से गाय का ही मूत्र ग्रहण करते हैं। सरसों से सफेद सरसों तथा उत्पल से नील कमल ग्राह्य है। समय का निर्देश न किया गया हो तो प्रातः काल ग्रहण करना चाहिए। औषधों के अंग का निर्देश न हो तो जटा, (मूल) ग्रहण करे। वनस्पतियों के भाग का निरूपण न होने पर सामान्यतः सौम्यभाग का ग्रहण होता है। पात्र का निर्देश न हो तो मिट्टी का पात्र ग्रहण करे। जिस योग में द्रव का नामोल्लेख न किया गया हो वहाँ जल तथा तैल का नाम निर्देश न हो तो तिल तैल ग्राह्य है। एक ही योग में एक ही द्रव्य को दो बार कहा गया हो तो दुगुना ग्रहण करे। जिस किसी योग में गणोक्त द्रव्यों का विधान है किन्तु उस गण का कोई औषध व्याधि के लिये उपयुक्त नहीं है तो उसे निकाल देना चाहिए और दूसरे उपयोगी औषध को ग्रहण कर लेना चाहिए। कदाचित् किसी योग में कोई एक द्रव्य न उपलब्ध हो सके तो उस द्रव्य के गुण के तुल्य द्रव्य को समान मात्रा में ग्रहण करे। वट आदि वृक्षों की छाल ग्राह्य है और विजयसार आदि का सार (लकड़ी के मध्य-का भाग) ग्राह्य है। तालिसादि गण का पत्र, त्रिफला आदि फलवान् वृक्षों का फल, धाय आदि पुष्पवान् वृक्षों का पुष्प तथा सेंहुण आदि क्षीरी वृक्षों का क्षीर ग्रहण किया जाता है। जो वृक्ष बड़ी एवं विस्तृत जड़ वाले होते हैं उनकी छाल एवं छोटी-छोटी जड़वाले वृक्षों की जड़ ग्रहण की जाती है।

जंगली जवान पशुओं का चर्म, रोम तथा नख ग्रहण करना चाहिए। दूध, मूत्र तथा पुरीष को ग्रहण करना हो तो आहार पच जाने के बाद ग्रहण करे।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वल्मीक, कुत्सित स्थान, आतुपदेश, उषर तथा मार्ग में उत्पन्न एवं कीड़े लगे, अग्निदग्ध, हिमविशीर्ण औषधियाँ कार्य साधक (रोगनाशक) नहीं होती हैं। अतः इस प्रकार दूषित औषध को योग में ग्रहण नहीं करना चाहिए।

सभी कार्यों के लिए शरद् ऋतु में सरस औषधियों को ग्रहण करना चाहिए। वमन तथा विरेचन के लिये वसन्त ऋतु के अन्त में औषधों को ग्रहण करे।

स्नेहपाक-परिभाषा

सुश्रुताचार्य के मतानुसार स्नेह के चौगुना द्रव द्रव्य, तथा स्नेह के चतुर्थांश औषधी कल्क को एकत्र कर पकाये, यह स्नेह पाक करने का नियम है। यह नियम—जहाँ पर स्नेह औषध तथा जल के प्रमाण का निर्देश किया गया है, वहाँ के लिये है किन्तु जहाँ पर आचार्यों ने प्रमाण का निर्देश कर दिया है वहाँ तो निर्देशानुसार ही द्रव्यों को ग्रहण करे। स्नेह से चौगुना द्रव्य लेने का विधान है। यह वचन एक, दो तथा तीन द्रव्यों को जहाँ लिया गया है वहाँ के लिये है अर्थात एक द्रव पदार्थ हो तो चौगुना, दो द्रव पदार्थ हो तो दोनों को मिलाकर चौगुना, तीन पदार्थ हों तो तीनों द्रव्यों को मिलाकर चौगुना होना चाहिए। चौगुना से कम द्रव के साथ स्नेहपाक करने का विधान नहीं है। जहाँ चार द्रवों का निर्देश है वहाँ प्रत्येक द्रव स्नेह के समभाग होना चाहिए। जहाँ पर चार से अधिक द्रवों का निर्देश है वहाँ सभी द्रवों को स्नेह के समभाग लेना चाहिए। यहाँ चातुर्गुण्य के नियम का अपवाद हो जाता है यह सामान्य नियम है। जहाँ क्षीर के साथ स्नेहपाक का विधान है वहाँ कुछ वैशिष्ट्य है—

जहाँ केवल दूध के साथ स्नेहपाक का विधान है वहाँ स्नेह का चौगुना दूध लेना चाहिए। यदि दूध के साथ द्रवान्तर का भी निर्देश हो तो स्नेह के समभाग दूध और तीन भाग द्रव पदार्थ लेना चाहिए। जहाँ दूध के साथ दो द्रवपदार्थों का उल्लेख है वहाँ भी दूध स्नेह के समभाग ही होगा अर्थात् दो द्रवपदार्थों का तीन भाग, दूध एक भाग मिलाकर चौगुना द्रवपदार्थ लिया जायगा। इसी प्रकार जहाँ दो से अधिक द्रवपदार्थ का निर्देश हो वहाँ दूध एवं द्रव-पदार्थ स्नेह के समभाग लेकर चातुर्गुण्य की कल्पना करे। इस प्रकार चार से अधिक द्रव पदार्थ का निर्देश होने पर स्नेह के समभाग दूध एवं द्रव पदार्थ लेकर स्नेह पाक करे।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्नेह के चतुर्थांश औषध कल्क का निर्देश है किन्तु जहाँ अडूसा आदि के पुष्प के कल्क के साथ स्नेह साधन का विधान है वहाँ कल्क के अधिक होने के कारण औषध कल्क अष्टमांश ग्रहण करना चाहिए। 'सौम्य एवं सुगन्धित पदार्थों का जैसे केशर नाग-केशर, लौंग, चम्पा, कमल आदि पुष्पों का भी कल्क अष्टमांश ही ग्रहण करे जहाँ केवल जल से स्नेह सिद्ध करना हो वहाँ चतुर्थांश कल्क क्वाथ से सिद्ध करने पर षष्ठांश तथा स्वरस से सिद्ध करने पर अष्टमांश कल्क ग्रहण करे। जिस स्नेह में कल्क का निर्देश नहीं किया गया है वहाँ केवल द्रव के साथ ही स्नेहपाक करना अभीष्ट है।

जिस योग में द्रव्य का निर्देश होने पर भी कल्क या क्वाथ का निर्देश नहीं है वहाँ पर उसी द्रव्य का चतुर्थांश कल्क तथा चौगुना क्वाथ द्रव ग्रहण किया जाता है। वहाँ एक या दो द्रव्य का निर्देश है वहाँ केवल कल्क के साथ स्नेह-साधन करे। यदि तीन द्रव्यों से अधिक द्रव्य का निर्देश हो तो उन्हीं द्रव्यों के कल्क एवं क्वाथ से स्नेह सिद्ध करे। क्वाथ कल्पना के लिये सुश्रुत का कथन है कि त्वक् पत्र, फल, मूलादिक द्रव्यों को लेकर काटने योग्य द्रव्यों को काटकर, भेदन करने योग्य द्रव्यों को भेदन कर, एवं कूट कर अठगुना या सोलह गुना जल मे पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को ग्रहण करे। आठगुना या सोलहगुना का अभिप्राय यह है कि अति कठिन द्रव्यों को सोलह गुना जल और कठिन द्रव्यों को अठगुना जल में क्वाथ करे क्योंकि अधिक जल में क्वाथ करने से द्रव्यांश परिपक्व होकर द्रव में आ जाता है। मृदु द्रव्यों को अन्य आचार्यों ने चौगुने जल में ही पाक करने का निर्देश किया है।

जिस योग में क्वाथद्रव्य अल्प में मात्रा है वहाँ चतुर्थांश शेष क्वाथ, स्नेह के चौगुना द्रव पदार्थ सम्भव नहीं है अतः सोलह गुने जल में क्वाथ करे और चतुर्थांश क्वाथ स्नेह का चौगुना ग्रहण करे।

जहाँ 'एक तुला द्रव्य जल में पकाये' ऐसा निर्देश मिले वहाँ जल एक द्रोण ग्रहण करे, जहाँ एक द्रोण जल का निर्देश हो किन्तु द्रव्य के मान का निरूपण न हो वहाँ एक तुला द्रव्य ग्रहण करे। इसी प्रकार जहाँ सौ पल द्रव्य का निर्देश हो, जल के मान का निर्देश न किया गया हो वहाँ भी एक द्रोण जल ग्रहण करना चाहिए। जहाँ स्नेह का परिमाण नहीं कहा गया हो, वहाँ स्नेह एक प्रस्थ ग्राह्य है।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्नेहपाकविवेचन

स्नेह सिद्ध होने पर जहाँ क्षीर, कल्क तथा कषाय के साथ स्नेह सिद्ध किया गया है वहाँ दो रात्रि रखना चाहिए, जहाँ स्वरस क्वाथ एवं कल्क के साथ स्नेह सिद्ध किया गया हो वहाँ तीन रात्रि, कल्क एवं कषाय के साथ स्नेह सिद्ध किया गया हो तो पांच रात्रि रखना चाहिए। दधि, आरनाल, मूत्र आदि, एवं कल्क के साथ स्नेह सिद्ध होने पर एक रात्रि रखना चाहिए क्योंकि इतने समय तक रखने से स्नेह में विशेष गुण का आधान होता है।

सिद्ध स्नेह को वस्त्र से छान कर उपयोग करे। मृदु पाक स्नेह द्रव्य में किट्ट आने की सम्भावना रहती है अतः निचोड़ कर नहीं छानना चाहिए। मध्य पाक में साधारणतः छान कर निचोड़ लेना चाहिए। खर पाक में अच्छी तरह स्नेह को निचोड़ कर छान लेना चाहिए। सर्वत्र मध्यम पाक उत्तम होता है। मृदु एवं मध्य पाक में सम्पूर्ण वीर्य का आधान हो जाता है। तीनों प्रकार के पाक अपने अपने विशेष कर्म में उपयोगी है।

स्नेहपाक विज्ञान

स्नेह पाक तीन प्रकार का होता है। मृदु, मध्यम तथा खर। जिस सिद्ध स्नेह में स्नेह तथा औषधि कल्क रसयुक्त अलग अलग प्रतीत हो वह मृदु पाक है, जिसमें मोम की तरह स्वच्छ एवं अविलेपि औषध कल्क प्रतीत हो वह मध्यम पाक, तथा जिसमें कृष्ण वर्ण का शुष्क थोड़ा स्वच्छ एवं चिकना औषध कल्क हो जाय वह खर पाक होता है। इसके बाद दग्ध स्नेह होता है अतः स्नेह को अच्छी तरह सिद्ध करे। मृदु पाकी स्नेह का प्रयोग पीने एवं मर्दन के लिये किया जाता हैं। मध्यपाकी, नस्य एवं अञ्जन के लिये तथा खर पाकी का बस्ति कर्म एवं कान में छोड़ने के लिये प्रयुक्त होता है। जब स्नेह में आवाज न हो, फेन समाप्त हो जाय, गन्ध, वर्ण तथा रस आदि की उपलब्धि हो जाय तब स्नेह को सिद्ध जानना चाहिए। कुशल वैद्य इस प्रकार परिपक्व घृत को सिद्ध घृत समझे। तैल के सिद्ध होने पर अत्यन्त फेन प्रतीत होता है। दूसरी परीक्षा यह है कि तैल या घृत सिद्ध होने पर कल्क निकाल कर आग में जलाये यदि किसी प्रकार का शब्द न हो और जल जाय तो स्नेह सिद्ध समझना चाहिए।

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized By SIddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आयुर्वेदीय इतिहास के क्षेत्र में अपूर्व अवदान

सचित्र-आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास

लेखक—आचार्य प्रियव्रत शर्मा

प्राक्कथन लेखक—डॉ० कर्ण सिंह

प्रस्तुत ग्रन्थ में अनादि आयुर्वेद से लेकर सार्वभौम आयुर्वेद तक, प्राचीनतम से लेकर अद्यतन पर्यन्त तथ्यों को नौ अध्यायों में ऐसे शृङ्खलाबद्ध रूप में व्यवस्थित किया गया है कि आयुर्वेद का समस्त इतिहास सजीव रूप में चित्रित हो उठा है। विषयक्रम से विभाजित होने के कारण प्रत्येक विषय के विकास-क्रम का समस्त परिचय सरलता से प्राप्त हो जाता है। इसमें रचनाओं का अन्तरंग अध्ययन कर बाह्य एवं आभ्यन्तर साक्ष्यों के आधार पर वैज्ञानिक रीति से काल का निर्णय किया गया है। इस प्रसंग में अनेक ऐसी मौलिक उद्भावनाएँ की गई हैं जो अब तक अज्ञातप्राय थीं। कृतियों एवं व्यक्तियों के अतिरिक्त, कायचिकित्सा-प्रकरण में रोगों का तथा द्रव्यगुण प्रकरण में औषध एवं आहार द्रव्यों का भी इतिहास प्रस्तुत किया गया है जो अबतक किसी ऐसे ग्रन्थ में नहीं मिलता। इस प्रकार नितान्त नूतन शैली पर निर्मित यह एक युगप्रवर्तक रचना है जो अध्यापकों, छात्रों तथा शोधकर्त्ताओं के लिए अनिवार्य रूप से अपेक्षित है। मूल्य ३५—०० संक्षिप्त संस्करण १५—००

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्भा विश्वभारती

चौक (चित्रा सिनेमा के सामने)

वाराणसी—२२१००१ (भारत)

CC-0, Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.